॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत आर्याभिविनय की
भाव भूमि पर आधारित

गीतस्तुति

प्रणेता
देवनारायण भारद्वाज

आवरण पृष्ठ सज्जा
सुरेशकुमार

प्रकाशक
अनिल प्रकाशन
बरौला जाफराबाद, दयानन्दनगर, अलीगढ़।

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन)

सृष्टि सं० १९७२९४९०८८
सम्वत २०४४ वि०
१००० सन् १९८७ ई०
मूल्य १०) रुपया

दिवङ्गत दिव्य आत्माओं के आशीर्वचन

(१)

वेद मंत्रों के सार्थक गायन से हृदय प्रफुल्लित होता है जो उपासना का सुन्दर साधन है। श्री देवनारायण भारद्वाज ने वैदिक सन्ध्या का पद्यानुवाद सरस एवं भावपूर्ण भाषा में किया। इस काव्य रचनासे श्री भारद्वाज जी के उदीयमान जीवन का मुझे आभास होरहा है।

बाबूलाल दीक्षित
२७-१०-६८ आजीवन संरक्षक
महर्षि दयानन्द स्मारक
कर्णवास बुलन्दशहर।

(२)

प्रिय पं० देवनारायण जी भारद्वाज सप्रेम नमस्ते।

आप सदृश सहृदय आर्यजनों का स्नेह ही मेरे जीवनदीप को आज लौं इस लम्बी बीमारी के विकट ववण्डर में भी ज्योतिर्मय बनाए हुए है। आपकी स्नेह सहानुभूति ही मेरी परम विभूति है। आपकी कठोपनिषद् की सुन्दर कविता कई अङ्कों में छपी पढ़ चुका हूं। मुझे बड़ी पसन्द आई। अन्य भी रचनायें पढ़ी हैं। प्रभु परम पिता लोक कल्याणार्थ आपको पूर्ण स्वस्थ आयु प्रदान करे।

प्रकाशचन्द्र कविरत्न
पहाड़गंज, अजमेर।

दि० ५-१०-१९७१

॥ सुमित्रः सोम नो भव ॥

समर्पण

शोभन--शुभ्र-.शुभंकृत

मेरे अमित स्नेह सौहार्द की अनुपम
मूर्ति, मां आर्यसमाज के बलिदानी
आर्यपुत्र, आपकी प्रेरणा-स्फूर्ति
दायिनी स्मृति को सादर
समर्पित है-प्रभु की यह
'गीतस्तुति'

—देवनारायण भारद्वाज

❀ भा वा ञ्ज लि ❀

मोद मयी मुस्कानों से युत
प्रेम सुधा रस सदा पिलाया।
रोगों से पीड़ित रहकर भी
कभी मृत्यु से भय ना खाया॥

❋

श्रुतियों से पीयूष पान कर
स्वयं छके नित हमें छकाया।
सत को धारण किया सर्वदा
असत कभी भी भास न आया॥

❋

सत हित निज बलिदान दे दिया
क्षणभर में सबको विसराया :
हतभागी हैं आर्य बन्धु सब
हमने अपना रत्न गँवाया॥

❋

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से था
प्रतिबिम्बित वर रूप तुम्हारा
अनुगामी रह कार्य करेंगे
यह शिव संकल्प हमारा॥

❋

सजल दृगों से देवनारायण
करते हैं निज भाव प्रस्तुति
और समर्पित तुम्हें कर रहे
ऋषिवर की यह गीतस्तुति॥

डा० लोकेश्वर शर्मा

शु भा शीः

श्री भारद्वाज जी ! नमस्ते ।

आपकी पुस्तक 'गीतस्तुति' का विहंगम अवलोकन किया । आपका परिश्रम सराहनीय है आपकी कविता प्रसादगुण सम्पन्न है । मंत्र के भाव पूर्णरूप से व्यक्त करने में आप सफल हुए हैं । आर्याभिविनय के कविताबद्ध अन्य संस्करण भी निकले हैं परंतु वे मंत्र के संपूर्ण भाव को प्रकट करने में सक्षम नहीं हैं । आपके इस सत्प्रयास के लिये धन्यवाद देता हूँ । विदुषामनुचरः

जगदीश्वरानन्द सरस्वती

एच १/२ माडल टाउन

दि २-१०-८७ नई दिल्ली ११०००९

* * *

महर्षि दयानन्द जी ने आर्याभिविनय में वेद के मंत्रों का चयन इस उद्देश्य से किया है कि आर्यों में भक्ति एवं विनयशीलता आदि गुणों का उत्तरोत्तर विकास होता रहे । श्री देवनारायण भारद्वाज ने इन मंत्रों को हृदय की भाषा में जनता जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत किया है । उनका यह पुनीत संकल्प लोक कल्याण की दृष्टि से वरेण्य गरिमा संयुक्त है ।

वेदों के अनेक शब्दों को उन्होंने ज्यों का त्यों अपने गीतों में स्थान देकर वैदिक अर्थ व्यापकता का संरक्षण किया है । कविता में प्रवाह है, सङ्गीत है और पाठकों को मंत्रमुग्ध करने की विशद सञ्जीवन शक्ति है । मेरी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे अविराम स्वस्ति पथ के पथिक बने कराल काल के गाल में अपने यश का डङ्का बजाते रहें । **प्राचार्य भारत भूषण त्यागी**

प्रधान आर्यसमाज नया बाजार

५।१०।८७ लश्कर, ग्वालियर ६

सदस्य रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति

भारत सरकार

मातृ-वन्दना

अनुव्रतः पितुः पुत्रो
माता भवतु संमनाः ।

अथर्ववेद

वन्दन मां !
देवी मां !
प्यारी मां !
तुमने वेद की, और वेद
ने तुम्हारी प्रेरणा दी

पुत्र देवनारायण भारद्वाज

माँ श्रीमती मुन्नीदेवी प्रभुदयालु

अलीगढ़ के मान्य आर्यजनों के साथ मध्य में पूज्य दि०म० आनन्द स्वामी, श्री राणावत सूरजपालसिंह मध्यमें, एकदम बायें श्री सत्यप्रकाश शर्मा, एकदम दायें गीतस्तुति प्रणेता

गीतस्तुति की प्रस्तुति

सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा के वेदविहित अमरगान का भान आदि ऋषियों ने अपने अन्तःकरण में किया। आदि ऋषि अग्नि वायु, आदित्य अङ्गिरा से श्रवण कर अनेकानेक ऋषियों ने पीढ़ी दर पीढ़ी इस श्रुति गङ्गा को प्रवाहवान बनाया, और इसी ऋषि परम्परा में अवतीर्ण महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस वेद-गान-भान का अद्भुत व्याख्यान किया, जो विद्वान ही नहीं साधारण जन के उत्थान का माध्यम बना। इसी शृङ्खला में महर्षि ने ऋग्वेद एवं यजुर्वेद से ईश्वर स्तुति एवं प्रार्थना परक कतिपय मंत्रों का चयन कर उनकी मनोरम व्यांख्या अपने अनुपम ग्रन्थ **आर्याभिविनय** में की। इन सुरभित मंत्र व्याख्याओं द्वारा मनमें संकल्प हुआ कि इन्हें काव्यगीत रूप प्रदान किया जाये। प्रस्तुत **गीतस्तुति** इसी सङ्कल्प की फलश्रुति है।

गीतस्तुति के गीतों में यथावसर काव्य के लिए अपरिहार्य ही नहीं प्रत्युत स्वाभाविक प्रतीकात्मक शब्दावली का प्रयोग किया गया है, इसे वैदिक सिद्धांत का स्खलन न समझकर सहजरूप में ग्रहण किया जाये। उदाहरणार्थ ईश्वर आयेंगे, ईश्वर की छाया अथवा परमपूर्वज इत्यादि। इन्हें अन्यथा न लेकर परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में स्वीकार करें। मंत्र व व्याख्या से मगन होकर जो ध्वनि तरङ्ग उठी उसी को लेखनी से शब्दबद्ध किया है।

'गीतस्तुति' प्रकाशन से पूर्व कतिपय प्रतिष्ठित विज्ञजनों के कर कमलों में शब्द सन्तुलन तथा मार्ग दर्शन हेतु समर्पित की गई। उनके दिशा दर्शन व सम्मति प्रदर्शन के लिए सेवक हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। वेदमंत्रों के अनेक शब्द एक निश्चित अर्थ प्रयोजन के कारण ज्यों के त्यों उतारने पड़े हैं। इनके प्रचलन से हिंदी की शब्द राशि में वृद्धि होगी। गीतों के भाव स्पष्ट हैं अटकने की स्थिति में आर्याभिविनय ग्रन्थ के दर्पण से सारे बिम्ब सरलता से स्वच्छ किये जा सकते हैं।

इस प्रस्तुति का श्रेय सर्वांश में अपने धर्म जिज्ञासु प्रभुभक्त सत्सङ्गी मित्रों को है जिन्होंने पद पद पर मुझे प्रोत्साहन दिया, उनके कर कमलों में इसे समर्पित करने की इस सफलता से अधिक महत्व उनके द्वारा इसके उपयोग की सार्थकता को प्राप्त होगा।

विनयावनत

देवनारायण भारद्वाज

गीतस्तुति की संस्तुति

विश्व साहित्य के मनीषी अध्येताओं का निश्चित मत है कि वैदिक साहित्य ही विश्व का प्राचीनतम साहित्य है। पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर ने भी ऋग्वेद के विषय में लिखा है कि वह विश्व साहित्य का ओल्डेस्ट लिटरेरी मौनूमेंट अर्थात प्राचीनतम साहित्यिक संस्मारक है। वर्तमान युगमें महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के सरल भाष्य प्रस्तुत करके समस्त मानव समाज का महान कल्याण किया है। महर्षि ने ऋग्वेद और यजुर्वेद के ईश स्तुति एवं विनय परक मंत्रों का सङ्कलन करके 'आर्याभिविनय' ग्रन्थ की रचनाकी और इन मंत्रोंकी सारगर्भित व्याख्या भी की।

वैदिक साहित्य के मनीषी और हिंदी के कवि श्री देवनारायण भारद्वाज ने 'आर्याभिविनय' के मंत्रों का विद्वतापूर्ण और सरस पद्यानुवाद करके 'गीतस्तुति' नामक काव्य ग्रन्थकी रचना की है। श्री भारद्वाज जी के इस लोक कल्याणकारी कार्य के लिये समस्त हिंदी जगत उनका चिर ऋणी रहेगा। मैं 'गीतस्तुति' की रचना के लिये कविवर श्री भारद्वाज जी को साधुवाद देता हूं। और समस्त धर्म प्रेमियों के लिये इसके अध्ययन की संस्तुति करता हूं।

डा० गिरधारीलाल शास्त्री
पी–एच० डी०, डी० लिट्
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,, अलीगढ़।

अभिनयोऽभिनवः क्रियते सुमनसा
श्री देवेश भारद्वाजेति मुनिना।
संसृति समग्र सरुचि संमोहनाय
वैभवेन भव्येन विभातु भारतोदयः॥

पं० उदयवीर शास्त्री आर्य पुरोहित,

वेदस्तुति मय गीतस्तुति

अब लगभग यह निर्विवाद मत है कि भारतीय वेद ग्रन्थ मानव सभ्यता की प्राचीनतम चितना हैं। वेद ज्ञान के आगार एवं पुरातन मनीषियों की मौलिक विचारणा के उपलब्ध संकलन हैं। वेदों के सन्दर्भ मे सर्वाधिक अद्भुत सत्य यह है कि ज्ञात प्राचीनतम ग्रन्थ होने पर भी इनका कालजयी ज्ञानभंडार अर्वाचीन युग में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कभी रहा होगा। प्रभु वन्दना से लेकर मानव स्वभाव की सूक्ष्म संवेदनाओं तक के विशद् वर्णन इन में उपलब्ध हैं। अनेक स्थानों पर तो मनीषियों के अनुभव किन्हीं ऐसे अज्ञात आयामों में प्रवेश कर गये प्रतीत होते हैं जहाँ भाषा उन्हें यथावत् प्रक्षेपित कर पाने में असमर्थ हो जाती है। सम्भवतः उन आयामों में बुद्धि और भाषा सहित प्रवेश सम्भव नहीं। भाषा के विषय में एक अन्य स्मरणीय तथ्य कि युगों के काल प्रवाह में भाषा का स्वरूप और शब्दों के सन्दर्भ परिवर्तित होने के साथ उनका प्रक्षेपण भी भिन्न हो जाता हैं। वस्तुतः अनुभव कालजयी है भाषा कालाधीन। यही कारण है वैदिक काल के अनेक देवी देवताओं के स्वरूप में पौराणिक काल तक आतेआते आमूल परिवर्तन होगया। और यही जिज्ञासुको आवश्यकता अनुभव होती है एक सुविज्ञ व्याख्याता की,जो शब्दों की असमर्थता के पार जाकर उनका मूल प्रक्षेपण प्रस्तुत कर पाने में सक्षम हो।

वेदों के अध्येताओं ने यह कार्य किया है। महर्षि दयानन्द इस महत् कार्य के अग्रणी रहे हैं। तदनन्तर भी वेदज्ञों एवं अध्येत्ताओं ने इस कार्य को आगे बढ़ाया है। श्री देवनारायण भारद्वाज इसी परम्परा की शृङ्खला हैं। श्री भारद्वाज ने इस मार्ग पर एक साहसिक कदम उठाया कि वेद मन्त्रों की मूल अवधारणा को भाषा-काव्य में पिरोकर प्रस्तुत किया है। सहज ज्ञान को सामान्यतः शुष्क माना जाता है परन्तु श्री भारद्वाज ने इस अन्यतम ज्ञान को काव्य की रसधारा में निमज्जित करके जिस ललित स्वरूप में प्रस्तुत किया हैं वह ज्ञानग्राही अध्येत्ताओं तथा भावुक सुधीजनों को समान रूप से ग्राह्य होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

डा० नरेन्द्र तिवारी
समन्वयक
नेहरु युवा केन्द्र, अलीगढ़।

प्राक्कथन

वेदों का ज्ञान प्राप्त करने की एक ऋषि निर्धारित सुपरीक्षित पद्धति है। वेदों को पढ़ कोई ले पर उस पद्धति का निष्ठापूर्वक अनुसरण किये बिना कोई भी व्यक्ति उसके वास्तविक अर्थ एवं रहस्य को आत्मसात नहीं कर सकता। कौन नहीं जानता कि प्राचीन गुरुकुलों में बेदों का सांगोपांग अध्ययन करने के लिये ब्रह्मचारी को अपने जीवन के ४८ बर्ष तक कठोर साधना करनी पड़ती थी। अब न तो वैसे गुरु रहे न गुरुकुल न ज्ञानपिपासु ब्रह्मचारी।

तो क्या वेदों का अध्ययन रोंक दिया जावे और उन्हें संभालकर अलमारी में रख दिया जावें ? नहीं, आर्यपुत्रों को ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें 'कुछ नहीं से कुछ भला' के सिद्धाँत का पालन करते हुए तन्मयतापूर्वक वेदों और वैदिक साहित्य का अध्ययन अवश्य करते रहना चाहिये। किन्तु ऐसा करते समय उन्हें पश्चिम के पूर्वाग्रही, पक्षपाती एवं पथभ्रष्ट प्रचारकों के वेदभाष्यों को नहीं, अपितु महर्षि दयानन्द,योगिराज अरविंद महामनीषी सात-वलेकर जैसे मर्मज्ञों के वेदभाष्योंको अपने अध्ययनका माध्यम बनाना चाहिए।

एक बात और हमें वेदों और वैदिक साहित्य का अध्ययन केवल अपने ज्ञानवर्धन एवं कल्याण की भावना से नहीं अपितु लोक कल्याण की भावना से करना चाहिए और शिक्षण, प्रवचन तथा लेखन के द्वारा उनका दिव्य संदेश घर घर–जन जन तक पहुंचाने का सतत प्रयास करना चाहिए। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज आध्यात्मिक क्षुधा से पीड़ित और भटकते लोगों का रक्षण एवं मार्ग दर्शन केवल वेद-सन्देश से ही सम्भव हो सकता हैं।

मैं इसी पृष्ठभूमि में वेदों के श्रद्धावान स्वाध्यायी एवं मर्मज्ञ आर्यरत्न श्री देवनारायण भारद्वाज की नवीनतम पुस्तक 'गीतस्तुति' का स्वागत, बन्दन एवं अभिनन्दन करता हूं। बन्धुवर भारद्वाज जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत आर्याभिविनय के अत्यन्त उपयोगी वेदमंत्रों का लोक कल्याणार्थ पद्यमय भावार्थ इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। वेदार्थ की दृष्टि से यह भावार्थ पूर्णतः विश्वसनीय है। गेयता सुबोधता और प्रेरकता इसकी अन्य उल्लेखनीय

शेष अगले पृष्ठ पर

प्रेरणा

श्रीयुत देवनारायण भारद्वाज द्वारा सम्पादित 'गीतस्तुति' को देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ, आर्याभिविनय के वेदमंत्रों की इतनी सुन्दर काव्य अभिव्यक्ति बरबस ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की ओर चंचल मन को आकर्षित करती है। वेद मन्त्रों पर इस प्रकार का श्रम श्लाघनीय है और मैं भारद्वाज जी को इस सफल अभिव्यक्ति के लिये बधाई और साधुवाद देता हूं।

निश्चय ही इनके काव्यरसामृत से व्यक्तियों का आध्यात्मिक कल्याण होगा। यह गीतस्तुति अधिक से अधिक प्रचारित होकर मानव जीवन के चरम लक्ष्य की ओर प्रेरित करे, यह ही ईश्वर से प्रार्थना है।

पं० इन्द्रराज

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभाउत्तर प्रदेश, लखनऊ।

महर्षि दयानन्द कृत आर्याभिविनय पर आधारित काव्य रचना 'गीतस्तुति' श्री देवनारायण भारद्वाज का सार्थक प्रयास हैं। आर्यजन इसके रसास्वादन से शाश्वत आनन्द लाभ करें यही मेरी कामना हैं।

श्रीमती डा० जानकीदेवी धीर

पूर्व रीडर भौतिक विज्ञान विभाग अलीगढ़ मु० विश्व विद्यालय
मंत्रिणी स्त्री आर्यसमाज वैदिक आश्रम अलीगढ़।
(आर्यसमाज की सौम्य सुदृढ़ मन्जीवनी मातृशक्ति)

विशेषताएँ हैं। शब्द चयन सर्वथा सराहनीय है। गीतस्तुति की प्रत्येक पंक्ति प्रत्येक शब्द से कवि भारद्वाज की कर्मठता अध्यवसाय तथा वेद मर्मज्ञता की झलक आती है।

मुझें पूर्ण विश्वास है कि आर्यजगत मुक्त हृदय से 'गीतस्तुति' का स्वागत करेगा और आर्यजन इससे प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को आदर्श जीवन और अपने राष्ट्र को महाराष्ट्र बनाने के लिए संकल्प करेंगे।

डा० वेदराम शर्मा

पूर्व अध्यक्ष शिक्षा संकाय
आगरा विश्व विद्यालय, आगरा।

आर्याभिविनय ऋषि भाव भूमिका

बहुत सज्जन लोग,सबके हितकारक धर्मात्मा विद्वान विचारशील जनों ने मुझसे प्रीति से कहा, तब सब लोगों के हित और यथार्थ परमेश्वर का ज्ञान तथा प्रेरक भक्ति यथावत हो, इसलिये इस ग्रन्थ का आरम्भ किया है। इस ग्रंथ में केवल दो वेदों के मूल मंत्रों का प्राकृत भाषा में व्याख्यान किया है, जिससे सब लोगों को सुखपूर्वक बोध हो और ब्रह्मज्ञान यथार्थ हो। इस ग्रंथ में वेद मंत्रों से सब सुखों को बढ़ानेवाली परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना तथा धर्मादि विषय का वर्णन किया है। जो ब्रह्म विमलसुखकारक, पूर्णकाम,तृप्त जगत में व्याप्त, वही सब वेदों से प्राप्य है जिनके मनमें इस ब्रह्म को प्रकटता है यथार्थ विज्ञान है। ऐसे मनुष्य को धन्य है।

इस आर्याभिविय ग्रंथ में मुख्यता से वेदों का परमेश्वर सम्बन्धी एक ही अर्थ संक्षेप से किया गया है। दोनों अर्थ करने में ग्रंथ बढ़ जाता इससे व्यवहार विद्या सम्बन्धी अर्थ नहीं किया गया, परन्तु वेदों के भाष्य में यथावत विस्तारपूर्वक परमार्थ और व्यवहारार्थ ये दोनों अर्थ सप्रमाण किये जावेंगे। इस ग्रंथ से तो केवल मनुष्यों को ईश्वरका स्वरूप ज्ञान और भक्ति,धर्मनिष्ठा व्यवहारशुद्धि इत्यादि प्रयोजन सिद्ध होंगे, जिनसे नास्तिक और पाखण्ड मतादि अधर्म में मनुष्य न फसें। किञ्च सब प्रकार के मनुष्य अति उत्तम हों और सर्वशक्तिवान जगदीश्वर की कृपा हम मनुष्यों पर हो। जिससे सब मनुष्य दुष्टता को छोड़ के श्रेष्ठता को स्वीकार करें। यह मेरी परमात्मा से प्रार्थना है सो परमेश्वर अवश्य पूरी करेगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

कृपया निम्न प्रकार सुधार कर पढ़ँ

मंत्र पृष्ठ	पंक्ति सं०	शुद्ध शब्द	गीत पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
१३	२	भूमिं	७	१	गोत जग
१७	१	पिता	२६	१६	त्रुद्धार्थी
२९	३	तु–सु	३५	५	क्रियेश्वर
३७	२	ओक्ये	४५	११	हमको
४३	१	अस्माकमंश	४८	११	अध्वर्यु
४४	२	दस्यूं रधरा	५०	१३	सेंचन
४५	२	पिता	५७	१६	वे – ये
४६	२	अनवद्या	५८	६	सामवेद
४७	३	विश्वाहोदेति	६०	६	धूम
५४	२	तेजस्वि	६८	१३	को – की
६५	१	तद्वन्तिके	७१	१९	श्रेय – सुगति
६६	सर्वत्र	कल्पतां	७७	१३	गन्धर्वं
	६	रथन्तरं च	८०	१९	कल्याण
६७	१	ब – य	८८	१	दो
७२	२	आत्मकृतस्यै	९२	५	जिनमें
७८	२	देवाः	९३	७,९,११	गया,धाता,योग्य
	३	शान्तिरेधि	९५	१३	क्षय – श्रम
८०	२	तनूभिर्व्यशेमहि		१९	ये तभी
८१	२	दिवः – वि वः	९७	१	सुख – मुख
८४	४	निश – विशं	१०३	१	हमने – तुमने
८५	२	भूमिं		९	को – हो
८६	३	तन्मऽआपृण	१०५	८	तव – लख
९०	१	तच्चक्षुर्देवहितं	१०७	१३	धारणा
९७	१	य इमा			
१०२		कीलाल उपहूतो			
१०६		यां			

(असुबिधा के लियेखेद है)

ओ३म् तत् सत् ब्रह्मणे नमः ।

ओं शंनो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्य्यमा ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रम : ॥१
ऋ०अ१अ६व१८मं० ९

पाया गुरु मन्त्र वृहस्पति से, फिर अन्य गुरू का करना क्या।
की माँग विश्वपति अधिपति से,फिर और न्यून से करना क्या ॥

वरणीय वरुण प्रभु वरुपति हों
अर्य्यमा न्याय के अधिपति हों
हमको परमेश ऐश्वर्य दो
तुम इंद्र हमारे धनपति हों

की माँग इन्द्रपति धनपति से, फिर दर दर हमें भटकना क्या।
की माँग विश्वपति अधिपति से फिर और न्यून से करना क्या ॥

अत्यन्त पराक्रम बलपति हो
तुम वेद वृहस्पति श्रुतिपति हो
तन–मानस का बल हमको दो
तुम विष्णु व्याप्त जग वसुपति हो

की सन्धि शौर्य के सत्पति से, फिर हमें शत्रु से डरना क्या।
की मांग विश्वपति अधिपति से,फिर और न्यून से करना क्या ॥

प्रिय सखा सुमंगल उन्नति हो
हर समय तुम्हारी सङ्गति हो
बन मित्र माधुर्य अपना दो
सुख वैभव बल की सम्मति हो

मित्रता विष्णु प्रिय जगपति से,फिर तिलतिल हमें तरसना क्या।
की मांग विश्वपति अधिपति से,फिर और न्यून से करना क्या ॥

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् । २ ऋ० १।१।१।१

व्यापक प्रकाश के नायक, यह गीत बन्दना तेरी ।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत बन्दना मेरी ॥

पितु ईश्वर का उपदेश प्रथम
प्रिय पुत्र करें पितु मान सुगम
पितु अग्नि ज्योति ईश्वर अनुपम
देवस्तुति अग्र गाम्य की, यह गीत अर्चना मेरी ।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत बंदना मेरी ॥

तुम सर्व पुरोहित हित साधक
कमनीय यज्ञ के निष्पादक
ऋतु ऋतु नूतन सुख सम्पादक
शिल्प कला सङ्कर्ण मध्य, सुन देव कामना मेरी ।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत बन्दना मेरी ॥

हर योग क्षेम के तुम होता
हर रत्न सम्पदा के स्रोता
यह सन्तान पिता की स्तोता
मेरे पथ दर्शक नायक, यह गीत याचना तेरी ।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत बन्दना मेरी ॥

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे ।
यशसं वीरवत्तमम् । ३ ऋ० १।१।१।३

इस अग्नि प्रकाशित प्रभु का, प्रिय प्रभा पोष पा जाऊँ।
वरदान देव दो दिन दिन, सुख सुयश पोष पा जाऊँ॥

आत्मा देह की पुष्टि करो
वीरता वीर्य की वृष्टि करो
सुखमय यह सारी सृष्टि करो
शूरवीर विद्वानों का, तप तीव्र तोष पा जाऊँ।
बरदान देव दो दिन दिन, सुख सुयश पोष पा जाऊँ॥

विधि विद्या स्वर्ण सम्पदा दो
रयि राज्य भूमि बहु सुखदा दो
ईश्वर सत्कीर्ति सर्वदा दो
सुदृढ़ देह वीरत्व विमल, निर्दोष घोष पा जाऊँ।
बरदान देव दो दिन दिन, सुख सुयश पोष पा जाऊँ॥

प्रिय पोषमेव सम्पति रयिम
वीरत्व पराक्रम युत संयम
भगवान हमें दो कीर्ति प्रियम
हे तेजरूप अगनेश्वर, तव कृपा कोष पा जाऊं।
बरदान देव दो दिन दिन, सुख सुयश पोष पाजाऊँ॥

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत ।
स देवाँ एह वक्षति । ४ ऋ० १।१।१।२

विद्वान पुरातन नूतन, स्तवन गीत सब गायें ।
सब ऋषी मनीषी मानव, गुणगान आपके गायें ॥

सब सृष्टि पूर्व के ऋषियों ने
उन आदि सृष्टि के ऋषियों ने
इन वर्तमान के ऋषियों ने

पावन परम प्रशंसा के, श्रुति स्तोत्र आपके गायें ।
सब ऋषी मनीषी मानव, गुणगान आपके गायें ॥

मन्त्रों के दृष्टा होते ऋषि
सत्यार्थ ज्ञान श्रुति पाते ऋषि
शिष्यों को वही लुटाते ऋषि

हम दिव्य शिष्य बन जायें, गुणगान आपके गायें ।
सब ऋषी मनीषी मानव, गुणगान आपके गायें ॥

वैज्ञानिक वृद्ध ब्रह्मचारी
विज्ञ अज्ञ या मूढ़ अनारी
स्तुति तेरी सब को ही प्यारी

हे इष्ट देव परमेश्वर, आनन्द आपके पायें ।
सब ऋषी मनीषी मानव, गुणगान आपके गायें ॥

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः ।
देवो देवेभिरागमत् । ५ ऋ० १ १।१।१।५

जैसे आ गए हृदय में हो, वैसे आओ सन्सार पार।
हो हृदय प्रकट दो हमें प्यार, करदो अद्‌भुत प्रभु चमत्कार ॥

हे कविक्रतु रचकर कृति कृति
निर्मित करदी सुखमय संसृति
हर वस्तु दिखाती कणकण में
तेरे ही चमत्कार कीं अंकृति

यह सृष्टि उसी अविनाशी का, दिग्दर्शनीय है चित्रसार।
हो हृदय प्रकट दो हमें प्यार,करदो अद्‌भुत प्रभु चमत्कार ॥

हमने तुझको आज पुकारा
तू दिव्य गुणों का उजियारा
रे सुनकर टेर हमारी तू
गुण साथ हृदय आ प्रभु प्यारा

बन जाय हमारा हृदय हार, हे देव तुम्हारा दिव्य प्यार।
हो हृदय प्रकट दो हमें प्यार, करदो अद्‌भुत प्रभु चमत्कार ॥

कौन और है वृहत विशाला
है कौन दिव्यता की माला
तुझ से बढ़कर कौन बड़ा है
जग के मग की जगमग ज्वाला

आगया देव तू हृदय द्वार, मिट गया सकल जग अन्धकार।
हो हृदय प्रकट दो हमें प्यार, करदो अद्‌भुत प्रभु चमत्कार ॥

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि ।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः । ६ ऋ० १।१।१।६

वह जगदीश अङ्ग आ जाए ।
उर अङ्क ओ३म् मम आ जाए ॥

प्रभु ब्रह्मांड अंग यह तेरा
अग्नि अंग प्रभु मित्र चितेरा
यह परमेश अङ्गिरा मेरा
अङ्गिरा अङ्ग मम आ जाए ।
उर अङ्क ओ३म मम आ जाए ॥

सबसे बढ़कर तू निर्लोभी
देता तू देता दे जो भी
बिन कहे दिया यह भी वह भी
अब देव स्वयं ही आ जाए ।
उर अङ्क ओ३म मम आ जाए ॥

विद्वान श्रेष्ट को सोम्य सुधर
सब शिष्टजनों को योग्य मधुर
कल्याण वान जो भद्र प्रवर
प्रभु सत्यशील व्रत आ जाए ।
उर अङ्क ओ३म मम आ जाए ॥

वायवायाहि दर्शतेमे सोमा अरङ्कृताः ।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् । ७ ऋ०१।१।३।१

रे गा रहा जग गीत तेरा, हर नगर डगर हर ग्राम ग्राम ।
ये आह्वान सुनो प्रभु मेरा, हो त्राहिमाम प्रभु त्राहिमाम् ॥

बलवान पवन सा पावनीय
हर ओर छोर आकर्षनीय
प्रभु ज्ञान दष्टि से दर्शनीय

परमेश प्रकाशित हो मेरे, हर गगन मगन हो धरा धाम ।
ये आह्वान सुनो प्रभु मेरा, हो त्राहिमाम् प्रभु त्राहिमाम् ॥

सब सोम सुधा सी औषधियाँ
सब सम्पदा शक्ति की निधियाँ
प्रभु पोषित–रक्षित ये विधियाँ

यह सर्वस्व समर्पित तुझको, ले ओ३म सोम सारिणी थाम ।
ये आह्वान सुनो प्रभु मेरा, हो त्राहिमाम् प्रभु त्राहिमाम् ॥

दीं वस्तुऐं अलंकृत सारी
सन्सार सुशोभित शृंगारी
वे बने सुरक्षित विस्तारी

ये आहवान समर्पण सुनकर, हो पाहिमाम् प्रभु पाहिमाम् ।
ये आह्वान सुनो प्रभु मेरा; हो त्राहिमाम् प्रभु त्राहिमाम् ॥

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धिया वसुः । ऋ० १।१।६।१०

रस मयी रश्मि ज्योतिष्ना, मधुरिम जिह्वा मम करदो ।
प्रभु ज्ञान कोष वर्षा कर, वाणी पुनीत मम करदो ॥

जो विद्या मिलाप के साधन
ये अन्नादि शक्ति आराधन
सब क्रिया कृत्य के वैभव धन

दे वाणी ये कल्याणी, वाणी विनीत मम करदो ।
प्रभु ज्ञान कोष वर्षा कर, वाणी पुनीत मम करदो ॥

छल कपट और दम दंभ द्वेष
अभिमान मान ये अभिनिवेश
सब तीक्ष्ण बाण कंटक विशेष

दल दोष दूर हो जायें, बन्धन व्यतीत मम करदो ।
प्रभु ज्ञान कोष वर्षा कर, वाणी पुनीत मम करदो ॥

प्रभु सविता है पिता प्रमाणी
शुचि सरस्वती मा कल्याणी
सब यज्ञ शिल्प युत हों प्राणी

शास्त्र बोध विज्ञानविहित, वाणी सुनीत मम करदो ।
प्रभु ज्ञान कोष वर्षा कर, वाणी पुनीत मम करदो ॥

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्य्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते । ६ ऋ० १।१।६।२

आकर्षा सरस कर मेरा।
गा रहा गीत सुत तेरा ॥

ये वरणीय वस्तुएं सारी
सूर्य लोक से भू पुर वारी
ये उत्तम अनन्त उजियारी

संसृति का असीम घेरा।
गा रहा गीत सुत तेरा ॥

जग सोम सृजन कर आकारी
हे इन्द्र ऐश्वर्य आधारी
ईशान सृष्टि के अधिकारी

यह हृदय गीत का फेरा।
गा रहा गीत सुत तेरा ॥

प्रभु भंडार कोष यह भारी
दो कण एक हमें उपकारी
हो जाय सोम सुख संसारी

कर दो प्रकाश का प्रेरा।
गा रहा गीत सुत तेरा ॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे
हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।१० ऋ०१।६।१५।५

प्रभु आह्वान हमारा सुन लो ।
अन्तर गान हमारा सुन लो ।।

चर अचर जगत के सृष्टा हो
प्रभु जग की पुष्टि प्रतिष्ठा हो
इसके रक्षक उप दृष्टा हो
शिव सम्मान हमारा चुन लो ।
अन्तर गान हमारा सुन लो ।।

वृद्धि सिद्धि दे करें पालना
ईश अहिंसक सुखद धारणा
सकल वस्तु की ध्येय साधना
अभिमान हीन यह धुन लो ।
अन्तर गान हमारा सुन लो ।।

भगवान मान सुन शब्द गान
भगवान इधर दो धवल ध्यान
भगवान स्वस्ति करदो प्रदान
अभियान गान यह सुन लो ।
अन्तर गान हमारा सुन लो ।।

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे।
पृथिव्याः सप्त धामभिः। ११ ऋ० १।२।७।१६

व्यापक विष्णु रूप परमेश्वर।
इस हृदय मध्य हो व्यापक ईश्यर॥

नित्य सृष्टि के कारण ईश्वर
कण कण के संचारक ईश्वर
हर कहीं उपस्थित हो ईश्वर

इस ओर निहारो जगदीश्वर,।
इस हृदय मध्य हो व्यापक ईश्वर॥

पर्वत सागर निर्माण किये
ऊँचे नीचे भू स्थान दिये
गुंजित गायत्री गान किये

स्वर सप्त धाम परिपूर्णेश्वर,।
इस हृदय मध्य हो व्यापक ईश्वर॥

पृथ्वी जल अग्नि वायु विराट
परमाणु प्रकृति के ठाट बाट
रच सप्त मध्य रह परिभ्राट

दो ज्ञान देव को ज्ञानेश्वर,।
इस हृदय मध्य हो व्यापक ईश्वर॥

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः ।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो
यविष्ठय । १२ ऋ० १।३।१०।१५

हे बृहद भानु हे तेज भानु, बलवान तरुण तू प्रभु महान ।
हे अग्नि तुल्य तप तीव्र तरुण, कर प्राण त्राण दे अभयदान ॥

कितने धूर्त अधर्मी कपटी
दीन हीन जन कुपट लम्पटी
पर पीड़क पशु पंक्ति अटपटी

प्रभु हमें बचादो दुष्टों से, करते तेरा हम हृदय मान ।
हे अग्नि तुल्य तप तीव्र तरुण, कर प्राण त्राण दो अभयदान ॥

पशु जीव सिंह हिंसाचारी
या मानव पशु दुष्टाचारी
अति आतङ्की अत्याचारी

हों भीत भस्म भृष्टाचारी, हो सज्जन हित प्रभु उदय त्राण ।
हे अग्नि तुल्य तप तीव्र तरुण, कर प्राण त्राण दो अभयदान ॥

सज्जन विनाश का कारण तम
तोड़े समाज जो ये उत्तम
तुम उसे मिटाओ बलवत्तम

क्रूरता नाश हो जन मन से, प्रभु सुनो हमारा सदय गान ।
हे अग्नि तुल्य तप तीव्र तरुण, कर प्राण त्राण दो अभयदान ॥

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः । चक्रुषे भूमिं प्रतिमानमोजसोपः स्वः परिभूरेष्या दिवम् । १३ ऋ० १।५२।१२

परमेश हमारा रक्षक है शुभ शक्ति सत्य अनुमानी है।
वही हमारा प्रहरी प्यारा, प्रभु वही हमारा स्वामी है ॥

प्रतिपल परमेश्वर सावधान
इसलिये मिला यह सुख महान
बन रहा हमारा कवच वही
दे रहा हमें वैभव विहान

अरि दुष्टों के हृदय दमन की, भरदी उसने ही हामी है।
वही हमारा प्रहरी प्यारा, प्रभु वही हमारा स्वामी है ॥

सबको सब भाँति प्राप्त परिभू
स्वयं शक्ति कृतनाथ स्वयंभू
सर्वत्र व्याप्त होकर भी है
परे व्योम से और परे भू

धरती नभ से सूर्यलोक तक, हर कहीं अग्र अनुगामी है।
वही हमारा प्रहरी प्यारा, वही हमारा स्वामी है ॥

ओज पराक्रम प्रतिमान भान
दे हमें दिव्य विज्ञान-ज्ञान
कर दूर तिरस्कृत दुष्टों को
दे दिया जगत शोभायमान

थल में, नभ में- और व्योम में,सुख डोर उसी ने थामी है।
वही हमारा प्रहरी प्यारा, प्रभु वही हमारा स्वामी है ॥

विजानाह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया
शासदव्रतान। शाकी भव यजमानस्य चोदिता
विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन। १४ ऋ० १।५१।१०।८

अघ अनार्य भाव मिट जायें।
प्रभु कृपा आर्यहम बन जायें॥

हे नाथ आर्य जन पहिचाने
अनार्य दस्यु जन भी जाने
जो जगें जगत में मुसकाने
दल दुष्ट दमन सब हो जायें।
प्रभुकृपा आर्य हम बन जायें॥

व्रतहीन धर्म के जो नाशक
उनके तुम ईश बनो शासक
यजमान प्रेरणा हो प्रापक
सामर्थ्य आर्य प्रभु पा जायें।
प्रभुकृपा आर्य हम बन जायें॥

कर दे या तो ये दुष्ट–नष्ट
करदे या उनको मिष्ट शिष्ट
कर दे शाकी सुख सृष्टि पुष्ट
सौन्दर्य मनोरम जग जायें।
प्रभुकृपा आर्यहम बन जायें॥

न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः । नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक । १५

ऋ० १।४।१४।१४

तब कौन जानता आदि अन्त ।
प्रभु बनो सहायक हे अनन्त ॥

द्योलोक कहाँ ये कहाँ धरा
एक ज्योतिमय एक तमिस्रा
प्रभु कहां नहीं प्रिय परम्परा
कर कृपा नाथ हे कृपा कान्त ।
प्रभु बनो सहायक हे अनन्त ॥

जब करते मङ्गलमय स्ववृष्टि
हो मेघ युद्ध जय सूर्य सृष्टि
हो जगत मध्य आनन्द वृष्टि
हो लब्ध वस्तु व्यापक बसन्त ।
प्रभु बनो सहायक हे अनन्त ॥

हो एक आप अनुपम सुनाम
यह एक दूसरा जग ललाम
लो जग निर्माता मम प्रणाम
बनजाय जगत सद्श्रेष्ठ सन्त ।
प्रभु बनो सहायक हे अनन्त ॥

ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह । कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः ।१६ ऋ० १।३।१०।१४

परहर्ता अपहर्ता अन्यायी,भली भांति तुम दाह करो ।
धन्य धार्मिक देव जनों में, उन्नति का उत्साह भरो ॥

हे पिता हमें दो बुद्धि केतु
जो करे सुरक्षा वृद्धि हेतु
दे बुद्धि नष्ट कर शत्रु सेतु
सर्वोच्च श्रेष्ठ हे परम पिता,सुगम हमारी राह करो ।
धन्य धार्मिक देव जनों में, उन्नति का उत्साह भरो ॥

मैं तजूँ स्वयँ अन्याय पन्थ
मैं कर न सकू पर द्रव्य हन्थ
मुझको कर दो प्रिय ऊर्ध्व कंथ
सुखज्ञान विपुल करके प्रदान,चरम प्रगतिकी चाह भरो ।
धन्य धार्मिक देव जनों में, उन्नति का उत्साह भरो ॥

ऐश्वर्य प्रचुर कर ग्रहण गुच्छ
मैं तजूँ दीनता बनूं उच्छ
कर श्रम सेवा से दूर तुच्छ
जीवन को जगमग करने की, उत्तम अवगाह भरो ।
धन्य धार्मिक देव जनों में, उन्नति का उत्साह भरो ॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता: स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् । १७ ऋ० १।८९।१०

हो भले रूप में परिवर्तन, पर सृष्टि नित्य है अविनाशी।
हे नाथ आप अविनाशी हैं, हो साथ आपका अविनाशी ॥

वह सूर्यलोक प्रभु ज्योति जगन
यह मध्य लोक गुरु ज्ञान गगन
पाताल लोक माँ धरा भुवन

विद्या वस्तु सर्व अविनाशी, दो पिता विधायक अविनाशी।
हे नाथ आप अविनाशी हैं, हो साथ आपका अविनाशी ॥

नित पिता पालना करते हो
बन पुत्र त्राण तुम करते हो
सत सुत पितु नित्य विचरते हो

जो त्राण करे नरकादिक से, वह पुत्र पिता का अविनाशी।
हे नाथ आप अविनाशी हैं, हो साथ आपका अविनाशी॥

परमेश जिसे छू देता है
सब देव दिव्य कर देता है
जन पंच अमर कर देता है

उत्पन्न आज या आगामी, हो जाय योग्यता अविनाशी।
हे नाथ आप अविनाशी हैं, हो साथ आपका अविनाशी ॥

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् ।
अर्यमा देवैः सजोषाः । १८ ऋ० १।६।१७।५

विद्वान अनुसरण दो पल पल ।
हे देव बनादो हमें सरल ॥

हो देव जनों सी नीति नरम
वरणीय गुणों की रीति वरम
हो मित्र मोद मम प्रीति परम
कर में मेरे दो घट कोमल ।
हे देव बनादो हमें सरल ॥

हो देव मित्र वरणीय गुणी
विद्वान सुधर्मा दृढ़ निपुणी
निष्पक्ष न्याय अर्यमा प्रणी
दो दया न्याय का शुभ शत दल ।
हे देव बनादो हमें सरल ॥

राज्य हमें दो पर सुराज्य हो
स्वराज्य सुनीतिक प्रेम राज्य हो
शत्रु भाव बिन साम राज्य हो
जीवन विनीत यह करो सफल ।
हे देव बना दो हमें सरल ॥

त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा ।
त्वं भद्रो असि क्रतुः । १९ ऋ० १।६।१९।५

हो विश्व वस्तु में सोम दर्श ।
दो सोम सार उत्कर्ष-हर्ष ॥

जग विद्या के उत्पादक हो
अभ्यास पाठ के साधक हो
जग के सत्पति परिपालक हो
शत्रु विनाशी के मरण मर्श।।
दो सोम सार उत्कर्ष-हर्ष ॥
मेरे परमेश्वर प्रिय राजा
सब भद्र सुखों के कवि राजा
ले कर्म कीर्ति क्रतु वर आजा
कर परिष्कार उपकर्ष-वर्ष ।
दो सोम सार उत्कर्ष-हर्ष ॥
प्रभु सोम स्नेह नित बरसाता
मृदु भद्र भोग्य भग कण पाता
पर शत्रु नाश दुर्गति पाता
दे सोम नित्य निष्कर्ष-दर्श ।
दो सोम सार उत्कर्ष-हर्ष ॥

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः ।
न रिष्येत्वावतः सखा । २० ऋ०१।६।२०।८

दुर्गति से पार निकलना है, तो सोच समझकर भ्रात चलें ।
निष्पाप राह पर चलना है, तो चलो सखा के साथ चलें ॥

प्राणी समस्त पीड़क पापी
जो दीन जनों के सन्तापी
उन्हें ताड़ना सोम प्रतापी
पापों से पार निकलना है, तो चलो सोम के साथ चलें ।
निष्पाप राह पर चलना है, तो चलो सखा के साथ चलें ॥

ईश्वर को जिसने अपनाया
उसको रहस्य निज बतलाया
बन सखा साथ जिसने पाया
रोगों से पार निकलना है, लेकर प्रभु औषधि प्रात चलें ।
निष्पाप राह पर चलना है, तो चलो सखा के साथ चलें ॥

रक्षक राजा के साथ चला
कर रोश रहित निज साथ चला
जो सोम सखा के साथ चला
पीड़ा से पार निकलना है, तो पकड़ ओ३म् का हाथ चलें ।
निष्पाप राह पर चलना है, तो चलो सखा के साथ चलें ॥

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
दिवीव चक्षुराततम् । २१ ऋ० १।२।७।२०

जो रवि के दिवि से द्योतन हों, विद्वान वही हो जाते हैं।
जो सूर्य रश्मियों के सेवी, पद विष्णु परम वे पाते हैं ॥

जग सूर्य ज्योति में मूर्तिमन्त
जैसे दर्शित हो दिग् दिगन्त
उपभोग करें वैभव वसन्त
जो करें ज्ञान का चिंतन नित, विज्ञानी वे हो जाते हैं।
जो सूर्य रश्मियों के सेवी, पद विष्णु परम वे पाते हैं ॥

विज्ञान सूर्य विस्तार वन्त
वह नेत्र तुल्य प्रभुवर प्रकन्त
दे दर्श विष्णु व्यापक अनन्त
जो जग में लखते विष्णु चरण, निज लक्ष्य मोक्ष पा जाते हैं।
जो सूर्य रश्मियों के सेवी, पद विष्णु परम वे पाते हैं ॥

जन पकड़ विष्णु पद साधु सन्त
वे करें कष्ट का हनन अन्त
फिर पाये प्रभु का सुख सुमन्त
जिसने यह जगत दिखाया है, हम उसे देखते जाते हैं।
जो सूर्य रश्मियों के सेवी, पद विष्णु परम वे पाते हैं ॥

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रति-
ष्कभे । युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा
मर्त्यस्य मायिनः । २२ ऋ० १।३।।।१८।२

पाये पापी अभिशाप रोष, तब धर्म रथी आशीर्वाद ।
जय धर्म युद्ध अभियान हेतु, दो पिता हमें आशीर्वाद ।।

आग्नेय अस्त्र आयुध सुतीक्ष्ण
दे शत्रु हृदय संताप तीक्ष्ण
करके बन्दी अरि करें वीक्षण

सब सुदृढ़ शक्त हों अस्त्र शस्त्र,घनघोर हमारा विजय नाद ।
जय धर्म युद्ध अभियान हेतु, दो पिता हमें आशीर्वाद ।।

अति धर्म हीन जो हत्यारे
वे शत्रु तुम्हारे वही हमारे
ये शत्रु सर्व तू संहारे

शक्ति प्रशंसित तेरी सेना, सर्वत्र व्याप्त हो निर्विवाद ।
जय धर्म युद्ध अभियान हेतु, दो पिता हमें आशीर्वाद ।।

शत्रु दुष्ट की कपटी काया
फैलाती जो भ्रम की माया
हो दूर शत्रु से प्रभु छाया

आक्रमण आपका पाकर; कर उठें शत्रु जन आर्त्त नाद ।
जय धर्म युद्ध अभियान हेतु, दो पिता हमें आशीर्वाद ।।

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ।२३ ऋ० १।२।७।१८।

ओ आत्म इन्द्रिय अधिकारी, जा जुड़ो इन्द्र सुखवारे से ।
ओ आत्म मित्रता कर ले, अपने परमेश्वर प्यारे से ॥

ज्यों हृदय आत्म मोती समीप
ये आत्म ईश के अति समीप
दो मित्र मगन रँह एक द्वीप
बैंठा है जिसकी गोदी में, कर मेल उसी पुर वारे से ।
ओ आत्म मित्रता करले, अपने परमेश्वर प्यारे से ॥

वह विष्णु मित्र अपना व्यापी
न्याय यत्न हर कर्म प्रतापी
जग जन्म पोष का संस्थापी
शुभ सत्य न्याय के ब्रत द्वारा, हो भेंट मित्र व्रत बारे से ।
ओ आत्म मित्रता कर ले, अपने परमेश्वर प्यारे से ॥

कर लिया सखा से संपरिचय
दी भेंट व्रतों की शुचि संचय
अब देख बैंठ कर मित्र हृदय
संदर्श मनोहर पायेगा, तू नित्य मित्र उर वारे से ।
ओ आत्म मित्रता कर ले, अपने परमेश्वर प्यारे से ॥

पराणुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि । अस्माकं बोध्यविता महाधने भवा वृधः सखीनाम् । २४ ऋ० ५।३।२१।२५

करदो परास्त सर्वत्र शत्रु, अन्यथा मित्र मिट जायेंगे ।
जब हमें आप अपनायेंगे, ये शत्रु तभी मिट पायेंगे ॥

धनवान मित्र तुम मघवन हो
वेदों के विहँसित मधुवन हो
दे रहे तुम्हीं तो यह धन हो

हम वस्तुनिष्ठ सुख पायेंगे, ये शत्रु स्वयं हट जायेंगे ।
जब आप हमें अपनायेंगे, ये शत्रु तभी मिट पायेंगे ॥

है महा धने का धाम कहां
जा करना है विश्राम जहां
कर प्रथम विजाय संग्राम यहां

प्रभु सखा साथ हो जायेंगे, सब शत्रु बन्ध कट जायेंगे ।
जब आप हमें अपनायेंगे, ये शत्रु तभी मिट पायेंगे ॥

मेरे मित्रों का तुम त्राण करो
संमृद्धि वृद्धि निर्माण करो
वर बिजाय बोधि अनुप्राण करो

बन मित्र मित्र के सहयोगी, भव सिंधु पार तट पायेंगे ।
जब आप हमें अपनायेंगे, ये शत्रु तभी मिट पायेंगे ॥

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु। २५ ऋ० ५।३।२८।२

धनधान्य दिया प्रभु हमको जो, मत बने भार भयभ्रांति हेतु।
तेरे ये गीत प्रशंसा के, मैं ने गाए सुख शान्ति हेतु॥

हो ऐश्वर्य आत्म सुख वाला
बन्दना ज्ञान ये सुख वाला
भण्डार पदार्थ सुख वाला

हों तेरे प्रभु नियम निरूपण, मेरी उन्नति विश्रांति हेतु।
तेरे ये गीत प्रशँसा के, मैं ने गाए सुख शांति हेतु॥

यथार्थ धर्म कर्तव्य मर्म
मृदु मानवता व्यवहार कर्म
हो परिपालन नित न्याय धर्म

आचरण वरण कर धर्म कर्म, दो कीर्ति कमल कर क्रांति हेतु।
तेरे ये गीत प्रशंसा के, मैं ने गाए सुख शांति हेतु॥

स्वीकार करो प्रभु पुण्य स्तुति
आनन्द बढ़ाये ये प्रभु स्तुति
माधुर्य बढ़ाये जो सस्मिति

हर श्रांत पथिक का क्लान्त क्लेश, दे दिया गीत ने शाँति सेतु।
तेरे ये गीत प्रशॅसा के, मैं ने गाए सुख शाँति हेतु॥

त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य । अग्ने रथीरध्वराणाम् । २६ ऋ० ५।८।३५।२

स्तोतव्य हमारे प्रभु प्रशस्य, तुम ही प्रचण्ड पुरुषार्थी हो ।
क्यों कभी पराजय हो उसकी, जिसके तुम रथी सार्थी हो ॥
जग पूज्य नहीं जड़ सारा है
स्तुत्य एक बस प्रभु प्यारा है
प्रभुवर को आज पुकारा है
हर यज्ञ मध्य वरणीय तुम्हीं, तुम युद्ध मध्य युद्धार्थी हो ।
क्यों कभी पराजय हो उसकी जिसके तुम रथी सार्थी हो ॥
जो जड़ का पूजन करे यहाँ
फिर पाये सुख विजय कहाँ
जाग विजय वहां है ओ३म् जहाँ
हम चलो ओ३म की शरण चलें,अब तरुण ओ३म सिद्धार्थी हो ।
क्यों कभी पराजय हो उसकी, जिसके तुम रथी सार्थी हो ॥

तुम शत्रु दलों के संघातक
अध्वर्य युद्ध के तुम साधक
मैं ओ३म् आपका आराधक
प्रभु करो शत्रु सब ध्वस्त अभी, तुम विजय वीर युद्धार्थी हो ।
क्यों कभी पराजय हो उसकी, जिसके तुम रथी सार्थी हो ॥

तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप औषधी-र्वनिनो जुषन्त । शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । २७ ऋ०५।३।२७२५

हे ओ३म् करो अब अनुकम्पा, बन जाय स्वस्तिका आयन ।
मैं प्राण पवन की गोद बैठ, प्रभु करूं स्वस्तिका गायन ।।

तुम सूर्य किरण के करुण कुंज
विद्युत विकास के वरुण पुंज
तुम मित्र अग्नि सम तरुण तुंज

औषधि जल के रसपान हेतु, मैं बरूँ स्वस्ति सोपायन ।
मैं प्राण पवन की गोद बैठ, प्रभु करूं स्वस्तिका गायन।।

हो जाय पाप से पात कहीं
इस जीवन का आघात नहीं
अब प्राण त्राण बिन तात नहीं

विद्वान मार्ग वह दिखलादो, हो जाय तात करुणायन ।
मैं प्राण पवन की गोद बैठ, प्रभु करूं स्वस्तिका गायन ।।

सामर्थ्य हमें दो मरुत प्राण
कर सकूं स्वयं निज। सतत त्राण
हो पवन पुण्य पल पल प्रयाण

पोषक रक्षक रवि रश्मि राशि, लाये अनादि अरुणायन ।
मैं प्राण पवन की गोद बैंठ, प्रभु करूं स्वस्तिका गायन ।।

ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा । इन्द्र चोष्कूयसे वसु । २८ ऋ० ५।८।१७।४१

यद्यपि हो आप अजन्मा, यह अनुज आपको टेरे ।
आदर्श स्वयं का दे दे, ओ परम पूर्वज मेरे ।
जग जीवन्त दिवंगत सारे
सब पितृ वर्ग ये कुल तारे
उनके भी पूर्गज प्रभु प्यारे
हो ईश्वर तुम सब जन के, अब बनो सहायक मेरे ।
आदर्श स्वयं का दे दे, ओ परम पूर्वज मेरे ॥
सब बड़े बड़ों से बड़े आप
सबके अधिपति ईशान आप
हो अङ्ग ओज बलवान आप
जो इन्द्र ऐश्वर्य तेसज, कुछ अंश हमें भी दे रे ।
आदर्श स्वयं का दे दे, ओ परम पूर्वज मेरे ॥
वह आजाये जब महा प्रलय
तू तब भी तो अविचल निश्चय
हो सके न उसमें ईश विलय
नित नम्र नमन मम सुन ले, हम गीत गा रहे तेरे ।
आदर्श स्वयं का दे दे, ओ परम पूर्वज मेरे ॥

नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत । गवे च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यतेऽनेहसो व ऊतयः तु ऊतयो व ऊतयः । २९ ऋ०८।४७।१२

जो साथ ओ३म् के आए, जीवन उसके मुसकायें।
हो हाथ ओ३म् का जिस पर, कल्याण भद्र वे पायें।

सुख शान्ति न देना पापी को
निर्दोष जनों के तापी को
अति हिंस्र क्रूर संतापी को

हो साथ अधर्मी के जो, वे सद कर्मी मिट जायें।
हो हाथ ओ३म् का जिस पर, कल्याण भद्र वे पायें॥

पा जाय अधर्मी सुख विशिष्ट
तो धर्म ध्येय किसको अभीष्ट
दो दण्ड अधर्मी को यथीष्ट

निष्पक्ष दण्ड जब पायें, तो भ्रष्ट सभी मिट जायें।
हो हाथ ओ३म् का जिस पर, कल्याण भद्र वे पायें॥

जब द्रोही पर तब श्राप तने
अपना समाज निष्पाप बने
वह सरल शुद्ध यों आप बने

ये दुष्ट भ्रष्ट मिट जायें, आनन्द भद्र सब पायें।
हो हाथ ओ३म् का जिस पर, कल्याण भद्र वे पायें॥

वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने विभावसुः । स्याम ते सुमतावपि । ३०　　ऋ० ६।३।४०।२४

जग में तो रहते सारे, पर तुझको जीते कितने ।
बस रहा जगत सब तुझमें, तू बसा जगत में अपने ॥

वसु देव आप हैं धन्य महाँ
दे दिया वास आरण्य यहाँ
बस रहे स्वयं भी मान्य वहाँ
सहवास साथ है यद्यपि, आभास करें पर कितने ।
बस रहा जगत सब तुझमें, तू बसा जगत में अपने ॥

जल पृथ्वी आकाश सितारे
दें बास जीव को ये सारे
पर प्रभु ने इन्हें बसाया रे
सब आश सँजोये सपने, विश्वास जमायें कितने ।
बस रहा जगत सब तुझमें, तू बसा जगत में अपने ॥

बसुपति तेरा ये विभाभास
प्रभु मोहक तेरा ये प्रकाश
हर कहीं उपस्थित आस पास
की सुमति ज्योति तो जग ने, पा रहे प्रगति पर कितने ।
बस रहा जगत सब तुझमें, तू बसा जगत में अपने ॥

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवना-
नामभिश्रीः । इतो जातो विश्वमिदं विचष्टे
वैश्वानरो यतते सूर्येण । ३१ ऋ० १।७।६।१

धन वैभव जगत प्रदायक, है वैश्वानर उप नामी ।
हे भुवन सर्व के स्वामी, मैं बनूं ज्योति अनुगामी ॥

तू सूर्य सूर्य के साथ रहे
हर घड़ी कहीं दिन रात रहे
तुझ से अरुणिम ये प्रात रहे

कामना यही है मेरी, बन सकूं सफल निष्कामी ।
हे भुवन सर्व के स्वामी, मैं बनूं ज्योति अनुगामी ।

राजा युत दे न्याय नियन्त्रण
करे जीव जग सुमति निमंत्रण
दे स्वर्ण सम्पदा श्री मन्त्रण

श्री सोपान हमें प्रभु दे, अध्यात्म हृदय उत्थामी ।
हे भुवन सर्व के स्वामी, मैं बनूं ज्योति अनुगामी ॥

भुवन अग्नि ये सकल सम्पदा
मत करदे यूं ही हमें विदा
प्रिय प्रेय साथ हो श्रेय प्रदा

अब लक्ष्य छोड़ श्री सत्ता का, हे ओ३म् बनूं अभिरामी ।
हे भुवन सर्व के स्वामी, मैं बनूं ज्योति अनुगामी ॥

न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शवसो
अन्तमापुः। स प्ररिक्वा त्वक्षसाक्ष्मो दिवश्च
मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती। ३२ ऋ० १।७।१०।१५

वैभव भव से ऊपर जो, प्रभु वृहत सूक्ष्म वह कैसा।
जग देव देखते सहसा, वह देव देवता ऐसा॥

कोई कितना बलवान बने
अथवा ऊँचा बिद्वान बने
प्रभु तुल्य नहीं भगवान बने

प्रभु का प्रकाश ही पा ले, मत कहे स्वयं को वैसा।
जग देव देखते सहसा, वह देव देवता ऐसा॥

प्रभु अवधि आयु मर्यादा
विद्वान वृन्द या बड़ दादा
जन मरणशील सीधा सादा

हो गर्व ज्ञान से ग्रहण नहीं, नत भाव प्रकट प्रभु ऐसा।
जग देव देखते सहसा, वह देव देवता ऐसा॥

रच व्याप्त लोक लोकान्तर ये
भू गगन सूर्य से ऊपर ये
निज विनत बन्धु जगदीश्वर ये

कर इन्द्र दीन की रक्षा, आगया शरण में सहसा।
जग देव देखते सहसा, वह देव देवता ऐसा॥

जातवेदसे सुवनाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः । ३३ ऋ० १।७।७।१

दे नाथ हमें वह नौका, दुख नदी पार हो जाऊँ।
कर पार नरक दुख सारे, मैं गीत तुम्हारे गाऊँ॥

सब जगत जानते जातवेद
विद्वान जानते जातवेद
प्रिय वस्तु समर्पित जातवेद

स्वीकार समर्पण करलो, मैं जातवेद अपनाऊँ।
कर पार नरक दुख सारे, मैं गीत तुम्हारे गाऊँ॥

धर्मात्म जनों के अवरोधी
सब दुष्ट शत्रु कण्टक क्रोधी
दो दहन उन्हें प्रभु संशोधी

प्रभु श्रेष्ठ दुष्ट ये करदो, मैं स्वयं श्रेष्ठता पाऊँ।
कर पार नरक दुख सारे, मैं गीत तुम्हारे गाऊँ॥

दुख नदी कठिन ये आई
लाई जो पीड़ा कठिनाई
पर ओ३म् कृपा नौका पाई

सुख नाव बैंठ तर जाऊँ, मैं गोद पिता की पाऊँ।
कर पार नरक दुख सारे मैं गीत तुम्हारे गाऊँ॥

स वज्रभृद्दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शतनीथ ऋभ्वा। चम्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती। ३४ ऋ० १।७।१०।१२

अच्छेद्य सामर्थ्य ईश्वर का, करता दुष्टों का सदा मरन।
जो न्याय त्याग अन्याय करे, पाए प्रभु का वह दण्ड दमन॥

करे संकलित भ्रष्ट सम्पदा
जग में पनपाये जो विपदा
हो अन्यायी भयवान सदा

अत्याचारी पर पीड़क जो, इन पर धरदो निज बज्र चरण।
जो न्याय त्याग अन्याय करे, पायो प्रभु का वह दण्ड दमन॥

विज्ञान विविध की गुण गणना
अनगनित वस्तुऐं ये शुभ ना
सुन्दर प्रकाश अनुपम अपना

सबको परमेश सुलभ करदो, जिसने पकड़ी है आप शरण।
जो न्याय त्याग अन्याय करे, पायो प्रभु का वह दण्ड दमन॥

हे जनक प्राण के पाँच जन्य
हो तुम्हीं प्रवाहक वायु अन्य
हे इन्द्र त्राण दो हमें धन्य

कुछ काम न मेरा हो निष्फल, अब इधर फेरदो कृपा किरण।
जो न्याय त्याग अन्याय करे, पायो प्रभु का वह दण्ढ दमन॥

सेमं नःकाममापृणगोभिरश्वैः शतक्रतो। स्तवाम त्वा स्वाध्यः। ३५ ऋ० १।१।२।१।९

छोड़ सभी का साथ नाथ, अब ध्यान लगाया तेरा।
बिना आपके नाथ न कोई, अन्य सहायी मेरा॥

शतक्रतो आप शत क्रियावान
असंख्य कार्य कर यज्ञ वान
प्रभु क्रियेस्वर विज्ञान वान
यज्ञ ज्ञान बहु योग जतन हो, साथ करायें तेरा।
बिना आपके नाथ न कोई, अन्य सहायी मेरा॥

धेनु धन्य इन्द्रियाँ हमारी
अश्व शक्ति विद्यायें सारी
राज्य हमारा रत्न प्रसारी
सम्पदा सकल ये दे करदे, मेरा सुखी बसेरा।
बिना आपके नाथ न कोई अन्य सहाई मेरा॥

प्रभो परीक्षा उत्तीर्ण करो
मम काम सर्व परिपूर्ण करो
ये विजय स्तुति निज कर्णधरो
स्वाध्याय ध्यान जो तजे नाथ, उसका कहाँ सवेरा।
बिना आपके नाथ न कोई, अन्य सहायी मेरा॥

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्द्धयामो वचोविदः ।
सुमृलीको न आविश । ३६ ऋ० १।६।२१।११

प्रभु दो आवेश प्रेरणा, यह ज्ञान नेत्र खुल जायें।
आवेश कृपाका कर दो, मुझको प्रकाश मिल जाये॥

हे सोम सृष्टि के उत्पादक
वर वेद शास्त्र के सम्पादक
आवेश बुद्धि के निष्पादक

प्रभु विनय हमारी सुन लो, मुझको विकास मिल जाये।
आवेश कृपा का करदो, मुझको प्रकाश मिल जाये॥

सर्वोपरि तेरा शासन है
प्रभु व्यापक सोम निवासन है
यह स्तवन उसी का वाचन है

आनन्द सोम सहवासी, मुझको सुवास मिल जाये।
आवेश कृपा का करदो, मुझको प्रकाश मिल जाये॥

संसृति का दुखमय अन्धकार
पा कृपा करूं मैं सदा पार
मैं बनूं सफल प्रभु सुख प्रकार

प्रभु सतत प्रेरणा करदो, मुझको सुहास मिल जाये।
आवेश कृपा का करदो, मुझको प्रकाश मिल जाये॥

सोम रारन्धिनो हृदि गावो न यवसेष्वा ।
मर्य इव स्व ओक्ये । ३७ ऋ० १।६।२१।१३

शिव सोम सुमङ्गल लाओ, मम छोड़ हृदय मत जाओ ।
हे सोम ओ३म् अब आओ, मम हृदय रमण कर जाओ ।।

प्रभु सौम्य सौख्य के हे स्वामी
माधुर्य पूर्ण अन्तर्यामी
मैं बनूँ सोम का अनुगामी

निज मोद मनोहर लेकर, मम हृदय **सोम** बस जाओ ।
हे सोम ओ३म् अब आओ, मम हृदय रमण कर जाओ ।।

ज्यों सूर्य रश्मि का हो प्रवेश
विद्वान जनों का मन विशेष
ज्यों गौ पशुओं का विषय वेष

गौ भक्ष्य लक्ष्य विचरण सा, संचार हृदय में लाओ ।
हे सोम ओ३म अब आओ, मम हृदय रमण कर जाओ ।।

ज्यों मनुज मगन घर आँगन में
अपने सुन्दर नन्दन बन में
ज्यों अपने मोहक मधुवन में

अपने प्रकाश को लेकर, इस हृदय वास कर जाओ,
हे सोम ओ३म अब आओ, मम हृदय रमण कर जाओ ।।

गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः ।
सुमित्रः सोम नो भव । ऋ० १।६।२१।१२

सब जगत सोम उत्पादक, हे साम साथ अब आओ।
आओ परमेश्वर आओ, बनकर सुमित्र अब आओ ।।

परमेश इष्ट उजियाला है
ऐश्वर्य राज्य प्रतिपाला है
प्रिय इष्ट बढ़ानेवाला है

धन राज्य बढ़ाते आओ, सुख शान्ति बढ़ाते आओ।
आओ परमेश्वर आओ, बन कर सुमित्र अब आओ।

वसु लोक सर्व का ज्ञाता है
धन विद्या का तू दाता है
आत्मिक तन पुष्टि प्रदाता है

शारीरिक रोग मानसिक, सब भीत मिटाते आओ,
आओ परमेश्वर आओ, बनकर सुमित्र अब आओ ।।

प्रभु सोम जीव का परम मित्र
हों जीव परस्पर स्वयं मित्र
यों बने मित्रता अति पवित्र

अब अधिक चाहना छोड़ो, मित्रता साथ ही लाओ।
आओ परमेश्वर आओ, बनकर सुमित्र अब आओ ।।

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि ।
अप नः शोशुचदघम् । ३९ ऋ० १।७।५।६

सम्पूर्ण जगत का कण कण, है व्याप्त आप से ईश्वर ।
सब पाप नष्ट हों मेरे, यह कृपा करो जगदीश्वर ।।

हे अग्नेश्वर सर्वतो मुखी
यह जीव हृदय हर श्वाँस सुखी
उपदेश कर रहे सत्य सुखी
उपदेश भावना भरदो, बहु मुखी प्रवक्ता ईश्वर ।
सब पाप नष्ट हों मेरे, यह कृपा करो जगदीश्वर ।।

सामर्थ्य आपकी प्रभु अपार
सर्वत्र उसी का है प्रसार
दे जीव हृदय उपदेश धार
उपदेश आचरण बल दो, तुम बलशाली हो ईश्वर ।
सब पाप नष्ट हों मेरे, यह कृपा करो जगदीश्वर ।।

जब इच्छा ईश्वर की होगी
तब नष्ट पाप की मति होगी
मुकलित सुख की कलिका होगी
आदेश सफल निज करदो; आदेश नियामक ईश्वर ।
सब पाप नष्ट हों मेरे, यह कृपा करो जगदीश्वर ।।

तमीलत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृ-
ञ्जसानम् । ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं
धारयन्द्रविणोदाम् । ४० ऋ० १।७।३।३

हर कार्य पूर्व जो वर्तमान, हम गीत प्रथम के गाये ।
वह प्रथम पुरुष जो आदि पुरुष, हम गीत उसी के गाये ॥

हर कार्य यज्ञ का आदि स्रोत
इनके साधन से ओत प्रोत
विज्ञान सृष्टि का जनक जोत

परमेश प्रेम उमगायें, हम गीत प्रेम से गाये ।
वह प्रथम पुरुष जो आदि पुरुष, हम गीत उसी के गाये ॥

दे रहा पिता ऊर्जा पवित्र
भण्डार भरण वह भरत पुत्र
जग महा शक्ति चालक सवित्र

कर विद्वान अग्नि प्रभु धारण, उसको ही जपते जाये ।
वह प्रथम पुरुष जो आदि पुरुष, हम गीत उसी के गाये ॥

ईश्वर अपना जो प्रथम पुरुष
रे मनुज छोड़ तू अन्य पुरुष
ले पकड़ उसो को छोड़ कलुष

हम गुण गान बन्दना गाये, प्रभु पल पल प्रीति निभाये ।
वह प्रथम पुरुष जो आदि पुरुष, हम गीत उसी के गाये ॥

तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम् । स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ।४१ ऋ० १।७।६।७

परमेश शरण में जाने से, हों भक्त जनों के सबल प्राण।
हर ओर हमारी रक्षा हो, प्रभु करो कृपा तुम एक त्राण ॥

हर कर्म यज्ञ में भास भ्रमण
हो युद्ध मध्य वन वीर रमण
हे शूरवीर प्रभु करो श्रवण

प्रभु नहीं पराजय मेरा हो, बस एक आप हैं कुशलवान।
हर ओर हमारी रक्षा हो, प्रभु करो कृपा तुम एक त्राण ॥

बस एक आप हैं करुणामय
है अन्य कौन मृदु महिमामय
बल मरुत प्राण की सेनामय

आ पड़ा आज संग्राम बड़ा, दो देव हमें जय विजय दान।
हर ओर हमारी रक्षा हो, प्रभु करो कृपा तुम एक त्राण ॥

साथी अब कौन हमारा है
हमने अब तुम्हें पुकारा है
तेरा ही एक सहारा है

दो कवच हमें निज रक्षा का, दो हमें इन्द्र अब अभय दान।
हर ओर हमारी रक्षा हो, प्रभु करो कृपा तुम एक त्राण ॥

स पूर्वया निविदा कव्यतायोरिमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम् । विवस्वता चक्षसा द्यामपश्च देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् । ४२ ऋ० १।७।३।२

आदि सृष्टि से प्रलय अन्त तक, निर्माण रचाये क्षण क्षण ।
प्रलय पूर्व के आदि सनातन, यह धन्य ईश का ईक्षण ।।

प्रभु अग्नि सत्य वह अलबेला, आदि सृष्टि की सूनी वेला,
लिए प्रभा था एक अकेला,
उसे छोड़ था अन्य न कोई, मुस्काई जब प्रथम किरण ।
प्रलय पूर्व के आदि सनातन, यह धन्य ईश का ईक्षण ।।

ईक्षण से उत्पन्न प्रजा की, जन मननशील युत उपजा की,
प्रिय प्रकट वेद की ऊर्जा की,
विद्या व्यवहार जानने को, दे दिया वेद का शिक्षण ।
प्रथम पूर्व के आदि सनातन, यह धन्य ईश का ईश्रण ।।

मानव पशु वृक्षादिक संतति, नक्षत्र प्रभा रवि की पङ्क्ति,
करदी प्रकृति की चंचल गति,
प्रभु ईक्षण से उत्पन्न हुई, यह सृष्टि उसी का दर्पण ।
प्रलय पूर्व के आदि सनातन, यह धन्य ईश का ईक्षण ।।

तप तेजवान सूर्यादि लोक, ये अन्तरिक्ष भू आदि लोक,
सब मोक्ष स्वर्ग या नरक लोक,
रचकर इनका विज्ञान दिया, यह देव ओ३म् को अर्पण ।
प्रलय पूर्व के आदि सनातन, यह धन्य ईश का ईक्षण ।।

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरे भरे। अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुज। ४३ ऋ० १।१०२।४

यदि प्रीति आपकी पायेंगे सब शत्रु शमनहो जायेंगे।
जब साथ ओ३म् आ जायेंगे, तब विजयी हम हो पायेंगे॥

हे नाथ युद्ध ये आन पड़।
कर रहा शत्रु अभिमान बड़ा
दी मैं ने भी अब जान लड़ा

कर सैन्य हमारी प्रभु सशक्त, हम भी योधा बन जायेंगे।
जब साथ ओ३म् आ जायेंगे, तब विजयी हम हो जायेंगे॥

महा धनेश्वर इन्द्र बलेश्वर
कर भङ्ग शत्रु का बल सत्वर
कर हीन ओज उसका नश्वर

राज्य हमारा या अन्य कार्य, तब सुगम सफल हो पायेंगे।
जब साथ ओ३म् आ जायेंगे, तब विजयी हम हो पायेंगे॥

हो जायेगी करुणा तेरी
सामर्थ्य बढ़ेगी तब मेरी
सुख राज्य रत्न की हो ढेरी

जब हम प्रभु से जुड़ जायेंगे, धन विजय सभी तो पायेंगे।
जब साथ ओ३म् आ जायेंगे, तब विजयी हम हो पायेंगे॥

यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिर्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत् । इन्द्रो यो दस्यूंरधराँ अवातिरन्-मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे । ४४ ऋ० १।७।१२।५

सृष्टि आदि के प्रथम सखा को, निज पुकार के गीत सुनायें ।
ओ मित्र भाइयो सब आओ, चलो ब्रह्म को सखा बनायें ॥

आदि सृष्टि से वर्तमान है
जड़ चेतन का अधिष्ठान है
यह ब्रह्म वृहत प्रिय महान है
विद्वान विनत हित भूमि राज्य, वर ब्रह्म सदा ही सरसायें ।
ओ मित्र भाइयो सब आओ, चलो ब्रह्म को सखा बनायें ॥

वह दुष्ट दस्यु सब पतन करे
उनके मर्दन का जतन करे
हर आतङ्की का दलन करे
प्रियतम परमेश्वर सुन पुकार, प्रभु अन्य कहां हम अब जायें ।
ओ मित्र भाइयो सब आओ, चलो ब्रह्म को सखा बनायें ॥

हमको उससे है स्नेह सही
अब शरण उसी की गेह गहीं
है मैत्री में सन्देह नहीं
सब सखा सहोदर सच जानो, निश्चित पुकार वे अपनायें ।
ओ मित्र भाइयो सब आओ, चलो ब्रह्म को सखा बनायें ॥

मृला नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु। ४५ ऋ० १।८।५।२

हे रुद्र दुष्ट रो जायें, ऐसा प्रहार दो उनको।
हे परमेश पिता अपना, उत्तम दुलार दो हमको॥
शत्रु शत्रु के वीरों का क्षय
सुन्दर सुयोग प्रभु सुखमय
हो नमस्कार प्रभु तेरी जय
भव रोग प्रजा पीड़ा से, सत्वर उबार दो सबको।
हे परमेश पिता अपना, उत्तम दुलार दो हमको॥
आदेश ईश का नित निर्णय
मैं करूं पालना दृढ़ निश्चय
सुख राज्य मिले हो ईश प्रणय
यह राज्य सम्पदा मेरी, सुन्दर प्रसार दो हसको।
हे परमेश पिता अपना, उत्तम दुलार दो हमको॥
हे रुद्र हमारे पिता सदय
अब सुख विशेष का करो उदय
मैं करूं नमस्ते न्याय निलय
मैं करूं पिता परिचर्या, साधन उदार दो हमको।
हे परमेश पिता अपना, उत्तम दुलार दो हमको॥

देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा । पुरः सदः शर्मसदो न वीरा असवद्या पतिजुष्टेव नारी । ४६ ऋ० १।५।१६।३

सब जगत वाह्य या भीतर, रवि तुल्य प्रभा है तेरा।
तू राजा है परमेश्वर, पर परम मित्र है मेरा॥
यह पृथ्वी जगत बनाया है
प्रभु धारण कर विकसाया है
पल पल प्रकाश चमकाया है
पुत्र पिता घर सुख पायें, हो वैसा सुखी बसेरा।
तू राजा है परमेश्वर, पर परम मित्र **है** मेरा॥
जो पुत्र पिता घर वासी हैं
वे समुचच सुख उल्लासी हैं
सुख सहित ईश सहवासी हैं
निराकार जग व्यापी के, अब डाल दिया घर डेरा।
तू राजा है परमेश्वर, पर परम मित्र है मेरा॥
पतिव्रता नारि पति सेवा में
त्यों भक्ति करे प्रभु देवा में
हों मगर स्वर्ग की मेवा में
सब बन्धु हमारे आओ, पाओ सुख ज्योति सबेरा।
तू राजा है परमेश्वर, पर परम मित्र है मेरा॥

सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च। विश्वमन्यन्निविशते यदेजति विश्वाहापो बिश्वहोदेति सूर्यः। ४७ ऋ० ७।८।१२।२

अब हो अधर्म की इच्छा क्यों, जब किया ओ३म निज हृदय भान।
क्यों किंचित पतन हमारा हो, जब किया ओ३म का अनुष्ठान॥

हे ओ३म पालना करदो जी
पापों से हमें बचा लो जी
गिरते ही हमें उठा लो जी

दे दिया दिवस कर सूर्य प्रभा, सर्वत्र सृष्टि विस्तार वान।
क्यों किंचित पतन हमारा हो, जब किया ओ३म का अनुष्ठान॥

जिस समय जगत हो प्रलय विलय
हो अथवा ये उत्पन्न उदय
दुख दूर करो हर समय सदय

हो ओ३म शक्ति से सृष्टि प्रलय, यह ओ३म् सभी का अधिष्ठान।
क्यों किंचित पतन हमारा हो, जब किया ओ३म् का अनुष्ठान।

जो जीव जगत दुखदायी हैं
अति हन्ता या अन्यायी हैं
आतङ्क नीति अनुयायी हैं

हों भस्म दुष्ट राक्षस सारे, दे शक्ति ज्वाल उर उदय आन।
क्यों किंचित पतन हमारा हो, जब किया ओ३म का अनुष्ठान॥

देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे । शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव। । ४८ ऋ० १।६।३२।१३

विद्वानों के विद्वान महा, हम गाये गीत तुम्हारे ।
हौ देव देव में महादेव, तुम अद्भुत सखा हमारे ।।

आनन्द मंगल हों जन सुजान
जग कार्य ईश अद्भुत महान
प्रभु चारु जगत शोभायमान

प्रभु स्वयं सौम्य सुन्दरता से, सौन्दर्य जगत को वारे ।
हो देव देव में महाँ देव, तुम अद्भुत सखा हमारे ।।

वसुओं को वास दिया तुमने
सब लोक निवास दिया तुमने
श्रुति यज्ञ विकास दिया तुमने

हो अध्वर्य यज्ञ के सुन्दर, चमकाये ज्ञान सितारे ।
हो देव देव में महादेव, तुम अद्भुत सखा हमारे ।

व्यक्ति कर्म जो करें सुखारे
वे सखा तुम्हारे सखा हमारे
हर सखा प्रेम प्रभु विस्तारे

कर मित्र सर्व का सम्मेलन, चित चमत्कार चमका दे रे ।
हो देव देव ये महा देव, तुम अद्भुत सखा हमारे ।।

मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भोजनानि प्रमोषी ।आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत्सहजानुषाणि । ४९ ऋ० १।७।१९।८

यदि किया आपने बंटवारा, मैं मरू विश्व में बन अनाथ ।
कर पृथक विभाजित अपने से, हे नाथ न देना छोड़ साथ ॥

कर दे परिवार पृथक अग्रज
तो मरे भूख से दीन अनुज
सम्पत्ति चुरायें चोर दनुज

चोरों से हमें बचा ले रे, दे भोज्य भोग हे हमें नाथ ।
कर पृथक विभाजित अपने से, हे नाथ न देना छोड़ साथ ॥

हो अण्ड गर्भ का मत विनाश
सब सत्पुत्रों का शुक्र नाश
हों मत सुखाद्य मम पात्र ह्रास

कर पृथक प्राण के पात्र नहीं, ले ओ३म हमारा थाम हाथ :
कर पृथक विभाजित अपने से, हे नाथ न देना छोड़ साथ ॥

सखा सहज अनुकूल हमारे
हे नाथ उन्हें भी मत मारे
हम सबकी रक्षा कर प्यारे

अब हमें साथ रख ले अपने, लो झुका दिया प्रभु चरण माथ ।
कर पृथक विभाजित अपने से, हे नाथ न देना छोड़ साथ ॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत
मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् । मा नो वधीः
पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः । ५०
ऋ० १।८।६।७

परिवार हमारे की रक्षा, प्रिय रुद्र आप प्रभु करना ।
प्रभु यही हमारी विनती, अब गीत यही है कहना ।

पितु वयोवृद्ध प्रिय ज्ञानवृद्ध
नन्हें मुन्ने या शिशु अबुद्ध
वर वीर्यदान सुत युवा सिद्ध

प्रभु इन्हें बचाते रहना, अनुरोध यही प्रभु गहना ।
प्रभु यही हमारी विनती, अब गीत यही है कहना ॥

प्रभु पिता हमारे रक्षित हों
मृदु माता भी संरक्षित हों
मम परिजन सब प्रतिरक्षित हों

हिंसा से इन्हें बचाना, मत कष्ट पड़े प्रभु सहना ।
प्रभु यही हमारी विनती, अब गीत यही है कहना ॥

जो किया सृजन कर सेवन है
गर्भस्थ भ्रूण लघु लेशन है
उसके हित पोष निवेदन है

हे रुद्र दुष्ट को दलना, हो हमें जरा भी भय ना,
प्रभु यही हमारी बिनती, अब गीत यही है कहना ॥

मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो
अश्वेषु रीरिषः । वीरान्मा नो रुद्रभामितो वधी
हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे । ५१ ऋ० १।८।६।८

आक्रोश रोश यह तेरा, मत बने हमें दुख दायक
मेरे जो सभी सहायक, हों उनके प्रभु उन्नायक ॥
सन्तान हमारी अति कनिष्ठ
सन्तान मध्य या पुत्र ज्येष्ठ
दो सबको संरक्षण यथेष्ठ
सम्पूर्ण आयु में मेरी, हो नही वंश दुख पायक ।
मेरे जो सभी सहायक, हो उनके तुम उन्नायक ॥
पशु शक्ति धेनु मम दुग्ध वान
ये अश्व शक्ति गति तीव्र यान
हो हमें सभी ये भाग्यवान
ये सभी हमारे साधन, दो शक्ति इन्हें सुख दायक ।
मेरे जो सभी सहायक, हो उनके तुम उन्नायक ॥
मेरी सेना के सैनिक सब
संग्राम दक्ष दिन रैनिक तब
ये वीर व्रती ऋतु दैनिक सब
मत करो क्रोध तुम इन पर, हो इनके नाथ सहायक ।
मेरे जो सभी सहायक, हो उनके तुम उन्नायक ॥

उदगातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि। वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुने भद्रमा वद विश्वतो नः शकुने पुण्यमा वद।

५२ ऋ० २।८।१२।२

हे शकुन शक्ति प्रभु सर्वेश्वर निज मुझे सुनादे मृदुल गान।
आ हृदय मनोहर साम गान करदे ईश्वर गुंजाय मान।

ज्यों बैठ यज्ञ में उदगाता
मृदु साम गान नित नित गाता
श्रुति ज्ञान गान में उमगाता

विद्या प्रकाश मयवेद गान, आ हृदय सुना हे शक्ति वान।
आ हृदय मनोहर साम गान, कर दे ईश्वर गुंजाय मान॥

कहे वेद विज्ञान प्रशंसा
सुख सृष्टि बोध के अवतंसा
दे वही हमें प्रभु अनुशंसा

प्रभु वेदों का विज्ञान गान, आ हृदय सुना हे वेद वान
आ हृदय मनोहर साम गान, कर दे ईश्वर गुंजाय मान॥

हे महाबली वृष बलकर्षा
निज गुण पदार्थ उत्तम दर्शा
कर अन्न पोष की सुख वर्षा

जो व्यक्ति व्रती हैं पुण्यवान, दे उन्हें सुरीला साम गान।
आ हृदय मनोहर साम गान, कर दे ईश्वर गुंजाय मान॥

आवदँस्त्वं शकुने भद्रमा वद तूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिद्धि नः । यदुत्पतन् वदसि कर्करिर्यथा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः । ५३ ऋ० २।८।१२।३

अपना उपदेश निरन्तर, दे हमको भद्र बनाओ ।
प्यारे परमेश्वर आओ, उपदेश भद्र दे जाओ ॥

सामर्थ्य आपका अति विचित्र
संकेत बोध दें सृष्टि चित्र
उपदेश करें जो अति पवित्र

कल्याण हमारा सुन्दर, परमेश सदा कर जाओ ।
प्यारे परमेश्वर आओ, उपदेश भद्र दे जाओ ॥

रे परमेश हृदय में आओ
आ घर अपना इसे बनाओ
बैठ मौन उपदेश सुनाओ

उपदेश आचरण दे कर, अब अपनापन दिखलाओ ।
प्यारे परमेश्वर आओ, उपदेश भद्र दे जाओ ॥

तजकर अधर्म हम धर्म धरें
इसलिये सतत पुरुषार्थ करें
सब शिशु सुवीर परमार्थ वरें

गुण गान वन्दना सुनकर, आनन्द मोक्ष कर जाओ ।
प्यारे परमेश्वर आओ उपदेश भद्र दे जाओ ॥

इति प्रथम प्रकाश :

द्वितीय प्रकाश

ओ३म सहनाववतु सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्व नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ओ३म शान्तिः शान्तिः शान्तिः । तैत्तिरीयारण्यके ब्रह्मानन्द वल्ली प्रपाठक १० प्रथमानुवाकः १

हे सहनशील परमेश्वर, शुभ सहन शक्ति हम पायें ।
सहयोग परस्पर करके, आनन्द ओ३म् का पायें ।।

हे ओ३म हमारे कृपा करो
प्यारे परमेश्वर दया करो
हम भक्ति आपकी किया करें
वह शक्ति हमें प्रभु दिया करो

हों एक दूसरे के रक्षक, आनन्द भोग पा जायें ।
सहयोग परस्पर करके, आनन्द ओ३म् का पायें ।।

पितु मातु बन्धु गुरुदेव परम
हो सुखद सहायक स्वामी तुम
आप ही हमारे राजा भी
हे सुहृद साथ दो निज उत्तम

सत्य ज्ञान पाखण्ड रहित, पुरुषार्थ कर्म से पायें ।
सहयोग परस्पर करके, आनन्द ओ३म् का पायें ।।

हे तेज प्रकाशित दो प्रकाश
विद्वेष नहीं हो आस पास
आध्यात्मिक अङ्ग आधिभौतिक
हो ताप आधि दैविक विनाश

निज तन मन धन विद्या से, उपकार प्रीति उमगायें ।
सहयोग परस्पर करके, आनन्द ओ३म् का पायें ।।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः। २यजु०अ०४० मंत्र८

जब स्वयं पास वह आया,फिर और कहाँ प्रस्थान चाहिये।
जब दिया वेद का दिनकर, फिर और कौन वरदान चाहिये॥

परमेश ओ३म सर्वत्र व्याप्त
हो काया को वह नहीं प्राप्त
सम्पूर्ण जगत का निर्माता
परिभू अखण्ड हो ज्ञात आप्त

अत्यन्त सूक्ष्म परमेश्वर, फिर उसे कौन आस्थान चाहिये।
जब दिया वेद का दिनकर, फिर और कौन वरदान चाहिये॥

नस नाड़ी का प्रतिवन्ध नहीं
कुछ तीन काल का बन्ध नहीं
स्वयं जगत का कारण अनादि
साक्षी मन अनुबन्ध नहीं

जब ओ३म् हुए उपदेशक, फिर और कौन व्याख्यान चाहिये।
जब दिया वेद का दिनकर, फिर और कौन वरदान चाहिये॥

दे शाश्वत ज्ञान मनीषी ने
हित किया परम उत्कर्षी ने
हर मनुज हेतु सन्मार्ग दिव्य
निष्पक्ष वेद समदर्शी ने

सब छोड़ अन्ध आडम्बर, अब हृदय वेद अभियान चाहिये।
जब दिया वेद का दिनकर, फिर और कौन वरदान चाहिये॥

दृते दृँ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षेमित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे । ३यजु० ३६।१८

मम वैर भाव सब हर कर, मृदु मित्र भाव दो मुझको।
सब मुझे मित्र ही देखे, मैं मित्र देखता सबको।।

हो दुष्ट वृत्तियाँ नष्ट सभी
सद् गुणी ज्ञान हो पुष्ट अभी
कर कृपा प्रभो दो आत्म शान्ति
मत बने मित्र से रुष्ट कभी

मित्रता न्यून मत होवे, निर्वेर हृदय दो हमको।
सब मुझे मित्र ही देखें, मैं मित्र देखता सबको।।

सब प्राणी मम कल्याणी हों
मम सभी प्राण प्रिय प्राणी हों
क्षति कष्ट न उनसे किंचित हो
ये प्राणी सब परित्राणी हों

प्राणि प्राणि में मित्र मोद, माधुर्य बोध दो सबको।
सब मुझे मित्र ही देखें, मैं मित्र देखता सबको।।

जड़ जीव चराचर ये असीम
हो धर्म रथी सुन्दर सुभीम
हो हृदय स्नेह संकुल विशाल
हो जाय मित्रता से ससीम

पक्षपात के तज प्रपात, निष्पक्ष न्याय हो सबको।
सब मुझे मित्र ही देखें, मैं मित्र देखता सबको।।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः । तदेव शुक्रं
तदब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः । ४ यजु० ३२।१

आदित्य ओ३म् अविनाशी, कौन तुम्हारे है समान ।
मेरे स्वामी हे ब्रह्म ईश, तुम तो सबसे हो महान ॥

आदित्य वायु शुक्र चन्द्रमा
ये नाम ब्रह्म की दें महिमा
सब नाम काम प्रभु के गायें
उसके गुण की गायें गरिमा
प्रभु अग्नि पूज्यतम प्रकाश, सर्वोत्तम हैं ज्ञानवान ।
मेर स्वामी हे ब्रह्म ईश, तुमतो सबसे हो महान ,।
प्रभु वायु जगत धारण करता
प्राणों से प्रियतम बल धरता
देता आनन्द चन्द्रमा प्रभु
शुभ शुक्र चेतना जग कर्ता
प्रभु आप व्याप्त सर्वत्र सदा, चकित चेतना का वितान ।
मेरे स्वामी हे ब्रह्म ईश, तुम तो सबसे हो महान ॥
परमेश प्रजा पति संसृति के
पालना प्रदायक सत्मति के
वही ओ३म हैं इष्ट हमारा
वे गीत उसी की सँस्तुति के

बन्दना इष्ट की करलो, अपना वह अनुपम निदान ।
मेरे स्वामी हे ब्रह्म ईश, तुम तो हो सबसे महान ॥

ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानो। ५

यजु० ३६।१

हो वेद ओ३म् के वक्ता तुम, मैं भी वक्ता बन जाऊँ।
हे वेद मुझे दो बल अपना, मैं गीत ओ३म् का गाऊँ॥

ऋग्वेद ज्ञान की आदि शक्ति
दे वही मुझे निज वाक शक्ति
प्रिय यजुर्वेद मन में आये
दे निज प्रयोग की मनन शक्ति

वेदों की ज्ञान कर्म विद्या, निज जीवन में मैं लाऊँ।
हे वेद मुझे दो बल अपना, मैं गीत ओ३म का गाऊँ॥

जो सामवेद का मधुर गान
कर दे निज निश्चय सबल प्राण
नित नित हो ओ३म निदिध्यासन
हो हृदय ओ३म् का अधिष्ठान

सामवेद के सामगान से, मैं दर्श ओ३म का पाऊँ।
हे वेद मुझे दो बल अपना, मैं गीत ओ३म का गाऊँ॥

बल नेत्र कर्ण का आ जाये
प्राण अपान सबल हो जाये
प्रभु मन वचन कर्म में मेरे
आदेश वेद का आ जाये

इस वेद भावना की भू पर, रवि रश्मि ओ३म की लाऊँ।
हे वेद मुझे दो बल अपना, मैं गीत ओ३म का गाऊँ॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त । ६ यजु० ३२।१०

सम्बन्ध ओ३म से जोड़ लिया, अब ओ३म नाम का जपना ।
वह बन्धु सहायक जनक पिता, प्रभु ओ३म विधाता अपना ।।

वह भ्राता सा सहयोगी है
वह दुख नाशक उपयोगी है
दे जन्म पालना करता वह
प्रिय पिता जगत उद्योगी है

हर यत्न सिद्ध का संधर्ता, परमेश विधाता अपना ।
वह बन्धु सहायक जनक पिता, प्रभु ओ३म विधाता अपना ।।

धरणी धाम लोक लोकान्तर
सब ज्ञात उसे निज उर अन्तर
स्थूल एक जग सूक्ष्म दूसरा
सब बसा तीसरे प्रभु अन्दर

विद्वान ज्ञान से शुद्ध बने, हो ओ३म धाम में बसना ।
वह बन्धु सहायक जनक पिता, प्रभु ओ३म विधाता अपना ।।

जग बाधाओं के तोड़ बन्द
पा ओ३म धाम आनन्द कन्द
विद्वान सरल हो मोक्ष मगन
करें प्राप्त प्रिय सुख स्वच्छन्द

अमृत्व मोक्ष पा रोम रोम, अब हमें ओ३म में रमना ।
वह बन्धु सहायक जनक पिता, प्रभु ओ३म विधाता अपना ।।

यतो यतः समीहते ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं न पशुभ्यः । ७ यजु० ३६।२२

कहां नहीं है यत्न तुम्हारा, जहां नहीं हो अभय हमारा ।
जहां जहां है यत्न तुम्हारा, वहां वहां हो अभय हमारा ॥

हे ईश सत्य सूक्ष्मातिसूक्ष्म
हर कहीं व्याप्त तव यज्ञ धूम
यह सृष्टि दृष्टि में सब तेरे
गति बिना रहा सर्वत्र धूम

हे देव महेश्वर दयावान, सर्व सदा हो अभय हमारा ।
जहां जहां है यत्न तुम्हारा, वहां वहां हो अभय हमारा ॥

सुखी रहे सब प्रजा हमारी
मत बने हमें वह भयकारी
मैं रहूं अभय प्रिय प्रजा अभय
सन्तान आदि सब सहचारी

व्यक्ति व्यक्ति में स्नेह शक्ति, स्वयं व्यक्त हो अभय हमारा ।
जहां जहां है यत्न तुम्हारा, वहां वहां हो अभय हमारा ॥

पशु भी सब हों सुखी हमारे
उनसे भी हम अभय विहारें
भय रहित बनादो पशुओं को
जो हमको ये सुख विस्तारें

हो नहीं किसी से हमको भय, कृपा करो हो अभय हमारा ।
जहां जहां है यत्न तुम्हारा, वहां वहां हो अभय हमारा ॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यते
अयनाय । ८ यजु० ३१।१८

चलो ओ३म का परिचय करलें, उसका स्वरूप अनुमान करें।
अपने प्यारे परम पुरुष से, हम चलो आज पहिचान करें ।।

वह बड़ा बड़ों से बढ़कर हैं
वह ऊच्च उच्च से चढ़कर है
अन्य न कोई महान वैसा
वह पुरुष महान्तम दृढ़तर है

अपने महनीय ओ३म प्रभू की, उत्तम महिमा का मान करें ।
अपने प्यारे परम पुरुष से, हम चलो आज पहिचान करें ।।

उसका अनुपम आदित्य वर्ण
मार्तण्ड मण्ड वह प्रभा पर्ण
रचकर सब सूर्यादि प्रकाशें
रवि रश्मि ओ३मके ज्योति चर्ण

उसके प्रकाश को पाकर के, हम चलो ओ३म का ज्ञान करें ।
अपने प्यारे परम पुरुष से, चलो आज पहिचान करें ।।

अज्ञान तिमिर से वही परे
हो विदित जिसे वह नहीं मरे
पन्थ धन्य है अन्य न कोई
दे भक्ति मुक्ति प्रभु पन्थ वरे

आनन्द दान जो कर देती, पहिचान वही मुसकान करें ।
अपने प्यारे परम पुरुष से, हम चलो आज पहिचान करें ।।

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यंमयि धेहि।
बलमसि बलंमयि धेहि। ओजोस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।
९ यजु० १९।९

अपने परम पराक्रम से, हमको परिरम्भित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपनी- हम को अनुकम्पित कर दो॥

परमेश आप हैं तेजवान
हमको भी करदो तेजवान
हे परम वीर्य परमात्म देव
हमको भी करदो शौर्यवान

बलवान प्रभो निज बल से, हमको बल थम्बित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपनी, हमको अनुकम्पित कर दो॥

हे ओ३म आप हैं ओजवान
हमको भी करदो ओजवान
हे ओ३म् पराक्रम के द्वारा
हमको करदो दृढ़ शक्तिवान

नित तेज ओज बल द्वारा, हमको स्वालम्बित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपनी, हमको अनुकम्पित कर दो॥

हे मन्यु क्रोध के कर्णधार
तव क्रोध दुष्ट को दे सुधार
दो हमको अपनी क्रोध शक्ति
कर नष्ट दुष्ट जग दूं उबार

सहन प्रभो दे सहन शक्ति, हमको सहसन्धित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपनी' हमको अनुकम्पित कर दो॥

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्प रीत्य सर्वा:प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मना त्मानमभि संविवेश । १० यजु० ३२।११

आनन्द आपका पायें, हम बने नाथ धनवान यहीं ।
हम साथ आपका पाये, दे हमें नाथ वरदान यही ॥
आकाश प्रकृति सब वसुन्धरा
आवास आपका स्वयंवरा
स्थान रिक्त कण अंश नही है
प्रिय नहीं जहां प्रभु वर ठहरा
अपना आभास हमें दो, हम करे दर्श संधान सही ।
हम साथ आपका पायें, दे हमें नाथ वरदान यही ॥
सर्वत्र दिशा उपदिशा सभी
कण बिंदु नाथ से बसा सभी
स्थूल सूक्ष्म सम्पूर्ण जगत ये
प्रभुवर प्यारे से बसा सभी
अपना संकेत हमें दो, मन मधुर मधुर मुस्कान मही ।
हम साथ आपका पायें, दे नाथ हमें वरदान यही ॥
हम और कहीं अब क्यों जायें
क्यों नहीं हृदय में लख पायें
जहाँ आत्म परमात्म वही है
हम सहज नाथ दर्शन पायें
आनन्द निकट आ जाये, दे हमको प्रभु पहिचान वही ।
हम साथ आपका पायें, दे नाथ हमें वरदान यही ॥

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमाँ धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम। ११ यजु० ३४।३६

ऐश्वर्य आप ही दे सकते, हैं एक आप ऐश्वर्यवान।
कुछ अंश ऐश्वर्य हमको दो, हम करें तुम्हारा अनुष्ठान॥

इस पर अधिकार तुम्हारा है
यह किन्तु हमें भी प्यारा है
बस उसे ईश ही दे सकता
ऐश्वर्य उसी का सारा है

हमको सर्वोत्तम बुद्धि वरो, निज वरो ईश यह उपस्थान।
कुछ अंश ऐश्वर्य हमको दो, हम करें तुम्हारा अनुष्ठान॥

ऐश्वर्य धेनु या अश्व सभी
बल पोष गमन गति विश्व सभी
प्रभु हमको सम्पन्न बनादो
दे शक्ति दीर्घ या ह्रस्व सभी

हमको विज्ञान वान करदो, हो बुद्धि उसी का प्रतिष्ठान।
कुछ अंश ऐश्वर्य हमको दो, हम करें तुम्हारा अनुष्ठान॥

सब नर नारी सन्तान श्रेष्ठ
दे हमको सुन्दर ये यथेष्ठ
शुभ कर्म सभी सहयोगी हों
हों संग सुभग सब अनुज ज्येष्ठ

आनन्द मोक्ष का हमको दो, विज्ञान उसी का अधिष्ठान।
कुछ अंश ऐश्वर्य हमको दो, हम करें तुम्हारा अनुष्ठान॥

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्विन्तिके । तदन्तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्यास्य वाह्यतः । १२ यजु० ४०।५

तुम जिसे खोजते फिरते हो, वह देखो साथ तुम्हारे है।
तुम जिसको दूर समझते हो' वह रहता पास तुम्हारे है॥

येह जगत चलाता परमेश्वर
चक्रमण कराता परमेश्वर
पर स्वयं नहीं वह चलता है
रस एक सुनिश्चल परमेश्वर

तुम उसके पास बैंठ जाओ, वह बैंठा पास तुम्हारे है।
तुम जिसको दूर समझते हो; वह बैंठा पास तुम्हारे हैं॥

जो धर्महीन अज्ञानी हैं
प्रभु भक्ति हीन अभिमानी हैं
अति दूर ईश इनसे रहता
वय अवधि व्यर्थ ही जानी है

तुम उसकी ओर निहारो तो, वह प्रतिपल तुम्हें निहारे है।
तुम जिसको दूर समझते हो, वह रहता पास तुम्हारे है॥

रहता वह दूर अधर्मी के
हो किन्तु निकट शुभ कर्मी के
वह जगत मध्य भीतर बाहर
लग रहा गले निज मर्मी के

तुम उसके द्वार जा रहे हो, वह आया द्वार तुम्हारे है।
तुम जिसको दूर समझते हो, वह रहता पास तुम्हारे है।:

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रंयज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनोयज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् । स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथंतरंच । स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापते प्रजाऽअभूम वेट् स्वाहा । १३ यजु० १८।२९

यज्ञ नाम है विष्णु ब्रह्म का, दे यज्ञ मोक्ष का आकर्षण ।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ का सुख वर्षण ।।

मम आयु यज्ञ को अर्पित है, प्रिय प्राण यज्ञको अर्पित है,
मम चक्षु कर्ण सब मन वाणी मम आत्म यज्ञ को अर्पित है ।
निज ब्रह्म वेद की विद्याऐं, सम्पूर्ण यज्ञ की जो दर्पण ।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ का सुख वर्षण ।।

निज जगत जयोति सब स्वर्ग कुंज, लोकाधारित भू पृष्ठ पुंज,
पुरुषार्थ यज्ञ मम श्रेष्ठ कर्म, सब उसे समर्पित गीत गुंज ।
मम गीत स्तुति की आहुतियाँ, हों यज्ञ देव हित कृति कर्षण ।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ का सुख वर्षण ।।

ऋक यजु साम वन्दन अथर्व, इनके गायें जो ज्ञान सर्व,
बन प्रजा प्रजापति को अर्पित, हो पालन प्रभु आदेश पर्व ।
हर कुशल क्षेम हो मोक्ष मगन, प्रभु ग्रहण हमारा हो तर्पण ।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ का सुख वर्षण ।।

यस्मान्न जातः परोऽअन्योऽअस्ति य आविवेश भुवनानि विश्वा। प्रजापतिः प्रजया सँ्रराणस्त्रीणि ज्योतीँ्षि सचते स षोडशी। १४ यजु० ८।३६

वह सबसे परे निराला है, उससे विराट जग हुआ कौन।
संपूर्ण लोक लोकान्तर में, अपने प्रिय से है बड़ा कौन॥

सारे भुवन लोक लोकान्तर
सारे विश्व देश देशान्तर
सब वसा ईश के अन्दर है
वह स्वयं बसा सबके अन्दर

कोई कण कणिका शेष नहीं, हो नहीं समाये जहाँ मौन।
संपूर्ण लोक लोकान्तर में, अपने प्रिय से है बड़ा कौन॥

हे नाथ प्रजापति प्यारे हो
पति पूर्ण प्रजा के प्यारे हो
प्राणी सब बसे ईश भीतर
वस रहे इन्हीं में प्यारे हो

ले अग्नि वायु रवि तीन ज्योति, सर्वत्र रमण कर रहा जौन।
साँपूर्ण लोक लोकान्तर में, अपने प्रिय से है बड़ा कौन॥

मन प्राण वेद, श्रद्धा सुचेष्ट
इन्द्रिय, तप, अन्न वीर्य यथेष्ठ
भू, जल अग्नि, वायु, आकाश
साँज्ञा विचार षोडशी श्रेष्ठ

दीं कला जगत को ये सोलह, अनगिनत लिये है कला कौन।
साँपूर्ण लोक लोकान्तर में, अपने प्रिय से है बड़ा कौन॥

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये । १५ यजु० ३।२४

प्यारे प्यारे पिता हमारे, तुम सुनो हमारा विनय गान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको कर दो कल्याण वान ।।

हम सेवक पुत्र तुम्हारे हैं
करुणामय पिता हमारे हैं
अपने साधन सुन्दर उपाय
ये जगत पिता विस्तारे हैं ।

प्रभु हमको उपाय बतला दो, हम सभी बनें जग स्वस्ति बान ।
हे पितो सुनो यह विनय गीत, हमको कर दो कल्याण वान ।।

जो पिता जगत में कहलाता
निज पुत्र जन्म का जो दाता
जग पिता पुत्र पालन करता
किन्तु हमारा शाश्वत नाता

हें पिता कृपा को किरणों से, दो सुखदायक विज्ञान दान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको करदो कल्याणवान ।।

विद्वान वेद विद पण्डित हैं
धन धान्य श्रेष्ठ से मण्डित हैं
हमको धन साधन रक्षा दो
हे पिता चरम बल चण्डित हैं ।

सारे दुख दूर पिता करदो, हमको करदो प्रिय त्राण दास ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको करदो कल्याण वान ।।

विभूरसि प्रवाहण:। वह्निरसि हव्यवाहन:। श्वात्रोऽसि प्रचेतास्तुथोऽसि विश्ववेदा:। १६ यजु०५।३१

हो नित्य नवल निर्वाह वाह, कर दिया निरन्तर यह प्रवाह।
प्रभु धन्य जगत निर्वाह वेग, पल पल बल का ये प्रिय प्रवाह॥

हे विभु वैभव अपना सारा
कर व्याप्त जगत ये बिस्तारा
हुए स्वयं प्रभु व्याप्त इसी में
दे दिया सुपोषक उजियारा।

आदि सृष्टि से चला आ रहा, गति प्रगति युक्त ये वायु वाह।
प्रभु धन्य जगत निर्वाह वेग, पल पल बल का ये प्रिय प्रवाह॥

प्रभु महा रसिक रस चाहक हैं
निज अग्नि हस्त रस ग्राहक हैं
सृजित हव्य कर सूक्ष्म अग्नि से
जग वर्षा कर रस वाहक हैं।

निज अग्नि करों की अंजलि से, सरसाते संसृति सरित वाह।
प्रभु धन्य जगत निर्वाह वेग, पल पल बल का ये प्रिय प्रवाह॥

क्षण क्षण व्यापनशील सुचेतन
बुद्धि ज्ञान का सत्य प्रसेंचन
वह विश्व वेद जग विद्यमान
सुखद लाभ का नित्य निकेतन।

आनन्द प्रेरणा परिचायक, हे अग्नि ओज दो तेज वाह।
प्रभु धन्य जगत निर्वाह वेग, पल पल बल का ये प्रिय प्रवाह॥

उशिगसि कविः । अङ्घारिरसि बम्भारिः । अव-स्यूरसि दुवस्वान् । शुन्ध्यूरसि मार्जालीयः सम्राडसि कृशानुः । परिषद्योऽसि पवमानः । नभोऽसि प्रतक्वा। मृष्टोऽसि हव्यसूदनः ऋतधामासि स्वर्ज्योतिः ।

१७ यजु० ५।३२

प्रभु सत्यम् शिवम सुन्दरम हो, विद्वान जनों के अर्चनीव ।
कमनीय कवे शुभ शोभनीय, हे ईश तुम्ही हो सेवनीय ॥

तुम पाप ताप अघहारी हो
तुम जग पालक वम्भारी हो
अन्नादि सुजन को तुम देते
इस जग के शोधन हारी हों ।

बम बम बम्भोले बम्भारी, हे महादेव हो माननीय ।
कमनीय कवे शुभ शोभनीय, हे ईश तुम्हीं हो सेवनीय ॥

ईश्वर सम्राट सुशोभित है
नित न्याय नियत अनुबोधित है
पाप पात्र जन रगड़ माँजता
मार्जनी मुष्टि में शोधित हैं ।

सुख शुद्धि करो हमको प्रदान, हे मार्जनीय हे पावनीय ।
कमनीय कवे शुभ शोभनीय, हे ईश तुम्हीं हो सेवनीय ॥

नभ से बढ़कर अत्यन्त सूक्ष्म
सब ज्ञात तुम्हें जग स्थूल सूक्ष्म,
निष्पक्ष कर्मफल देते हो
सबके सर पर तुम रहे झूम ।

हर हव्य हव्य निज ज्योति धाम, दो ईश हमें यह कामनीय ।
कमनीय कवे शुभ शोभनीय, हे ईश तुन्हीं हो सैवनीय ॥

समुद्रोऽसि विश्वव्यचाः । अजोऽस्येकपात् । अहिरसि बुध्न्यः । वागस्येन्द्रमसिऽदोसि । ऋतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तम् । अध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मेऽस्मिन पथि देवयाने भूयात् । १८ यजु० ५।३३

सत्य धर्म के विद्या वल से, हमने खोल दिया जिस द्वार को ।
हे नाथ बन्द मत कर देना, निज मोक्ष धाम के द्वार को ।।

प्रभु द्रवणीय रूप ये तेरा
सब जीवों में द्रवित बसेरा
एक चरण में अरे अजन्मा
यह विस्तीर्ण विश्व का फेरा ।

जगत मूल निर्माता ईश्वर, हटा हीनता प्रभु दो प्यार को ।
हे नाथ बन्द मत कर देना, निज मोक्ष धाम के द्वार को ।।

मेरे प्रभु वक्ता उपदेशक
धनी इन्द्र शोभा संवेदक
सत्य धर्म का यह देवयान
सन्तप्त नहीं हो अनुदेशक

कर क्लेश शमन दो स्वस्ति गमन, परमार्थ लक्ष्य व्यवहार को ।
हे नाथ बन्द मत कर देना, निज मोक्ष धाम के द्वार को ।।

सन्मार्ग हमारा करो सुखी
यह देव यान हो नहीं दुखी
जो चलें साथ सहयोग करें
हो जायें नहीं वे स्वार्थ मुखी

कर प्रेय प्रगति से प्रेय सुगति, आनन्द मोक्ष के सार को ।
हे नाथ बन्द मत कर देना, निज मोक्ष धाम के द्वार को ।।

देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । मनुष्यकृतस्यैनसोऽवय जनमसि । पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । आत्मकृ यस्यैनसोऽवयजनमसि । एनस एनसोऽवयजनमसि । यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार ।यच्चाविद्वाँस्तस्यसर्वस्यै नसोऽवयजनमसि । १६ यजु० ८।१३

मेरे रक्षक प्रभु एक आप, मुझसे संताप पृथक करदो।
प्रत्येक पाप से पृथक आप, मुझसे भी पाप पृथक करदो ॥

प्रभु देव जनों के सुख भर्ता, मृदु मनुज गणों के दुख हर्ता
जग जीव सर्व के अघनाशक, प्रिय पितृ जनों के यश कर्ता।
शुभदेव दनुज प्रियपितृ आत्म,सत्वर अभिशाप पृथक करदो।
प्रत्येक पाप से पृथक आप, मुझ से भी पाप पृथक कर दो ॥

विद्वान भले मैं बन जाऊँ, या अविद्वान ही रह जाऊं
हे नाथ आपकी बिना शरण, मैं नहीं पाप से बच पाऊँ।
हो नाथ आपकी अनुकम्पा, मेरे निष्पाप रथक करदौ।
प्रत्येक पाप से पृथक आप, मुझ से भी पाप पृथक करवो ॥

चाहे जैसा हो बड़ा पाप, सबसे परमेश्वर पृथक आप,
जीव जगत में भोग कर्म फल, प्रभु कृपा बनें निष्पाप आप।
अज्ञान हटा विज्ञान बढ़ा, मुझसे परिताप पृथक करदो।
प्रत्येक पाप से पृथक आप, मुझसे भी पाप पृथक करदो ॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमॉं कस्मै देवाय हविषा विधेम।
२० यजु० १३।४

सब सृष्टि प्रलय में वर्तमान, प्रभु आदि पूर्व से वर्तन।
जब किया आत्म् धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

जब सृष्टि नहीं थी ये सारी
थी घोर प्रलय की अंधियारी
था एक हमारा स्वामी ही
कर रहा सृजन को तैयारी

पति एक अकेला ईश्वर, निज गर्भ लोक सब सर्जन॥
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

जग की रचना और धारणा
सर्व लोक की ललित लालना
पृथ्वी से रवि लौक तलक की
हे ईश सनातन पोष पालना।

जग प्रजा प्रजापति अपनो, हो सतत ज्योति आकर्षण।
जब किया आत्म धन अर्पण, तव हुआ नाथ का दर्शन॥

बन पर्वत सिन्धु नदी वसुधा
सब सूर्य–चन्द्र जग की सुविधा
परमात्म सभी को देता है
जग जीवन की प्रिय प्राण सुधा

यह हव्य भव्य या गीत गव्य, सब किया आपको अर्पन।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । २१ यजु० ३६ म० ८

ऐश्वर्य सर्व के स्वामी हो, हे इन्द्र विश्व अधिराजा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

वह इन्द्र हमारा ईश्वर है
ऐश्वर्यवान जगदीश्वर है
पल पल प्रकाश का दाता वह
सबका रक्षक रणधीश्वर है ।

सर्वोच्च राज राजेश्वर वर, रक्षा के हाथ बढ़ा जा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

द्विपदे चौपदे प्राणी सारे
पुत्र मित्र या भृत्य हमारे
हाथी घोड़े पशु धेनु सर्व
हों सहयोगी सभी सुखारे ।

अपना संरक्षण सबको दे, हे परम मान्य महराजा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

हे इन्द्र विश्व पर राज्य करो
सब मनुज वर्ग सम राज करो
पशु प्राणि सर्व की रक्षा कर
इनके सुख का सब साज वरो

सम्राट प्रजा के परिपोषक, हमको सरताज बनाजा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

शं नो वातः पवताँ शं नस्तपतु सूर्यः । शं नः
कनिक्रदद्देवःपर्जन्योऽअभिवर्षतु । २२ यजु० ३६।१०

यह चक्षु देखते तुझको हैं, निज दृश्य इधर भी दर्शा।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा॥

तन प्राण हमारा विकसा दो
सुखकारी वातास वहा दो
वायु मन्द शीतल सुगन्ध मय
जीवन में संचार करा दो

स्पर्श सुखद ले साथ बहे ये, वायु हमें दे अब हर्षा।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा॥

यह सूर्य सृजन साधन विशेष
हो तप्त सदा ये अग्नि वेश
निज ताप-ज्योति की ऊर्जा से
दे सूर्य हमें नित सुख अशेष

यह सूर्य सृष्टि का सम्पोषक, दो हमको ये उत्कर्षा।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा॥

यह मेघ मोद के साधन हैं
इनसे मिलता धरती धन है
मेघों की शब्द गर्जना से
जग का सम्यक सम्बर्द्धन है

हो मेघों की मधुरस वर्षा से, हो सृष्टि कृष्टि सुख कर्षा।
प्रिय प्रकृति संपदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा॥

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीःप्रतिधीयताम् । शं न इन्द्राग्नी भवताम्वोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या । शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिंद्रासोमा सुविताय शं योः । २३ यजु० ३६।११

यह आयु व्यर्थ मत जाये, दो नाथ स्वयं संदर्शन ।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

आनन्द दिवस में पायें हम
सब रजनी सुखी बितायें हम
दिन रात आपके पथ पर प्रभु
बढ़ते ही बढ़ते जायें हम ।

दिन प्रकाश दे निशि विकास, हो सुखी सदा सहवर्तन ।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

हे नाथ आपकी सूर्य विभा
अथवा ये उत्पन्न अग्नि प्रभा
आधार हमारी रक्षा का
सन्मार्ग दिखाये प्रिय प्रतिभा :

हे कालपते रक्षा का, प्रिय करो नाथ सम्बर्द्धन ।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

वायु चन्द्र शुचि यज्ञ हव्य से
पूर्ण आयु बल गीत गव्य से
हो जगत युद्ध पुरुषार्थं सिद्ध
राज–प्रजा हों सुखी द्रव्य से ।

बल विद्या शान्ति बढ़ाओ, क्षण क्षण कर दो सुख वर्षण ।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत्। त्रीणिपदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पिताऽसत्। २४ यजु० ३२।९

जो व्यक्ति सत्य विद्वान बने, उपदेश वही सुन पाये।
उपदेश ईश का सुनने से, भय मरण दोष मिट जाये॥

रमणीक ओ३म् का ज्योति धाम
भय मरण हीन वह मुक्ति काम
विद्वान तपस्या से पाते
यह ईश कृपा का सुख ललाम

उपदेश आचरण करने से, द्वार मोक्ष का खुल जाये।
उपदेश ईश का सुनने से, भय मरण दोष मिट जाये॥

उपदेश श्रवण जो करता है
जीवन में उसको धरता है
विद्वान वही गन्धर्व बने
आचरण गीत जो गुनता है।

ईश्वर के गीत मधुर गावे, गन्धर्व वही बन जाये।
उपदेश ईश का सुनने से, भय मरण दोष मिट जाये॥

परमेश तीन पग धरता है
सब जगत नियन्त्रित करता है
उत्पत्ति पालना प्रलय तीन
पद सृष्टि पार वह करता है।

पिता पिताओं का वेद ज्ञात, विद्वान हृदय वह आये।
उपदेश ईश का सुनने से, भय मरण दोष मिट जाये॥

द्यौ शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापःशांति
रोषधयःशान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शांतिर्ब्रह्म
शांतिस्सर्वँ शांति श्शांतिरेव शांतिः सा मा शांतरेधि ।
२५ यजु० ३६।१७

आनन्द शांति के दाता, यह जगत शान्ति पा जाये।
जब शान्ति जगत यह पाये, तब हमें शांति मिल पाये ।।

सब लोकों के ऊपर भाये
द्यौ लोक शान्त हो जाये
यह वायु आदियुत अन्तरिक्ष
निरुपद्रव प्रशान्ति को पाये

यह भूमि भूमि के साधन, सब नित्य शाँति को पायें,
जब शांति जगत यह पाये, तब हमें शाँति मिल पाये ।।

यह जल और वस्तुये जल की
सब औषधियां तृण निर्मल की
प्रिय वृक्ष वनस्पति सारे ही
हमें शांति दें विश्व विमल की

विद्वान शांति वह पायें, जो वेद शांति को गाये।
जब शांति जगत यह पाये, जाब हमें शांति मिल जाये ।।

गुण सूर्य किरण इन्द्रिय बारा
स्थूल सूक्ष्म सब जगत प्रसारा
सब जीव शांति नित नित पायँ
हो शांत क्रोध उनका सारा

हो स्वयं शाँति सुख वाली, हम प्रग ति शांति तब पाये।
जब शांति जगत यह पाये, तब हमें शाँति मिल पाये ।।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्करायच । नमः शिवाय च शिवतराय च ।
२६ यजु० १६।४१

निज जोड़ हाथ कर नमन माथ,हो नित्य नमस्ते शंकर को ।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने बम भोले शंकर को ।।

कुछ नहीं असंभव हैं उसको
वह पार करे इस भव जग को
वह वरे मयोभव जग माया
तो करे मोक्ष सम्भव हमको

जग जन्म पोष या मरण करण, ताँडवकारी प्रलयंकर को ।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने बम भोले शङ्कर को ।।

जग जीवों का कल्याण करे
जग माया का भी दान करे
मन प्राण इन्द्रिय सुख शालीं
शङ्कर देकर उत्थान करे ।

हे आत्म उसी को नमन करो, सुखदायक स्वयं शुभंकर को ।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने बम भोले शङ्कर को ।।

वही तुम्हारा मङ्गलकारी
वही बनाये जग अधिकारी
है आत्म हितैषी नाथ वही
सब जगत मोक्ष सम्पदधारी

हे आत्म उसे अवलोक चलो, निज हृदय चेतना अंकुर को ,
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने बम भोले शङ्कर को ।।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः । २७ यजु० २५।२१

तुम तो रहते साथ हमारे, हम रहें तुम्हारे संग संग ।
हे नाथ करो अनुकम्पा, भर जाय सुमङ्गल अंग अंग ॥

हे देवेश्वर है विनय यही
जगदीश बनो अब सदय सही
हर यज्ञ यजन कर्ताओं को
दो यजनीयेश्वर विजय वहीं ।

ये देह तुम्हीं ने की प्रदान, हो जाय नहीं अब रंग भंग ।
हे नाथ करो अब फनुकम्पा, भर जाय सुमङ्गल अंग अंग ॥

यह सुने कान कल्याण सदा
हो नयन दृष्टि कल्याण प्रदा
प्रत्येक अङ्ग आभास करें
तेरी महिमा अनुमान सदा ।

बलवान बने तन का बितान, हो जाय नहीं ये तंग तंग ।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाय सुमङ्गल अंग अंग ॥

प्रभु गीत करें हम उच्चारन
आदेश तुम्हारा कर पालन
आयु हमारी देव हितैषी
हो देह-आत्म सुख सँचारन ।

कल्वाण वान उत्तम उमंग, हर समय शमन हो दङ्ग जंग ।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाय सुमङ्गल अंग अंग ॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः । स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च दि वः । २८ यजु० १३।३

हमने ताड़ लिया जग सारा, अपना तू ही एक सहारा ।
हमने भाँप लिया जग सारा, सबसे तू ही बड़ा हमारा ॥

आदि काल से सृष्टि प्रसारक
रच रहा जगत गति विस्तारक
तू सुरुच ब्रह्म महनीय बड़ा
है ग्रहण योग्य प्रभु निस्तारक

अज्ञात ज्ञात सब भुवनों का, तू ने यह आवरण प्रसारा ।
हमने भाँप लिया जग सारा, सबसे तू ही बड़ा हमारा ॥

थल में तू है जल में तू है
नक्षत्र चन्द्र रवि तल में तू है
सब विविध लोक लोकान्तर में
प्रिय परमेश उपस्थित तू है ।

कोई कितना ऊँचा जाये, उड़ कर पाये नहीं किनारा ।
हमने भाँप लिया जग सारा, सबसे तू ही बड़ा हमारा ॥

सब लोक ईश की उपमायें
दे दृश्य ईश मर्यादायें
अव्यक्त व्यक्त हो कृतियों से
दे बोध ईश जग रचनायें

हमने सारा प्रेय विसारा, लखकर सुन्दर श्रेय तुम्हारा ।
हमने भाँप लिया जग सारा, सबसे तू ही बड़ा हमारा ॥

सुमित्रिया न आप औषधयः संतु दुर्मित्रियास्तस्मै
सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः ।
२९ यजु० ६।२२।३६।२३

सद मित्र हमारे बन जाओ, दुर्मित्र शत्रु के शूल बनो।
अनुकूल हमारे हो जाओ,पर अरियों के प्रतिकूल बनो ॥

हे प्रभु सर्व मित्र सम्पादक
जल प्राण शक्ति विद्या साधक
हों औषधियाँ सब उपयोगी
आरोग्य आयु के निष्पादक

यह देह न हो सन्देह ग्रस्त, इस स्वस्थ देह के फूल बनो।
अनुकूल हमारे हो जाओ, पर अरियों के प्रतिकूल बनो ॥

जो हमसे द्वेष किया करते
या द्वेष दुष्ट से हम करते
हो उसको विषमय औषधियां
होकर निष्प्राण वही मरते।

हमको हो वेणु सुरक्षा को, अरि दल के साथ त्रिशूल बनो।
अनुकूल हमारे हो जाओ, पर अरियों के प्रतिकूल बनो ,।

जो सत्य धर्म उपकारी हों
उसको साधन हितकारी हों
हों दुष्ट अधर्मी पापी जो
उनको विचित्र बीमारी हों

हर क्षण कण प्रभु बोध हमें हो,पर अरिदल को भय भूल बनो।
अनुकूल हमारे हो जाओ, पर अरियों के प्रतिकूल बनो ॥

य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदृषिर्होता न्यसीदत् पिता नः । स आशिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छ दवराँ२ऽआविवेश । ३० यजु० १७।१७

जो सृष्टि यज्ञ का होता है, देता प्रभु भेंट वही इसको ।
जिसने जग का विस्तार किया, ले पिता समेट वही इसको ।।

जौ सर्व लोक लोकान्तर का
यह यज्ञ रचे वन प्रान्तर का
वह ईश सृष्टि उत्पादक हैं
निर्माता रवि देशान्तर का ।

दे आदिकाल जो जन्म जनक, देता प्रभु मृत्यु वही इसको ।
जिसने जग का विस्तार किया, ले पिता समेट वही इसको ॥

प्रभु प्रथम ईक्षण प्यार किया
सामर्थ्य सृष्टि विस्तार किया
आकार रूप देकर अनन्त
प्रभु ने जग का शृङ्गार किया ।

देता जग अद्‌भुत अलङ्कार, करता संहार वहीं इसको ।
जिसने जग का विस्तार किया, ले पिता समेट वही इसको ।।

विस्तीर्ण जगत आवरण वही
इसके भीतर अन्तरण वही
जग के बाहर भीतर जग के
लख रहा सभी आचरण वही ।

कर्मानुसार दे प्रजा प्यार, देता दुतकार वही इसको ।
जिसने जग का विस्तार किया, ले पिता समेट वही इसको ।।

इषे पिन्वस्व। ऊर्जे पिन्वस्व। ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व। द्यावापृथिभ्यां पिन्वस्व। धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि धारय ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय विशं धारय। ३१ यजु० ३८।१४

आनन्द सुभग प्रभु देकर, सब दूर दोष दुख दुष्ट करो।
दे हमें कृपा की किरणें, हे नाथ सदा सम्पुष्ट करो।।

सात्विक सुखाद्य का दान करो
हमको अन्नादि प्रदान करो
हो अपच कुपच का रोग नहीं
हमको बल पाचन वान करो।

हो नहीं सुधर्मी भुक्षित, दे खाद्य सभी सन्तुष्ट करो।
दे हमें कृपा की किरणे, हे नाथ सदा सम्पुष्ट करो।।

हमको बल ऊर्जा वान करो
हे वेद हमें विद्वान करो
दे शौर्य धैर्य नित नीति विनय
राज्य हमारा उत्थान करो।

देकर परलोक लोक सुख, परमेश हमें परिपुष्ट करो।
दे हमें कृपा की किरणें, हे नाथ सदा सम्पुष्ट करो।।

जनता निर्वैर अदीन रहे
निज राज्य श्रेष्ठ स्वाधीन रहे
पशु पुरुष स्वर्ण धन सुखद राज्य
जन जन में प्रीत प्रवीन रहे।

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र, सङ्गठन मधुर सब सुष्ठ करो।
दे हमें कृपा की किरणें, हे नाथ सदा सम्पुष्ट करो।।

किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत् । यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा विद्यामौर्णो न्महिना विश्वचक्षाः । ३२ यजु० १७।१८

सम्पूर्ण विश्व का अधिष्ठान, उत्पादक कौन बताओ।
कैसे इस जग का सृजन हुआ, अधिष्ठान कौन बताओ।।
विश्वकर्म करता परमेश्वर
जग अधिष्ठान है परमेश्वर
नाम विश्वकर्मा कहते हैं
जग का स्वामी वह परमेश्वर
यह अधिष्ठान तो बतलाया, उत्पादक कौन बताओ।
कैसे इस जग का सृजन हुआ, अधिष्ठान कौन बताओ।।
वही विश्वकर्मा उत्पादक
रचकर विश्व रहे आच्छादक
उसकी महिमा से सृजन हुआ
उसका है वहीं अधिष्ठापक
सकल विश्व के अधिष्ठान का, अधिष्ठान कौन बताओ।
कैसे इस जग का सृजन हुआ, अधिष्ठान कौन बताओ।।
इस जग का जो अधिष्ठान है
वह आप आपका अधिष्ठान है
परमेश्वर सबका स्वामी है
अन्य न उसका अधिष्ठान है।
वह आनन्द पूर्ण विश्व द्रष्टा, उपस्थान कौन बताओ।
कैसे जग का सृजन हुआ, अधिष्ठान कौन बताओ।।

तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाहि । आयुर्दाऽअग्ने ऽस्यायुर्मे देहि । वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि । अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्मे आपृण । ३३ यजु० ३।१७

यदि पुत्र कुशलता पायेंगे, तो पितु का मान बढ़ायेंगे ।
जो पुत्र सबल हो जो जायंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे ।।

हे अग्नि हमारे पिता आप
सर्वत्र व्याप्त हो रहे आप
यह अग्नि नाम परमेश्वर का
तप ताप प्रकाशित अग्नि आप

बल प्रभा ताप हम पायेंगे, जीवन ज्योतित हो जायेंगे ।
जब पुत्र सबल हो जायेंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे ।।

इस तन के रक्षक परमेश्वर
कर दो रक्षा हे परमेश्वर
प्रिय आप आयु के दाता हो
अब आयु बढ़ाओ परमेश्वर ।

प्रभु की रक्षा हम पायेंगे, तब चिरंजीव हो जायेंगे ।
जब पुत्र सबल हो जायेंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे ।।

विज्ञान वर्च के दाता आ
अपना वर्चस्व बढ़ाता आ
तन में यदि कहीं न्यूनता हो
उसकी सम्पूर्ति कराता आ ।

यह सुदृढ़ देह हम पायेंगे, तब प्रभु से नेह बढ़ायेंगे ।
जब पुत्र सबल हो जायेंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे ।।

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देवएकः । ३४ यजु० १७।१९

इस भीड़ भाड़ में भ्रमित न हो, प्रभु साथ देखता मेला ।
ओ३म् हमारा पिता प्रतापी, एक अकेला अलबेला ।।

पूर्ण विश्व में चक्षु तुम्हारे
देख रहे जग मेला सारे
विश्व पूर्ण में चरण विचरते
साथ हमारे बिना सहारे।

निज शक्ति शौर्य की बाहों से, यह ठेल रहा जग ठेला ।
ओ३म् हमारा पिता प्रतापी, एक अकेला अलबेला ।।

उसके सत्वर स्रोत प्रखर हैं
विश्व प्रसारित मुख के स्वर है
पुचकार प्यार करते दुलार
वे धमकाते भी बढ़कर हैं।

फल न्याय नियम कर्मानुसार, दे जन्म मरण का झेला ।
ओ३म् हमारा पिता प्रतापी, एक अकेला अलबेला ।।

यह पृथ्वी या वह स्वर्ग लोक
प्रभु निर्माता बे रोक टोक
शुभ कर्म संभल कर करने है
यदि चाहे सुत आलोक लोक।

पुत्रो खेलो खेल ठीक से, यह खेल पिता ने खेला ।
ओ३म् हमारा पिता प्रतापी, एक अकेला अलबेला ।।

भूर्भव: स्व: । सुप्रजा: प्रजाभि:स्याँ् सुवीरो वीरै: सुपोष: पोषै: । नर्य प्रजां मे पाहि । शँ् स्य पशून्मे पाहि- अथर्य पितुं मे पाहि । ३५ यजु० ३।३७

तुमने संसार रचाया, दा नाथ हमें रचनायें ।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अंश हमें मिल जायें ।।
भू ईश सदा ही वर्तमान
भुव: सृष्टि निर्माण ज्ञान
स्व: रूप ईश सुख दाता है
हे नाथ हमें दो सुख महान ।
जो प्रजा कुटुम्ब बनाया, कुछ पुत्र प्रजा मिल जाये ।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अंश हमें मिलजाये ।।
प्रभु तुमने सुवीर दल पाया
उनको हमने भी अपनाया
हमको करो युद्ध में बिजयी
होवें योधाओं की साया ।
तुमने वीर वंश विकसाया, वे बली वीर हम पायें ।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अंश हमें मिल जायें ।।
हे नर्य नरों के हितकारी
करदो रक्षित प्रजा हमारी
स्वीकार वन्दना कर लो ये
अश्वादिक पशु करो सुखारी ।
जो अन्न अर्थ छितराया, वह अन्न हमें मिल जाये ।
जो कोष नाथ बिखराया, कुछ अंश हमें मिल जाये ।।

किँ स्विद्वनं क उ स वृक्षऽआस यतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः। मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन् । ३६

यजु०१७।२०

करे प्रश्न उत्तर पा जायें, जाने प्रभु अन्तरयामी।
यह प्रश्न मनीषी के मनमें,है कौन भुवन का स्वामी ॥
क्या विद्या, वन वृक्ष बताओ
इनकी महिमा को समझाओ
ईश्वरीय सृजन क्षमता विद्या
तुम निर्माण बोध अपनाओ।
सामर्थ्य सृजन की यह विद्या, रखता परमेश्वर नामी।
यह प्रश्न मनीषी के मनमें, है कौन भुवन का स्वामी ॥
वन कारण है तो वृक्ष कार्य
यह उत्तर करलो शिरोधार्य
भूमि स्वर्ग या नरक लोक सब
वन वृक्ष रूप जग व्यावहार्य
सब लोक ईश धारण करता, वह बन करके सहगामी।
यह प्रश्न मनीषी के मनमें, हैं कौन भुवन का स्वामी ॥
ले काष्ठ वृक्ष का काष्ठकार
वस्तुऐं बनायें बहु प्रकार
जगत विश्वकर्मा यों रचता
सम्पूर्ण सृष्टि का कर्णधार।
कल्याणबान विज्ञान दान, वह करता है परिणामी।
यह प्रश्न मनीषी के मनमें, है कौन भुवन का स्वामी ॥

तच्चक्षुर्देवहितंपुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्। ३७ यजु० ३६।२४

पूर्व प्रलय से ऊपर बैठा, कुछ निकट बैठ लें हम भी।
वह हमें निरन्तर देख रहा, अब उठो देख लें हम भी॥
था प्रथम पूर्व के सृष्टि समय
बस बचे शुद्ध प्रभु प्रलय समय
आदि जन्म दाता परमेश्वर
की वर्तमान यह सृष्टि उदय
वह युगयुग से जी रहा जगत,सौ वर्ष जियें सुख हम भी।
वह हमें निरन्तर देख रहा, अब उठो देख लें हम भी॥
वह मेघ गर्जना तड़ित नाद
सरिताओं का कल कल निनाद
वन वृक्ष पक्षियों की चुहक गुंज
संगीत मधुर सम्वाद वाद :
वह आदि काल से बोल रहा, सौ वर्ष कहें सुन हम भी।
वह हमें निरन्तर देख रहा, अब उठो देख लें हम भी॥
हे नाथ आप सुन्दर समर्थ
मत आयु हमारी जाय व्यर्थ
स्वाधीन स्वस्थ सौ वर्ष जियें
या अधिक और मोदित सदर्थ।
उसने ब्रह्मांड अधीन किया, स्वाधीन देश लें हम भी।
वह हमें निरन्तर देख रहा, अब उठो देख लें हम भी॥

या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा। शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः। ३८ यजु० १७।२१

जब सखा विश्वकर्मा अपना, तो विश्व बोध क्या छिपना।
सखा सखा से नही छिपाता, सुखकर रहस्य कुछ अपना ॥

ईश्वर के सुरचित त्रि विध धाम
उत्तममध्य अधम सब श्वेत श्याम
सब लोक सुपरिचित हो जायें
दो शिक्षा सुन्दर मुक्ति काम।

सब कहीं पर्यटन करते हो, पर्यटन बोध प्रिय करना।
सखा सखा से नहीं छिपाता; सुखकर रहस्य कुछ अपना ॥

तीन लोक के वैभव सारे
कहां चाहते मित्र विचारे
दो थोड़ा ही पर्याप्त किन्तु
जिससे हों निर्वाह हमारे।

हे सखा हमैं विधि विद्या दो, हो दानग्रहण धन धरना।
सखा सखा से नहीं छिपाता- सुखकर रहस्य कुछ अपना ॥

विद्वान सदा सत्सङ्ग करें
हम सज्जन के गुण अङ्ग धरें
सत्कार परस्पर यथा योग्य
जग जीवन मैं सुख रंग भरें।

जब सखा सम्पदा का स्वामी, तब अन्य कहीं क्यों तकना।
सखा सखा से नहीं छिपाता, सुखकर रहस्य कुछ अपना ॥

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु । शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ।

३९ यजु० ३६।२

हर छिद्र आवरित करदो, ये डूबे नहीं नवैया ।
दी हमको देह नवैया, प्रभु उसके बनो खिवैया ।।
देह नाव के भाग सुकोमल
बहुधा हो जाते जो निर्बल
राग द्वेष जिनने भर जाता
उफनाता चंचलता का मल
करो कृपा से दोष दूर- पाये बल हृदय मढ़ैया ।
दी हमको देह नवया, प्रभु इसके बनो खिवैया ।।
चक्षु हृदय मन लिये छेद हैं
इनके बहु कर्तव्य भेद हैं
ये तृप्त करें या तृषित करें
अन्ध पन्थ या वरे वेद हैं :
तुम बड़े बृहस्पति महान, हम दीन अनाड़ी भैय्या ।
दी हमको देह नवैया, प्रभु इसके बनो खिवैया ।।
हे भव्य भुवन पति विश्व नाथ
जब हृदय आप क्यों तब अनाथ
मझधार न देना छोड़ नाव
हो साथ साथ लो पकड़ हाथ ।
आत्म गीत परमात्म सुनो, यह आया शरण गवैया ।
दी हमको देह नवैया, प्रभु इसके बनो खिवैया ।।

विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता विधाता परमोत सन्दृक्। तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऽऋषीन् पर एक माहुः। ४० यजु० १७।२६

उपवास मिल गया उसका, अब और कौन आभास चाहिये।
बिश्वास मिल गया उसका अब और कौन उल्लास चाहिये॥

ईश्वर सर्वज्ञ विश्वकर्मा
विज्ञान विविध का शिव शर्मा
सर्व व्याप्त है निर्विकार वह
जग धर्ता करता सद्धर्मा।

आकाश मिल गता उसका, अब और कौन अवकाश चाहिये।
बिश्वास मिल गया उसका, अब और कौन उल्लास चाहिये॥

परमेश जगत निर्माता है
वह धाता और विधाता है
सब पाप पुण्य वह देख रहा
वह यथा योग्य फल दाता है।

सहवास मिल गया उसका, अब और कौन वातास चाहिये।
विश्वास मिल गया उसका, अब और कौन उल्लास चाहिये॥

अद्वितीय एक प्रभु ने जग का
निर्माण किया इस जगमग का
ऋषि सप्त शक्ति में उसकी हैं
करता संचालन रग रग का।

मधु हास मिल गया उसका, अब और कौन मधुभास चाहिये।
विश्वास मिल गया उसका, अब और कौन उल्लास चाहिये॥

चतुः स्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य सप्रथाः स नो विश्वायुः सप्रथाः स नःसर्वायुः सप्रथाः। अप द्वेषोऽअपह्वरो ऽन्यव्रतस्य सश्चिम। ४१ यजु० ३८।२०

हे नाथ नाभि तेरी अपार, पोषण रस वैभवशाली।
स्वामी रस सागर शाली है, फिर क्यों यह गागर खाली॥
ये चार कोण की नाभि नाथ
ऋत, निरोग, सुख, विज्ञान साथ
स्वामी के हाथ स्रोत इनके
फिर यह वंचित क्यों एक साथ
तेरे वश में विश्वायु हुई, पूर्णायु मिले सुख वाली।
स्वामी रस सागर शाली है, फिर क्यों यह गागर खाली।
पूर्णायु हमारी अपनी हो
वह रोग रहित सुख सखनी हो
विज्ञान विविध संकलित करे
सामर्थ्य हर्ष की करनी हो।
रह दूर द्वेष के कम्पन से, हो आयु हृदय हरियाली।
स्वामी रस सागर शाली है, फिर क्यों यह गागर खाली॥
अपना स्वामी अन्तरयामी
क्यों बने अन्य के अनुगामी
उसका ही आदेश पालना
यह किया सुनिश्चय अभिरामी
रस नाभि कोण दो इधर मोड़, यह गागर हो रस वाली।
स्वामी रस सागर शाली है, फिर क्यों यह गागर खाली॥

यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यो देवानां नामधा एक एव तँ सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या। ४२ यजु० १७।२७

करके प्रभु से प्रश्नोत्तर, महिमा उसकी ज्ञात करें :
अपना पिता विश्वज्ञाता, चलो उसी से बात करें ॥

जो नित्य पालना करता है
यह जन्म जनक वह वरता है
फल कर्म विधायक वह अपना
सुख मोक्ष वही तो धरता है।

सब धाम भुवन का ज्ञाता, सबको प्रभु हो व्याप्त करें।
अपना पिता विश्व ज्ञाता, चलो उसी से बात करें ॥

सूर्यादि लोक सब प्राणि मात्र
विद्वान वृन्द के ज्ञान गात्र
सब करे व्यवस्था पिता एक
है वही सभी का नाम दात्र।

आज्ञानुसार क्षम करके, हम निश्चय पितु प्राप्त करें।
अपना पिता विश्व ज्ञाता, चलो उसी से वात करें ॥

प्रभु नाभि कोण रस स्रोतदक्ष
दें धर्म अर्थ शुभ काम मोक्ष
तन, मन, धन आत्म हमारा
पुरुषार्थ प्राप्त हो ईश कक्ष ॥

तभी सुलभ हों हमको,, जब सहाय निज तात करें।
अपना पिता विश्व ज्ञाता, चलो उसी से बात करें ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। ४३ यजु० ३४।१

दौड़ लगाये प्रभु तक जाये, भाये मत अन्य विकल्प भान।
हे नाथ शक्ति शिव सुन्दर दे, मन करो पुण्य संकल्पवान ॥

मन दूर दूर तक भगता है
चाहे जन सोता जगता है
हैं दूर गमन इसका स्वभाव
जग का प्रकाश मन धरता है।

वह ज्योति सर्व में ज्योति एक,सब ज्योति करे अभिकल्पवान।
हे नाथ शक्ति शिव सुन्दर दे, मन करो पुण्य संकल्प वान ॥

इन्द्रिय देह या अग्नि दिवाकर
मन से हों ये ज्योति उजागर
मन बिना नहीं ये हमें दिखें
देखे जितना जोर लगाकर

होकर स्थिर और नियन्त्रित मन,दे आत्म हर्ष प्रभु स्वरूपज्ञान।
हे नाथ शक्ति शिव सुन्दर दे, मन करो पुण्य संकल्पवान ॥

चपल चंचला गति है मन की
यजन भजन या पाप गमन की
सब भूत भविष्यत वर्तमान
करे सुपरिचित क्षमता मनकी।

तज गल्प जल्प के सब विकल्प, मन बनो वशी संकल्पवान।
हे नाथ शक्ति शिव सुन्दर दे, मन करो पुण्य संकल्पवान ॥

न तं विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृपऽउक्थशासश्चरन्ति । ४४ यजु० १७।३१

जिसके दर्शन के लिये चले, पर उससे सुख को मोड़ चले ।
तुम जिसे खोजते उधर चले, पर इधर उसी को छोड़ चले ॥
तुम नहीं जानते हो उसको
यह मूर्ति समझते हो उसको
उसके जगत और उसमें ही
क्या साम्य लग रहा है तुमको।
तुम जगत जनक को छोड़ चले, पर हाथ जगत के जोड़ चले ।
तुम जिसे खोजते उधर चले, पर इधर उसी को छोड़ चले ।।
वह सर्व भुवन का ज्ञाता है
क्या तुमको भी कुछ आता है
जग जीव ब्रह्म है एक नहीं
यह वेद तुम्हें बतलाता है।
अज्ञान तिमिर में दौड़ चले, पर ज्योति दीप को तोड़ चले ।
तुम जिसे खोजते उधर चले, पर इधर उसी को छोड़ चले ।।
स्वार्थ पूर्ति निज विषय भोग में
जल्प गल्प या भोग रोग में
तुम दिशा वेद विपरीत चले
तज ईश योग भज लाभ लोगमें
उसका अनुसरण मरोड़ चले, पर उसकी करके होड़ चले ।
तुम जिसे खोजते उधर चले, पर इधर उसी को छोड़ चले ।।

भग एव भगवाँ२ऽअस्तु देवास्तेन वयं भगवंतःस्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर
एता भवेह। ४५ यजु० ३४।३८

ऐश्वर्य कहाँ फिर जायेंगें, जब उसके स्वामी आयेंगे।
ऐश्वर्य कौन रह जायेंगे, जब नाथ हमें मिल जायेंगे॥
हे नाथ आप ऐश्वर्यवान
इसलिये हुआ भगवान मान
भगवान भक्त विद्वान व्यक्ति
दे हमें सकल ऐश्वर्य-ज्ञान
भगवान यहां जब आयेंगे, हम साथ बैठ मुस्कायेंगे॥
ऐश्वर्य कौन रह जायेंगे, जब नाथ हमें मिल जायेंगे॥
ऐश्वर्य आपका तकता है
पर दूर आपको रखता है
दोनों ही उसको दुर्लभ हों
जो तपता है सो चखता है।
हम एक साध सब पायेंगे, सब साध सभी भग जायेंगे।
ऐश्वर्य कौन रह जायेंगे, जब नाथ हमें मिल जायेंगे॥
संसार आपका इच्छुक है
यह दास आपका भिक्षुक है
अब इसी जन्म में आन मिलो
यह सेवक शरण समुत्सुक है।
ऐश्वर्य कौन फिर भायेंगे, जब स्वामी गोद खिलायेंगे।
ऐश्वर्य कौन रह जायेंगे, जब नाथ हमें मिल जायेंगे॥

गणानां त्वा गणपतिँ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम। अहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ।

४६ यजु० २३।१९

सभी प्रियों में वही परम प्रिय, की उससे प्रेम दुहाई है।
प्रिय जन गण मन के अधिनायक, अब तुमको टेर लगाई है ॥

तुम गुणी गुणों के अधिपति हो
पति गणगण के तुम गणपति हो
सबके प्रिय पालक जन्म प्रदायक
इसलिये सभी के प्रिय पति हो।

तुम सबके पति भी प्यारे भी, अब तुमसे प्रीति बढ़ाई है।
प्रिय जन गण मन के अधिनायक, अब तुमको टेर लगाई है ॥

जितनी निधियां या सम्पति हैं
उनके गणपति ही तो पति हैं
ये पति भी प्यारे निधिपति भी
हम वरें उसी की सङ्गति हैं।

वह बसे बसाये या हमको, अब उससे आश लगाई है :
प्रिय जन गण मन के अधिनायक, अब तुमको टेर लगाई है ॥

हम अहम दूर जब कर देंगे
वे तभी नाथ दर्शन देंगे
अमर अजन्मा जनक जगत के
हमतो प्रतिक्षण जियें मरेंगे।

अमरत्व हमें कुछ अपना दो, पति की तो यही बड़ाई है।
प्रिय जन गण मन के अधिनायक, अब तुमको टेर लगाई हैं ॥

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि । ४७ यजु० १।५

व्रतपते नाथ व्रतनामी, व्रत में हो चित्त चरिष्यामी।
हे नाथ व्रतों के स्वामीं, हम हों व्रत के अनुगामी।।
ब्रह्मचर्य ग्रह वानप्रस्थ व्रत
सन्यास आदि में रहकर रत
मैं करू आचरण जीवन मैं
हे नाथ शक्ति दो हमको सत।
जीवन विकास आयामी, व्रत हमको हों उद्दामी।
हे नाथ व्रतों के स्वामी, हम हों व्रत के अनुगामी।।
जो किया सत्य व्रत धारण है
प्रभु के वल करना पारण है
तव कृपा सिद्ध व्रत मेरा हो
हमको अभीष्ट व्रत तारण हैं।
हो दयालु अन्तारयामी, हम बनें व्रतों के हामी।
है नाथ व्रतों के स्वामी, हम हों व्रत के अनुगामी।।
मैं पृथक देह है पृथक अन्य
हो जाय ज्ञान ये आतम धन्य
धर्मातम सभ्य विद्वान बनू
मिल जाय मुझे अमृत्व पुण्य।
मैं व्रत **कामी** निष्कासी, हो भक्ति मुक्ति परिणामी।
हे नाथ व्रतों के स्वामी, हम हों व्रत के अनुनामी।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम । ४८ यजु० २५।१३

प्रभु की छाया से हट जाये, उस पर मृत्यु सदा मँडराये ।
बह क्यों काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये ॥

यह आत्म नाथ ने दी सबको
दिया ज्ञान भी उसका हमको
जीव प्राण दाता बलदा ने
दे दिया त्रिविध बलभी हमको ।

तन-मन इन्द्रिय का बल पाये, इसका अनुशासन अपनाये ।
वह क्यों काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पाजाये ॥

विद्वान मूर्ख सब जड़ चेतन
बसें उसी के नियम निकेतन
जहाँ जीव उल्लंघन करते
हों दग्ध योनि में उनके तन ।

जो नित्य नियम में ढल जाये, प्रभु साथ बैंठ सुख पाये ।
बह क्यों काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये ॥

हो सत्य पिता के विश्वासी
कर प्रेम भक्ति हों सहवासी
रह सङ्ग परम सुखदायक के
हों मगन मोक्ष के अभिलाषी ।

केवल माया में मड़राये, उससे छाया ही छुट जाये ।
वह क्यो काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये ॥

उपहूताऽइह गावऽउपहूताऽअजावयः। अथोऽअन्नस्य कीलालऽउपहूतो गृहेषु नः। क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवँ शग्मँ शंय्योःशंय्योः॥ ४८ यजु० ३।४३

भौतिक साधन सुख के आयें, मुझमें तेरा प्रेम बढ़ायें।
घर तो वैंभव से भर जायें, मन की शान्ति न हरने पायें॥

गाय अजा पशु सभी हमारे
धन धान्य अन्न सब सुखियारे
रस सुखद वनस्पति औषधि के
भरपूर हमें दो प्यारे प्यारे।

इनसे तन को स्वस्थ बनायें, मन को हम ब्रह्मस्थ बनायें।
घर तो वैंभव से भर जायें, मन की शान्ति न हरने पायें॥

कीलाल गुलगुला मालपुआ
स्वादिष्ट पोष रस सुलभ हुआ
रस शांति स्रोत हो शुष्क नहीं
हो हलुआ नहीं सही सतुआ।

यह ललक लोक सुख परसायें, परलोक मोद मत विसरायें।
घर तो वैंभव से भर जायें, मन की शान्ति न हरने पायें॥

जग प्रजा स्वर्ग हों एक हाथ
परलोक मोक्ष दूसरे हाथ
हो पूर्ण कामना दोनों की
ये यथा योग्य हो कृपा नाथ।

ऐश्वर्य ईश का पा जायें, पर भूल ईश को मत जायें।
घर तो वैंभव से भर जाये, मन की शान्ति न हरने पायें॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । ५० यजु० २५।१८

प्रभु के विना ठिकाना क्या है, कोई और नहीं अंगनाई ।
हमने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ।

प्रभु के ईक्षण की यह माया
उसने ईशन यह दर्शाया
जो नाथ जगत का स्वामी है
उसने ही यह जगत बनाया ।

जगत चराचर संचारक तक, हमने अपनी पैंग बढ़ाई ।
हमने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ॥

प्रभु 'पूषा' पोषण कारी को
करते हर क्षण रखवारो हो
विज्ञान विभव दोनों ही के
पालन करता अधिकारी हो ।

इसी अकेले अधिशाषी से, जग भर ने कुवेरता पाई ।
हमने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ॥

हो हिन्सा रहित स्वस्तिकारी
जग सभी तुम्हारा आभारी
आओ आओ हमें बचाओ
कर दो रक्षा अभी हमारी

अब तो होगा वही सहाई, हमने प्रभु से आश लगाई ।
हमने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ॥

मयीदमिन्द्रऽइन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् । अस्माकँ सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः । ५१ यजु० २।१०

श्रेष्ठ इन्द्रियाँ सुदृढ़ देह, ये आत्म समुन्नत हो जायें ।
हे इन्द्र इंद्रियां मेरी, सम्पन्न श्रेष्ठ हो जायें ॥

हे इन्द्र इंद्रियाँ हो पवित्र
हो शुद्ध शक्ति उसमें सवित्र
विज्ञान आदि धन हो प्रदान
ऐश्वर्य शीघ्र आये सचित्र ।

ज्ञान बली धनवान देव, अनुकूल सभी हो जायें ।
हे इन्द्र इंद्रियाँ मेरी, सम्पन्न श्रेष्ठ हो जायें ॥

प्रभु से जो आश लगाई है
या उससे मांग उठाई है
यह आश ईश अब सत्य करो
इसमें ही आत्म भलाई है ।

प्रभु आश यत्न से सम्भव, मृदु माँग पूर्ण हो जायें ।
हे इन्द्र इंद्रियाँ मेरी, सम्पन्न श्रेष्ठ हो जायें ॥

हो व्यर्थ न मेरा समय नष्ट
हे नाथ करो सब दूर कष्ट
प्रभु मेरी इच्छा पूर्ण करो
हो आत्म देह प्रभु कृपा पुष्ट ।

मुझ पर प्रभु की दया धन्य, प्रिय आज अभी हो जायें ।
हे इन्द्र इंद्रियां मेरीं, सम्पन्न श्रेष्ठ हो जायें ॥

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिंमेधामयाशिषँ स्वाहा । ५२ यजु० ३२।१३

मनमें भर दो उत्साह शाह, कर सकूं सभा निर्वाह राह।
अब करो आह सब स्वाह स्वाह, कमनीय रूप लख वाह वाह ।।

प्रिय विद्यामय हे सभापते
है सभा हमें हो न्याय मते
परमेश प्रभा हो सभा विभा
अध्यक्ष बने प्रभु प्रीति व्रते ।

हर दिवस वर्ष या पक्ष माह, दे सभा शक्ति है यहीं चाह।
अब करो आह सब स्वाह स्वाह, कमनीय रूप तब वाह वाह ।।

परमेश तुम्हारा इन्द्र रूप
कमनीय सेव्य अद्भुत अनूप
हो महाशक्ति आश्चर्य चकित
प्रियतम अनुपम सुन्दर स्वरूप ।

दो सत्य धर्म बल बुद्धि थाह, हो मेधा से सुखमय प्रवाह।
अब करो आह सब स्वाह स्वाह, कमनीय रूप लख वाह वाह ।।

स्वाहा संकेत साधना का
निज मुख हर्ष वाचना का
हे नाथ मनीषा हमको दो
हो साधन ईश अर्चना का।

हो जाय हृदय का शान्त दाह, मिट जाय जगत की भी कराह।
अब करो आह सब स्वाह स्वाह, कमनीय रूप लख वाह वाह ।।

याँ मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया
मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा । ५३
यजु० ३२।१४

पितर हमारे रहे सेवते, हम क्यों बंचित रह जायें ।
बुद्धि मनीषा मेधा प्रज्ञा, क्यों नहीं नाथ हम पायें ॥

की उपासना पितर जनों ने
अपनायी जो देव जनों ने
वह मृदु मेधा विज्ञान मयी
पाई प्रभु से श्रेष्ठ जनौं ने ।

रहे सेवते प्रिय पितर जिसे, वह बुद्धि शुद्ध हम पायें ॥
बुद्धि मनीषा मेधा प्रज्ञा, क्यों नहीं नाथ हम पायें ॥

यथार्थ धारणा जिससे होती
बुद्धि **प्रखर** वह मेधा होती
जो इसे **प्राप्त** कर लेते हैं
उनकी कीर्ति गुंजरित होती ।

पाकर महाजनों की मेधा, सत्य पुरोधा बन जायें ।
बुद्धि मनीषा मेधा प्रज्ञा, क्यों नहीं नाथ हम पायें ।:

मत अधिक समय हो संभावी
देन आज हो अभी प्रभावी
स्वीकार कथन हो स्वाहा का
प्रभु कृपा बनें हम मेधावी ।

प्रभु प्रीति पितर जन पाई जो, वह प्रीति हमें मिल जायें ।
बुद्धि मनीषा मेधा प्रज्ञा, क्यों नहीं नाथ हम पायें ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे
स्वाहा । ५४ यजु० ३२।१५

एक बार दो बार बार बहु, प्रिय प्रभु से यह विनय हमारी ।
सद् बुद्धि ज्ञानमय मेधा के, हे नाथ बनें हम अधिकारी ।।

वरणीय ईश से माँग यही
आनन्द रूप से माँग यही
श्रुति विद्या सम्पन्न बुद्धि दो
विज्ञान अग्नि से माँग यही ।

परमेश आपके गुण विशेष, हमको दो गुण में गति न्यारी ।
सद् बुद्धि ज्ञानमय मेधा के, हे नाथ बनें हम अधिकारी ।।

ईश्वर विश्व प्रजापति पालक
अति वेग वायु वल संचालक
हमको अत्युत्तम मेधा दो
सम्पूर्ण जगत के संधारक

दे धवल धारण बुद्धि वृद्धि, परमेश करो उर उजियारी ।
सद् बुद्धि ज्ञानमय मेधा के, हे नाथ बनें हम अधिकारी ।।

सभी सम्पदा का साधन है
कौन बुद्धि से उत्तम धन है
बुद्धि प्रकाश ईश का पाती
जीवन होता मुक्ति मगन है ।

हम बारम्बार माँगते दो, अपनी पुण्य प्रेरणा प्यारी ।
सद् बुद्धि ज्ञानमय मेधा के, हे नाथ बनें हम अधिकारी ।।

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।
५५ यजु० ३२।१६

ब्रह्म क्षत्र दोनों का हमको, भरा हुआ भण्डार चाहिए।
श्री आये श्रेय मिलाये श्री, हमको वह श्रृङ्गार चाहिए॥
ईश्वर ऐसा राज्य बढ़ाओ
ब्रह्म शक्ति विज्ञान बढ़ाओ
सब अद्भुत आविष्कारों से
उत्तम श्री ऐश्वर्य बढ़ाओ ।
सद्भाव संगठित शूरवीर, शक्ति प्रबल संचार चाहिए।
श्री आये श्रेय मिलाये श्री, हमको वह श्रृङ्गार चाहिए।।
जो दिया ब्रह्म वैभव विहान
घर राज्य हमारा सुख महान
हे क्षत्रिय करो उसकी रक्षा
कर क्षत्र हमें उत्तम प्रदान।
ऐश्वर्य राज्य की रक्षा को, विस्फोटक अङ्गार चाहिए।
श्री आये श्रेय मिलायें श्री, हमको वह श्रृ ङ्गार चाहिए॥
विद्वान दक्ष बलवान वक्ष
नित उपजायें श्री शक्ति अक्ष
ये सर्व हितैषी हो जायें
सब सहवासी सज्जन समक्ष
छोड़ संकलन जोड़ समन्वय, सद् गुण का संसार चाहिए।
श्री आये श्रेय मिलाये श्री, हमको वह श्रृंगार चाहिए॥

इति द्वितीय प्रकाश

गीतस्तुति मंत्र-पदार्थ

ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के जिन मंत्रों को लक्ष्य कर गीतस्तुति के ये गीत गाए गए हैं इनका सम्यक बोध तो महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थ आर्याभिविनय की विस्तृत व्याख्याओं में लब्ध होगा, यहाँ पर पाठकों के सहज सुलभ परिज्ञान हेतु इन मंत्रों के पदार्थ (शब्दार्थ) प्रस्तुत करते हैं।

प्रथम प्रकाश (ऋग्वेद)

१ **शम्** सत्य सुखदायक **नः** हमको **मित्रः** मंगलप्रदेश्वर, सर्वथा सबका निश्चित मित्र **शम्** परम सुखदायक **वरुण** सर्वोत्कृष्ठ स्वीकरणीय वरेश्वर, सबसे उत्तम **शम्** न्याययुक्त सुख **नः** हमारे लिये **भवतु** हो **अर्यमा** पक्षपातरहित धर्मन्यायकारी, यमराज **शम्** परमैश्वर्ययुक्तस्थिर सुख **नः** हमको **इन्द्र** परमेश्वर्यवान इन्द्रेश्वर **बृहस्पति** महाविद्यावाचोधिपति वृहस्पति परमात्मा, सबसे बड़ा सुख का देने वाला **शम्** अनन्त सुख **नः** हमको **विष्णु** सर्वव्यापक **उरुक्रम** अनन्तपराक्रमेश्वर।

२ **अग्निम्** हे वन्द्येश्वर ज्ञानस्वरूप अग्ने आपकी **ईले** मैं स्तुति करता हूं **पुरोहितम्** सर्वहितोपकारक, सब जगत के हितसाधक की **यज्ञस्य** सब मनुष्यों के, ज्ञान यज्ञादि के लिये **देवम्** पूज्यतम, कमनीयतम की **ऋत्विजम** सब ऋतु बसन्त आदि के रचक अर्थात जिस समय जैसा सुख चाहिये उस सुख के सम्पादक की **होतारम** समस्त जगत को सब योग और क्षेम के देने वाले की, प्रलय समय में कारण में सब जगत का होम करने वाले की **रत्नधातमम्** रत्न अर्थात् रमणीय पृथिव्यादिकों धारण, रचना करने वाले की, अपने सेवकों के लिये रत्नधारक की।

३ **अग्निना** हे महादातः! ईश्वराग्ने! आपकी कृपा से **रयिम्** विद्यादि धन तथा सुवर्ण आदि तथा चक्रवर्ती राज्य और विज्ञानरूप धन को **अश्नवत्** प्राप्त होता **पोषम्** मह पुष्टिकर्ता धन को **एव** अवश्य **दिवेदिवे** प्रतिदिन **यशसम्** सत्कीर्ति के बढ़ानेवाले धन को **वीरवत्तमम्** विद्या शौर्य, धैर्य। चातुर्य,बल पराक्रम औरदृढाङ्ग, धर्मात्मा न्याययुक्त अत्यंत वीर पुरुष को

४ **अग्नि:** सब मनुष्यों के स्तुति करने योग्य ईश्वर **पूर्वेभि:** विद्या पढ़े हुए प्राचीन **ऋषिभि:** मन्त्रार्थं देखनेवाले विद्वानों से **ईड्य:** स्तुति के योग्य **नूतनै** वेदार्थ पढ़ने वाले नवीन ब्रह्मचारियों से **उत** और **स:** स्तुति को प्राप्त हुए आप **देवान्** दिव्य गुण अर्थात विद्यादि को **इह** सब संसार के सुख के लिये **आवक्षति** कृपा से प्राप्त करो ।

५ **अग्नि** हे जगदीश,सब जगत में प्रकाशित **होता** जगत की उत्पत्ति प्रलय करने वाले **कविक्रतु:** कवि: हे सर्वदृक् ! सबको देखने वाले, क्रतु: सब जगत के जनक,**सत्य** अविनाशी **चित्रश्रवस्तम:**आश्चर्य श्रवणादि आश्चर्य गुण आश्चर्य शक्ति,आश्चर्य रूपवान और अत्यन्त उत्तम **देव:** सब और हमारा पूज्य दिव्य गुण युक्त **देवेभि:** दिव्य गुणों के सह वर्तमान **आगमत्** हमारे हृदय में आप प्रगट हों ।

६ **यद्** जो **अङ्ग** हे मित्र **दाशुषे** आपको आत्मादि दान करता है उसको **त्वम्** आप **अग्ने** हे जगदीश्वर **भद्रम्** व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख **करिष्यसि** देते हो **तव** आपका **इत्** अवश्य **तत्** यह **सत्यम** सत्य व्रत है **अङ्गिर:** हे प्राण प्रिय !

७ **वायो** हे अनन्तबलपरेश ! **आयाहि** अपनी कृपा से ही हमको प्राप्त हों **दर्शत** हे दर्शनीय **इमे** वे **सोमा:** सोम सोमबल्यादि औषधियों का उत्तम रस श्रेष्ठ पदार्थ **अरंकृता:** अलंकृत अर्थात उत्तम रीति से बनत्ये पदार्थ **तेषाम्** उनको **पाहि** स्वीकार करो सर्वात्मा से पान करो **श्रुधी** सुनकर प्रसन्न हौओ **हवम्** पुकार को ।

८ **पावका** पवित्र स्वरूप और पवित्र करने वाली सत्यभाषणमय मङ्गल कारक वाणी **न:** हमको **सरस्वती** सर्वशास्त्र विज्ञानयुक्त वाणी **वाजेभि:** सर्वोत्कृष्ट अन्नादि के साथ **वाजिनीवती** सर्वोत्कृष्ट क्रिया विज्ञानयुक्तवाणी **यज्ञम्** सर्वशास्त्र बोध और पूजनीयतम आपके विज्ञान की **वष्टु** कामनायुक्त सदैव हो **धिया** परमोत्तम बुद्धि के साथ **वसु:** निधिस्वरूप वाणी ।

९ **पुरूतमम्** अत्यन्तोत्तम और सर्व शत्रु विनाशक परमात्मा को **पुरूणाम्**

बहुविधि जगत के पदार्थोंके **ईशानम्** स्वामी और उत्पादक को **वार्याणां** वर वरणीय परमानन्द मोक्षादि पदार्थों के **इन्द्रम्** परमैश्वर्यवान परमात्मा को **सोमे** उत्पत्ति स्थान संसार **सचा** अत्यन्त प्रेम से **सुते** आपसे उत्पन्न होवे (अनु०अभिप्रगायत) हृदय में गावे।

१० **तम** उन आपका **ईशानाम्** रचनेवाले का **जगतः**चर जगत के **तस्थुषः** अचर जगत के **पतिम्** सर्वाधिस्वामी का **धियं** सर्वविद्यामय, विज्ञानसरूप बुद्धि को प्रकाशित करनेवाले को **जिन्वम्** प्राणनीयस्वरूपका **अवसे** अपनी रक्षा के लिए **हूमहे** आह्वान करते हैं। **वयम्** हम **पूषा** सबके पोषक **नः** हमारे **यथा** जिस प्रकारसे **वेदसाम्** विद्यादि धनों की **असद** हो **वृधे** वृद्धि वा रक्षा के लिए **रक्षिता** रक्षा करने में तत्पर **पायुः** निरन्तर रक्षक पाप निवारक **अदब्धः** निरालस **स्वस्तये** हमारी स्वस्थता के लिये।

११ **अतः** उस सामर्थ्य से **देवाः** हे विद्वानो! **अवंतु** रक्षा करे **नः** हम लोगों की **यतः** जिस सामर्थ्य से **विष्णुः** सर्वत्र व्यापक परमेश्वर ने **विचक्रमे** विस्तृत विद्यायुक्त वेद को बनाया लोकों को रचा है; सब जगत को विविध प्रकार से रचा है **पृथिव्याः**पृथिवी से ले के **सप्त** सप्तविध सात **धामभिः** लोक ऊंचे नीचे स्थानों से संयुक्त, गायत्री आदि सात छन्दों से।

१२ **पाहि** पालन करो **नः** हमारी **अग्ने** हे सर्व शत्रुदाहकाग्ने परमेश्वर **रक्षसः** राक्षस हिंसाशील दुष्ट स्वभाव देहधारियों से **पाहि** रक्षा करो **धूर्तेः** धूर्त मनुष्य से **अराव्णः** कृपण मनुय्य से **पाहि** रक्षा करो **रीषतः** मारने वाले मनुष्य से (उत वा) तथा **जिघांसतः** जो मारने की इच्छा करता है उस मनृष्य से **बृहद्भानो** हे महातेज! **यविष्ठय** हे बलवत्तम!

१३ (त्वम्) आप (अस्य) सब जगत के तथा विशेष हम लोगों के**पारे** पार में तथा भीतर **रजसः** लोक के **व्योमनः** आकाश के **स्वभूत्योजाः** अपने ऐश्वर्य और बल से (अवसे) सभ्यक रक्षण के लिए **धृषत** धर्षण करते हुए **मनः** दुष्टों के मनको **चकृषे** इसके **यथावत** धारण कर रहे हो **भूमिम्** भूमि को **प्रतिमानम्** प्रतिमास परिमाण

कर्ता **ओजस**: अपने सामर्थ्य से **अप**: अन्तरिक्ष लोक और जल के (**स्व**:) सुख बिशेष मध्यस्थ लोक को **परिभू**: सब पर बर्त्तमान **एषि** सबको प्राप्त हो रहे हो **आदिवम्** द्योतनात्मक सूर्यादि लोक के **दिवम्** परमाकाश को ।

१४ **विजानीहि** जानो **आर्यान्** विद्या धर्मादि उत्कृष्ट स्वभावाचरणयुक्त आर्योको **ये** जो **च** और **दस्यवः** नास्तिक,डाकू चोर आदि को **बर्हिष्मते** सर्वोपकारक यज्ञ के विध्वंस करनेवाले को **रन्धयः** मूल सहित नष्ट कर दीजिये **शासद्** यथायोग्य शासन करो (शीघ्र उनपर दण्डनिपातन करो) **अव्रतान्** ब्रह्मचर्य गृहस्थ, बानप्रस्थ संन्यास आदि धर्मानुष्ठान व्रतरहित वेदमार्गोच्छेदक, अनाचारी इनका, **शाकी** परमशक्तियुक्त, शक्ति देनेवाला **भव** हो **यजमानस्य** जीव को **चोदिता** उत्तम कार्यो में प्रेरणा करनेवाला (बिश्वा इत ता) सब उत्तम कर्मो की **ते** तुम्हारी आज्ञानुकूल **सधमादेषु** उत्कृष्ट स्थानों मे **चाकन** कामना करता हूं ।

१५ **न** नहीं **यस्य** जिस परमात्मा का **द्यावापृथिवी** दिव अर्थात सूर्यादि लोक, सर्वोपरि आकाश तथा पृथिवी मध्य निकृष्ट लोक **अनुव्यचः** सबके बीच में अनुस्यूत (परिपूर्ण) **न** नहीं **सिंधवः** अन्तरिक्ष में जो दिव्य जल **रजस;** सब लोक **अन्तम्** अन्त व्याप्ति का परिच्छेद **इयात्ता** परिमाण को आदि अन्त को, पार को **आनशुः** पा सकते हैं **न** नहीं **उत** और **स्ववृष्टिम्** वृष्टि प्रहार से **मदे** मेघ तथा बिजली गर्जन आदि **अस्य** ईश्वर के **युध्यतः** युद्ध करता हुआ **एकः** सहाय रहित **अन्यत्** अपने से भिन्न **चकृषे** उत्पन्न किया है **विश्वम्** सब जगत को **आनुषक्** अनुषक्त अर्थात व्याप्त ।

१६ **ऊर्ध्वः** हे सर्वोपरि विराजमान परब्रह्म ! सबसे उत्कृष्ट, उत्कृष्ट गुण वाला उर्ध्व देश **नः** हमको हमारी **पाहि** रक्षा करो **अंहसः** अविद्यादि महापाप से **केतुना** विज्ञान अर्थात विद्यादान दे के **निपाहि** सदैव अलग रखो नित्य पालन करो **विश्वम्** सकल सन्सार का **अत्रिणम्** जो कोई प्राणी हमसे शत्रुता करता है उसको, काम क्रोध आदि शत्रुओं को **सन्दह**

सम्यक् भस्मीभूत करो, अच्छे प्रकार जलाओ **कृधी** करो **नः** हमको **ऊर्ध्वान** विद्यादि गुणों में सब नरदेहधारियों में अधिक उत्तम **चरथाय** सबसे अधिक आनन्द भोग, सब देशों में अव्याहतगमन (इच्छानुकूल आना जाना) के लिये **जीवसे** आरोग्य, देह, शुद्ध मानस बल और विज्ञान इत्यादि के लिये **विदा** विद्यादि उत्तमोत्तम धन **देवेषु** विद्वानों के बीच में **नः** हमको **दुवः** प्राप्त करो, उत्तम प्रतिष्ठायुक्त सदैव रखो ।

१७ **अदितिः** सदैव विनाश रहित **द्यौः** सदैव स्वप्रकाशस्वरूप **अदिति** अविकृत विकार को न प्राप्त **अन्तरिक्षम्** सबका अधिष्ठाता **अदितिः** अविनश्वर विनाशरहित **माता** सुख देने और मान करनेवाला **सः** सो **पिता** सबका पिता जनक और पालक **सः** सो **पुत्रः** नरकादि दुखों से पवित्र और त्राण, रक्षा करने वाला **विश्वे** सब **देवाः** दिव्य गुणों वाला विश्व का धारण, रचन मारण, पालन आदि कार्य करनेवाला **अदितिः** अविनाशी **पञ्च** पाँच प्राण **जनाः** जगत के जीवन हेतु **अदितिः** ईश्वर के रचे और ईश्वर के नाम **जातम्** प्रादुर्भूत **अदितिः** चेतन ब्रह्म **जनित्वम्** जन्म का हेतु ।

१८ **ऋजुनीती** सरल=शुद्ध,कोमलत्वादि गुण विशिष्ट चक्रवर्ती राजाओं की नीति **नः** हमको **वरुणः** सर्वोत्कृष्ट **मित्रः** सबका मित्र शत्रुता रहित **नयतु** प्राप्त करो **विद्वान्** सर्वोत्कृष्ट विद्वान **अर्यमा** यमराज्य=प्रियाप्रिय को छोड़कर न्याय में वर्तमान **देवैः** विद्वानों वा दिव्य गुणों के साथ वर्त्तमान **सजोषाः** उत्तम प्रीतियुक्त, परमेश्वर में रमण करने और ईश्वर का **सेवन** करने वाले ।

१९ **त्वम्** तुम **सोम** सबका सार निकालनेहारे प्राप्तस्वरूप शान्तात्मा **असि** हो **सत्पतिः** सत्पुरुषों का पालन करने वाले **त्वम्** तुम ही **राजा** सबके राजा **उत** और **वृत्रहा** मेघ के रचक, धारक और मारक **त्वम्** आप ही **भद्रः** भद्रस्वरूप, भद्र करने वाले **असि** हो **क्रतुः** सब जगत के कर्ता ।

२० **त्वम्** तुम **नः** हमारी **सोम** हे सोम राजन ईश्वर ! **विश्वतः** सब प्राणियों से **रक्ष** रक्षा करो **राजन्** हे राजन ईश्वर ! **अघायतः** पापी

और पाप करने की इच्छा करने वालों से **न** कभी नहीं **रिष्येत्** विनष्ट होता **त्वावतः** जिसके आप सगे **सखा** मित्र ।

२१ **तद्** उस **विष्णोः** विष्णु के **परमम्** परम, अत्यन्तोत्कृष्ट **पदम्** पद= पदनीय, जानने योग्य पूर्णानन्द पद को **सदा** यथावत् अच्छे विचार से **पश्यन्ति** देखते हैं **सूरयः** धर्मात्मा,जितेन्द्रिय,सब केहितकारक विद्वान लोग **दिवि** आकाश में **इव** जैसे **चक्षुः** नेत्र की व्याप्ति वा सूर्य का प्रकाश परब्रह्म **आततम्** सब ओर से व्याप्त है सब जगहमें एक रस भर रहा है ।

२२ **स्थिराः** स्थिर **वः** तुम्हारे लिये **सन्तु** हों **आयुधा** शतघ्नी=तोप' भुशुण्डी=बन्दूक, धनुष बाण, करवाल= तलवार, शक्ति बरछी आदि शस्त्र **पराणुदे** शत्रुओं के पराजय के लिये **वीलू** दृढ़ **उत** और **प्रतिष्कभे** शत्रुओं के वेग को थामने के लिये **युष्माकम्** तुम्हारी **अस्तु** हो **तविषी** बलरूप उत्तम सेना **पनीयसी** प्रशंसित **मा** नहीं **मर्त्यस्य** मनुष्य का **मायिनः** अन्यायकारी दुष्ट, पापी ईश्वरभक्तिरहित का ।

२३ **विष्णोः** व्यापक ईश्वर के **कर्माणि** जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय आदि कर्मों को **पश्यत्** तुम देखो **यतः** जिससे **व्रतानि** ब्रह्मचर्यादिव्रत तथा सत्यभाषणादि व्रत और ईश्वर के नियमों के अनुष्ठान करने को **पस्पशे** समर्थ हुए हैं **इन्द्रस्य** इन्द्रियों के साथ वर्तमान कर्मों के कर्त्ता भोक्ता जीव का **युज्यः** योग्य **सखा** मित्र ।

२४ **पराणुदस्व** परास्त कर दे **मघवन्** हे परमैश्वर्यवान इन्द्र परमात्मन **अमित्रान्** सब शत्रुओं को **सुवेदाः** सुलभ **नः** हमारे लिए **वसू** सब पृथ्वी के धन **कृधि** कर **अस्माकम्** हमारे **बोधि** हमको अपने ही जानो **अविता** रक्षक **महाधने** युद्ध में **भव** आप ही हो **वृधः** वर्द्धक **सखीनाम्** हमारे मित्र और सेनादि के।

२५ **शम्** सुखकारक **नः** हमारे लिये **भगः** ईश्वर और उसका दिया ऐश्वर्य **शमु** सुखकारक **नः** हमारी **शंसः** प्रशंसा **अस्तु** सदैव हो **शम्** आनन्द दायक **नः** हमारेलिये **पुरन्धिः** संसार को धारण करनेवाला ईश्वर,वायु, प्राण **शमु** आनन्ददायक **सन्तु** हों **रायः** सब धन **शम्** शान्तियुक्त **नः**

हमारे लिए **सत्यस्य** सत्य यथार्थ धर्म की **सुयमस्य** सुसंयम और जितेन्द्रि-यादिलक्षणयुक्त की **शंसः** प्रशंसा=पुण्यस्तुति **शम्** कल्याणकारक **नः** हमारे लिए **अर्यमा** न्यायकारी **पुरुजातः** अनन्तसामर्थ्ययुक्त **अस्तु** होओ।

२६ **त्वम्** तू ही **असि** है **प्रशस्यः** सर्वत्र स्तुति करने योग्य **विदथेषु** यज्ञ और युद्धों में **सहन्त्य** शत्रुओं के समूहों के घातक **अग्ने** हे सर्वज्ञ! **रथी** रथी, शत्रुओं के योद्धाओं को जीतनेवाले **अश्वराणाम्** यज्ञ और यद्धोंमें।

२७ **तत्** वह **नः** हमारा **इन्द्रः** सूर्य **वरुणः** चन्द्रमा **शिवः** वायु **अग्निः** अग्नि **आपः** जल **औषधीः** वृक्षादि, **वनिनः** वनस्थ सब पदार्थ **जुषन्त** सेवन करे **मरुताम्** प्राणादि पवनों के **उपस्थे** गोद में **शर्मन्** सुखयुक्त **स्याम** हम सदा रहे **यूयम्** आप **पात** रक्षा करो **स्वस्तिभिः** सब प्रकार के रक्षणों से **सदा** सदा **नः** हमारी।

२८ **ऋषि** सर्वज्ञ **हि** निश्चय से **पूर्वजाः** सबके पूर्वजों के **असि** हो **एकः** अद्वितीय **ईशानः** ईशनकर्ता, सबसे बड़े, प्रलयोत्तर काल में रहने वाले **ओजसा** अनन्त पराक्रम से युक्त **इन्द्र** हे इन्द्र महाराजाधिराज **चोष्कूयसे** दाता हो, अपने सेवकों पर कृपा कर रहे हो **वसु** सब धन के कृपा का प्रवाह।

२९ **न** मत **इह** इस संसार में **भद्रम्** सुख **रक्षस्विने** पापी हिंसक दुष्टात्मा को **न** मत **अवर्यै** धर्मसे विपरीत चलनेवाले को **न** नहीं **उपयै** अधर्मी के समीप रहनेवाले और उसके सहायक को भी **उत** तथा **गवे** शमदमनादि-युक्त इन्द्रियों के लिए **च** और **भद्रम्** सुख कल्याण परमसुख **धेनवे** दुग्ध देने वाली गौ आदि के लिए **वीराय** वीरपुत्र के लिए **च** और शूरवीर भृत्य के लिए **श्रवस्यते** विद्या विज्ञान अन्नाद्यैश्वर्ययुक्त हमारे देशके राजा और धनाढ्य जन के लिए **अनेहसः** निष्पाप निरुपद्रव स्थिर दृढ़ सुख **वः** पूर्वोक्त धर्मात्माओं की **ऊतयः** रक्षा करनेहारे हैं।

३० **वसुः** सबको अपने में बसानेवाले और सब में आप बसनेवाले **वसुपतिः** पृथिवी आदि बास-हेतु-भूतों के पति **हि** निश्चय से **कम्** सबके सुखकारक और सुखस्वरूप **असि** हो **अग्ने** हे विज्ञानानन्द स्वप्रकाशस्वरूप **विभावसुः**

सत्यस्वप्रकाशैश्वर्यधनमय **स्याम** हम लोग स्थिर हों **ते** आपकी **सुमतौ** अत्यन्तोत्कृष्ट ज्ञान में **अपि** और परस्पर प्रीति में ।

३१ **वैश्वानरस्य** वैश्वानर परमेश्वरकी **सुमतौ** सुशोभन—उत्कृष्ट ज्ञान में **स्याम** हम निश्चितसुखस्वरूप और विज्ञान वाले हों **राजा** हमारा तथा सब जगत का राजा, स्वामी **हि** और ही निश्चित **कम्** सबका सुखदाता **भुवनानाम्** सब भुवनों का **अभिश्री** सबका निधि शोभाकारक **इतः** इसी ईश्वर के सामर्थ्य से **जातः** उत्पन्न हुआ **विश्वम्** संसार **इदम्** यह **विचष्टे** उसने रचा है **वैश्वानरः** संसारस्थ सब नरों का नेता, नायक **यतते** प्रकाशक है अर्थात सब प्रकाशक पदार्थ उसके रचे हैं **सूर्येण** सूर्य के साथ ।

३२ **न** कभीनहीं **यस्य** जिस परमात्मा के **शवसः** बलादि सामर्थ्य का **देवाः** इंद्रियाँ **देवताः** अविद्वान सूर्यादि बुद्धि,आदि **न** कभी नहीं **मर्ताः** साधारण मनुष्य **आपः**प्राण,वायु समुद्र इत्यादि **च** और **न** कभीनहीं **अन्तम्** अन्त, पार **आपुः** पा सकते **सः** सो **प्ररिक्वा** प्रकृष्टता से इनमें व्यापक हो के अतिरिक्त,इनसे विलक्षण भिन्न ही परिपूर्ण हो रहा है **त्वक्षसा** शत्रुओं के बल के छेदक बल से **क्ष्मः** पृथिवी **दिवः** स्वर्ग का **च** और **मरुत्वान्** अत्यन्त बलवान इंद्र परमात्मा **नः** हमारी **भवतु** तत्पर हो **इंद्र** परमात्मा **ऊती** रक्षा के लिए ।

३३ **जातवेदसे** उत्पन्नमात्र सब जगत को जाननेवाले के लिए सर्वत्र प्राप्तके लिए, सबमें विद्यमान के लिए अर्पित करते हैं **सोमम्** जितने सोम, प्रिय गुण विशिष्ट आदि पदार्थों को **अरातीयतः** धर्मात्माओं के विरोधी दुष्ट शत्रु के **निदहाति** नित्य दहन करो **वेदः** धन ऐश्वर्य आदि का **सः** आप **नः** हमको **पर्षदति** पार करके नित्य सुख को प्राप्त करो **दुर्गाणि** दुःसह दुखोंसे **विश्वा** सम्पूर्ण **नावा** नौका से **इव** जैसे **सिंधुम्** अति कठिन नदी वा समुद्र को **दुरताति** सब आप जनित अत्यन्त पीड़ाओं से पृथक कर **अग्निः** परम सुख ।

३४ **सः** सो आप **वज्रभृत्** सर्वशिष्टहितकारक दुष्टविनाशक न्याय को धारण

करने वाले **दस्युहा** दुष्ट पापी लोगों का हनन करने वाले **भीमः** आपकी न्याय आज्ञा को छोड़ने वालों पर भय देने वाले **उग्रः** भयङ्कर **सहस्रचेताः** सहस्रों विज्ञानादि गुण वालें **शतनीथः** सैकड़ों असंख्यात पदार्थों की प्राप्ति कराने वालें **ऋभ्वा** अत्यन्त विज्ञानादि प्रकाश वाले सबके प्रकाशक, महान महाबल, वाले **चम्रीष**: चमू, (सेना) में वश को प्राप्त **न** नहीं **शवसा** स्वबल से **पाँचजन्यः** पांच प्राणों के जनक **मरुत्वान्** सब प्रकार वायुओं के आधार तथा चालक **नः** हमारी **भवतु** प्रवृत्त हों **इंद्र** इंद्र **ऊती** रक्षा के लिए।

३५ **स**: सो आप **इमम्** इस **न**: हमारे **कामम्** काम को **आपृण** परिपूर्ण करो **गोभि**: गाय,उत्तम इंद्रिय, श्रेष्ठ पशुओं से **अश्वैः** सर्वोत्तम अश्वविद्या और चक्रवर्ती राज्यैश्वर्य से **शतक्रतो** हे अनन्त क्रियेश्वर ! **स्तवाम** हम स्तवन (स्तुति) करें **त्वा** आपका **स्वाध्य**: सुबुद्धियुक्त हो के ।

३६ **सोम** हे सर्वजगदुत्पादकेश्वर **गीर्भिः**स्तुति समूह से **त्वा** आपको **वयम्** हमलोग **वर्द्धयाम**:सर्वोपरि विराजमान मानतेहैं **वचोविद**: शास्त्र वित्‌हम लोग **सुमृलीक**: सुन्दर सुख देनेवाले **न**: हमको **आविश** आपआवेश करो।

३७ **सोम** हे सोम्य सौख्यप्रदेश्वर **रारन्धि** रमण करो **न**: हमारे **हृदि** हृदय में **गाव**: सूर्य की किरण,विद्वानों का मन, और गाय पशु **न** जैसे **यवसेषु** अपने२ विषय और घास आदि में **आ** यथावत् **मर्य** मनुष्य **इव** जैसे **स्वे** अपने **ओक्ये** घर में ।

३८ **गयस्फान**: प्रजा, धन, जनपद और सुराज्य का बढ़ानेवाला **अमीवहा** शरीर इन्द्रियजन्य और मानस रोगोंका हनन विनाश करने वाला**वसुवित्** सब पृथिवी आदि वसुओं का जाननेवाला, सर्वज्ञ विद्यादि धन कादाता **पुष्टिवर्द्धन**: शरीर, इंद्रिय, मन और आत्मा की पुष्टि का बढ़ाने वाला **सुमित्रः** सबका परम मित्र **सोम** हे सर्वजगदुत्पादक **नः** हमारे **भव** हो ।

३९ **त्वम्** तू **हि** ही **विश्वतोमुख** हे सर्वतोमुख अग्ने ! **विश्वत**: सब जगत सब ठिकानों में **परिभूः** व्याप्त **असि** हो **न**: हमारा **अप शोशुचत्** सब नष्ट हो जाय **अघम्** पाप ।

४० **तम्** उस अग्नि की **ईलत** स्तुति करो **प्रथमम्** सब कार्यों से पहले वर्तमान और सबका मुख्य कारण **यज्ञसाधम्** सब संसार और विज्ञानादि यज्ञ का साधक, सबका जनक **विशः** हे मनुष्यो ! **आरीः** प्राप्त होओ **आहुतम्** जिसको अपने दीनता से कहते हैं जिसको अपने पुकारते **ऋञ्जसानम्** जिसको विज्ञान आदि विद्वान लोग सिद्ध करते हैं और जानते हैं **ऊर्जः** पृथिवी आदि जगत् रूप अन्न का **पुत्रम्** पालन करनेवाले को **भरतम्** जगत के पोषण और धारण करनेवाले को **सृप्रदानुम्** सब जगत् को चलने की शक्ति देने वाले और ज्ञान के दाता को **देवाः** विद्वान लोग **अग्निम्** अग्नि **धारयन्** कहते हैं और धारण करते हैं **द्रविणोदाम्** द्रविण अर्थात् निर्वाह के सब अन्न जल आदि और विद्यादि पदार्थ के देने वाले को।

४१ **तम्** उसी इन्द परमात्मा की प्रार्थनादि से **ऊतयः** अनन्त रक्षण तथा बलादिगुण **शूरसातौ** युद्ध में **रणयन्** रमण और शूरवीरों के गुण परस्पर प्रीति आदि प्राप्त करावेगा **तम्** उसी को **क्षेमस्य** क्षेम कुशलता का **क्षितयः** हे शूरवीर मनुष्यो ! **त्राम्** रक्षक **कृण्वत** करो **सः** सो **विश्वस्य** सब जगत पर **करुणस्य** करुणामय, करुणा करने वाला **ईशः** परमात्मा **एकः** एक ही है **मरुत्वान** प्राण, वायु बल सेनायुक्त **नः** हम लोगों पर **भवतु** हो **इन्द्रः** परमात्मा **ऊती** रक्षक।

४२ **सः** सो ही **पूर्वया** आदिसनातन **निविदा** सत्यता आदि गुणयुक्त परमात्मा था **कव्यता** अन्य कोई कार्य नहीं था **आयोः** सृष्टि के आदि में **इमाः** इस **प्रजाः** प्रजा की **अजनयत्** उत्पत्ति की **मनूनाम्** ज्ञानस्वरूप **विवस्वता** स्वप्रकाशस्वरूप एक ईश्वर ने **चक्षसा** ईक्षणता=विचार **द्याम्** सब दृश्यमान तारे आदि लोक लौकान्तर **अपः** निकृष्ठ दुःखविशेष नरक **च** और **देवाः** विद्वान लोग **अग्निम्** अग्नि **धारयन्** जानते हैं **द्रविणोदाम्** विज्ञानादि धन देने वाले को।

४३ **वयम्** हम लोग **जयेम** दुष्ट जन को जीते **त्वया** आपके साथ वर्त्तमान **युजा** आपकी सहायता से **आवृतम्** हमारे बल से घेरा हुआ **अस्माकम्**

हमारे **अंशम्** अंश, बल, सेना को **उदवा** उत्तम रीति से रक्षण करो **भरे भरे** युद्ध युद्धमें **अस्मभ्यम्** हमारे लिये **इन्द्र मघवन्** हे महाधनेश्वर **वरिवः** चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य धन को **सुगम** सुख से प्राप्त **कृधि** कर **शत्रूणाम्** हमारे शत्रुओं के **मघवन्** महाधनेश्वर **वृष्ण्या** वीर्य पराक्रमादि को **प्र–रुज** प्रभग्न रुग्ण करके नष्ट करदे।

४४ **यः** जो **विश्वस्य** सबका **जगतः** जगत स्थावर जड़ अप्राणी का **प्राणतः** चेतना वालें जगत का **पतिः** अधिष्ठाता और पालक **यः** जो **ब्रह्मणे** ब्रह्म अर्थात् विद्वान के लिए ही **प्रथम** : प्रथम सदा से है **गाः** पृथिवी का **अविदत्** लाभ और उसका (पृथिवी का) राज्य है **इंद्र** परमैश्वर्यवान परमात्मा **यः** जो **दस्यून** डाकुओं को **अधरान्** नीचे **अवातिरत्** गिराता है। **मरुत्वन्तम्** उस परमापन्द बलवाले इंद्र परमात्मा को **सख्याय** सखा होने के लिए **हवामहे** अत्यन्त प्रार्थना से गद्‌गद् हो के बुलावें।

४५ **मृल** सुखी कर **नः** हमको **रुद्र** हे दुष्टों को रुलाने वाले रुद्रेश्वर **उत** तथा **नः** हमको **मयस्कृधि** मय अर्थात अत्यन्त सुख का सम्पादन कर **क्षयद्वीराय** शत्रुओंके वीरों का क्षय करनेवाले **नमसा** अत्यन्त नमस्कार आदि से **विधेम** परिचर्या करें **ते** आपकी **यत्** हमारी सब प्रजा को **शम्** सुखी कर **योः** प्रजा के **च** रोगों का भी **मनुः** मान्यकारक **आयेजे** स्वप्रजा को संगत और अनेकविध लाड़न करता है **पिता** पिता **तद्** वीरों के चक्रवर्ती राज्य को **अश्याम** प्राप्त हों **तव** आपकी **रुद्र** हे रुद्र भगवन **प्रणीतिषु** उत्तम न्याययुक्त नीतियों में।

४६ **देवः** ईश्वर, सूर्य **न** समान **यः** जो **पृथिवीम्** पृथिव्यादि जगत को **विश्वधाया** विश्वधारक शक्ति का **उपक्षेति** निवास देने और धारण करनेवाला है **हितमित्रः** प्रियमित्रवान **न** समान **राजा** राजा **पुरःसदः** ईश्वराभिमुख लोग **शर्मसदः** सुख में सदा स्थिर लोग **न** जैसे **वीराः** पुत्र लोग **अनवद्या** अत्यन्तोत्तम गुणयुक्त **पतिजुष्टा** पति की सेवा में तत्पर पतिव्रता **इव** जैसे **नारी** नारी स्त्री।

४७ **सा** वह **मा** हमको, हमारी, हमारा **सत्योक्तिः** सत्य आज्ञा **परिपातु**

सर्वथा पालन और सदा पृथक रखे, यथावत् रक्षा करें **विश्वतः** सब संसार से और सब दुष्ट कामों से **द्यावा** दिव्य सुख से **च** और **यत्र** जिस दिव्य सृष्टि में **ततनन्** आपने ही विस्तारे हैं **अहानि** सूर्यादिकों को दिवस आदि के होने के निमित्त **च** भी **विश्वम्** सब जगत् **अन्यत्** आप से अन्यभिन्न **निविशते** आपके सामर्थ्य से प्रलय में प्रवेश करता है कार्य सब कारणात्मक होता है **यद्** जिस समय यह जगत् **एजति** चलित होके उत्पन्न होता हैं **विश्वाहापः** विश्व के हन्ताओं से रक्षा करने वाला **विश्वाहा** जो जो विश्व का हन्ता (दुख देने वाला) **उदेति** आप सब जगत में उदित (प्रकाशमान) हो रहे हो **सूर्यः** सूर्यवत हमारे हृदय में प्रकाशित होओ।

४८ **देवः** देव, परम विद्वान तथा परमानन्द को देने वाले **देवानाम्** देवों को, परम विद्वानों को **असि** हो **मित्रः** मित्र सर्वसुखकारक सबके सखा **अद्भुतः** अत्यन्त आश्चर्यरूप **वसुः** वास करानेवाले **वसूनाम्** पृथिवी आदि वसुओ के भी **असि** हो **चारुः** अत्यन्त शोभायमान और शोभा के देनेवाले **अध्वरे** ज्ञानादि यज्ञ में **शर्मन्** आनन्दस्वरूप **स्याम** हम लोग स्थिर हों **तव** आपके **सप्रथस्तमे** अति विस्तीर्ण में **अग्ने** हे परमेश्वर ! परमात्मन **सख्ये** आनन्दस्वरूप सखाओं के कर्म में **मा** कभी न **रिषाम** परस्पर अप्रीतियुक्त हों **वयम्** हम लोग **तव** आपके अनुग्रह से।

४९ **मा** मत **नः** हमारा हमको **वधीः** बधकर, अलग गिराओ **इंद्र** हे परमैश्वर्यीयुक्तेश्वर **मा** कभी मत **परा** अलग **दाः** हो **मा** मत **नः** हमारे **प्रिया** प्रिय **भोजनानि** भोगों को **प्रमोषीः** चोर और चोरवाओ **आण्डा** गर्भों का **मा** मत **नः** हमारे **मघवन्** हे सर्वशक्तिमन ! **शक्र** समर्थ पुत्रों का **निर्भेत्** विदारण कर **मा** मत **नः** हमारे हमसें **पात्रा** भोजनार्थ सुवर्णादि पात्रौ कौ **भेत्** अलग कर, नष्ट करौ **सहजानुषाणि** सहज अनुषक्त स्वभाव सें अनुकुल मित्र हैं उनकौ।

५० **मा** मत **नः** हमारे **महान्तम्** ज्ञानवृद्ध वयौवृद्ध (पिता) कौ **उत** ओर **मा** मत **नः** हमारे **अर्भकम्** छोटे बालक को **मा** मत **नः** हमारे

उक्षन्तम् वीर्यसेचनसमर्थ जवान को **उत** तथा **मा** मत **नः** हमारे **उक्षितम्** जो गर्भ में वीर्य सेचन किया है उसको **मा** मत **नः** हमारे **वधीः** नष्ट करो **पितरम्** पिता को **मा** मत **उत** और **मातरम्** माता को **मा** मत **नः** हमारे **प्रियाः** मित्र **तन्वः** तनुओं=शरीरों को **रुद्र** हे दुष्ट नाशकेश्वर ! **रीरषः** हिंसन करो।

५१ **मा** मत **नः** हमारे **तोके** कनिष्ट पुत्र में **तनये** मध्यम और ज्येष्ठ पुत्रों में **मा** मत **नः** हमारी **आयौ** उमर में **मा** मत **नः** हमारी **गोषु** गाय आदि पशुओं में **मा** कभी मत **नः** हमारी **अश्वेषु** घोड़ा आदि उत्तम यानों में **रीरिषः** रोषयुक्त होके प्रवृत हो **वीरान्** सेना के शूरों में **मा** मत **नः** हमारे **रुद्र** हे भगवन रुद्र परमात्मन ! **भामितः** क्रोधित **वधीः** नष्ट करो **हविष्मन्तः** यज्ञ करनेवाले **सदम्** सदा **इत्** एव **त्वा** आपको **हवामहे** आह्वान करते हैं।

५२ **उद्गाता** यज्ञ में सामगान करनेवाले महापण्डित **इव** जैसे **शकुने** हे सर्वशक्तिमन्नीश्वर ! **साम** सामगान को **गायसि** गाते ही हो **ब्रह्मपुत्र** वेदों का वेत्ता **इव** जैसे **सवनेषु** विज्ञान सब पदार्थो की **शंससि** प्रशंसा करता है **वृषा** उत्तम गुण और उत्तम पदार्थो की वृष्टि करनेवाले **इव** जैसे **वाजी** सर्व शक्ति का सेवन और अन्नादि पदार्थो के देने वाले/महा बलवान और वेगवान **शिशुमतीः** उत्तम शिशु=सन्तानादि को **अपीत्य** प्राप्त हो के **सर्वतः** सब ठिकानों से **नः** हमारे लिए **शकुने** हे सर्वसामर्थ्य वान ईश्वर ! **भद्रम्** कल्याण को **आवद** अच्छे प्रकार कहो **विश्वतः** सब जगत के लिए **नः** हमारे **शकुने** हे सबको सुख देने वाले ईश्वर! **पुण्यम्** धर्मात्मा के कर्म करने को **आवद** उपदेश कर।

५३ **आवदन्** निरन्तर उपदेश करते हुए **त्वम्** आप **शकुने** हे जगदीश हे अन्तर्यामिन **भद्रम्** मोक्ष सुख का **आवद** निरन्तर उपदेश कीजिये **तूष्णीम्** मौन से ही **आसीनः** हमारे हृदयमें सदा स्थिर होकर **सुमतिम्** सर्वोत्तम ज्ञान **चिकिद्ध** अपने रहने के लिए घर ही बनाओ **नः** हमको

यद् जो **उत्पतन्** उत्तम व्यवहार में पहुंचाये हुए **वदसि** उपदेश हैं **कर्करि**: कर्तव्य कर्म धर्म को ही अपने पुरुषार्थ से करो **यथा** जिसप्रकार **बृहद्** सबसे बड़े परब्रह्मकी **वदेम** स्तुति उपदेश प्रार्थना उपासना आदि सर्वदा करें सुनें **विदथे** विज्ञानादि यज्ञोंमें **सुवीरा**: अत्यँत शूरवीर होके ।

द्वितीय प्रकाश

१ **सह** परस्पर **नौ** आप और हम लोग **भवतु** रक्षक हों **सह** परस्पर **नौ** आप और हम लोग **भुनक्तु** परमानन्द का भोग करें **सह** परस्पर **वीर्यम्** परम वीर्य जो सत्यविद्या उसको **करवावहै** आपकी सहायता से परम पुरुषार्थ करके प्राप्त हों **तेजस्वि** परम विद्यायुक्त तथा ससार में सबसे अधिक प्रकाशित **नौ** हम लोगों का **अधीतम्** पठन-पाठन **अस्तु** हो **मा विद्विषावहै** हम लोगों में परस्पर विद्वेष अर्थात् अप्रीति न रहे ।

ओ३म हे भगवन कृपासागर **शान्ति** आध्यात्मिक सन्ताप की शान्ति कीजिये **शान्ति** आधिभौतिक सन्ताप की शीघ्र निवृति कीजिए **शान्ति**: आधिदैविक सन्ताप की निवृति कीजिए ।

२ **सः** वह परमात्मा **पर्यगात्** आकाश के समान सब जगह में परिपूर्ण= व्यापक है **शुक्रम्** सब जगत का करनेवाला **अकायम्** वह कभी अवतार शरीर धारण नहीं करता **अव्रणम्** अखण्डैकरस अच्छेद्य अभेद्य निष्कंप अचल अंशांशिभाव से रहित **अस्नाविरम्** नाड़ी आदि के प्रतिबंध निरोध एवं आवरण रहित **शुद्धम्** निर्मल **अपापविद्धम्** न्यायकारी **कविः** त्रैकालज्ञ=सर्ववित्, महाविद्वान **मनीषी** सब जीवों के मन=विज्ञान का साक्षी, सबके मन का दमन करने वाला **परिभूः** सब दिशा और सब जगह में परिपूर्ण, सबके ऊपर विराजमान **स्वयम्भूः** जिसका आदिकारण कोई नहीं किंतु वही सबका आदिकारण **याथातथ्यतः** यथावत् **अर्थात्** सत्य विद्या जो जो वेद का **व्यदधात्** सब मनृष्यों से परम हितार्थ उपदेश किया है **शाश्वतीभ्य**; सब **समाभ्यः** प्रजा को ।

३ **दृते** हे अनन्तबल महावीर दुष्ट स्वभावनाशक ईश्वर **दृँह** विज्ञानादि दान से अत्यन्त बढ़ा **मा** मुझको **मित्रस्य** मित्र को **चक्षुषा** दृष्टि से **सर्वाणि** सब **भूतानि** भूत=प्राणि मात्र **समीक्षन्ताम्** देखे **मित्रस्य** मित्रकी **अहम्** मैं भी निर्वैर होके **चक्षुषा** दृष्टिसे **सर्वाणि** सब **भूतानि** चराचर जगत को **समीक्षे** अपने प्राणवत् प्रिय जानूं **मित्रस्य चक्षुषा** अत्यन्त प्रेमसे **समीक्षामहे** पक्षपात छोड़के सब जीव देसधारी मात्र परस्पर बर्ताव करें।

४ **तद्** वह **एव** ही **अग्निः** सब जगत का कारण एक परमेश्वर, सर्वोत्तम, ज्ञानस्वरूप जानने योग्य,प्रापणीयस्वरूप और पूज्यतम **तद्** वह **आदित्य** अविनाशी स्वप्रकाशस्वरूप **तद्** वह **वायुः** सब जगत् का धारण करने वाला, अनन्त बलवान प्राणों से भी प्रियस्वरूप **तद्** वह **उ** ही **चन्द्रमाः** आनन्दस्वरूप और स्वयँसेवकों को आनन्द देने वाला **तद्** वह **एष** ही **शुक्रम्** चेतनस्वरूप ब्रह्म जगत का कर्ता **तद्** सो **ब्रह्म** अनन्त, चेतन, सबसे बड़ा **ताः** वह **आपः** सर्वज्ञ चेतन, सर्वत्र व्याप्त **सः** सो ही **प्रजापतिः** सब जगत का पति=स्वामी और पालन करने वाला।

५ **ऋचम्** ऋग्वेदादि ज्ञानयुक्त हो के **वाचम्** उसका वक्ता **प्रपद्ये** होऊं **मनः** सत्यार्थ मनन युक्त मन को **यजुः** यजुर्वेदाभिप्रायार्थ सहित **प्रपद्ये** प्राप्प होऊं **साम** सामवेदार्थ निश्चय निदिध्यासन सहित **प्राणम्** प्राणको **प्रपद्ये** सदैव प्राप्त होऊं (**चक्षुः** नेत्रबल को तथा **श्रोत्रम्** कर्ण बल को **प्रपद्ये** प्राप्त होऊं) **वागोजः** वाग्बल वक्तृत्व बल मनोविज्ञान बल **सहौजः** शरीर बल नैरोग्य दृढ़त्वादिगुणयुक्त को **मयि** मेरे शरीर में **प्राणापानौ** प्राण और अपान को।

६ **सः** वह परमेश्वर **नः** हमारा **बन्धुः** दुखनाशक और सहायक **जनिता** सब जगत तथा हम लोगों का भी पालन करनेवाला पिता **सः** वह **विधाता** कार्यों को सिद्धि करनेवाला एक परमात्मा **धामानि** अनेक लोक लोकान्तरों को **वेद** यथार्थ जानता है **भुवनानि** लोकान्तरों को **विश्वा** सब **यत्र** जिससे **देवाः** विद्वान लोग **अमृतम्** मोक्ष पद को **आनशानाः**

प्राप्त हो के **तृतीये** तृतीय परब्रह्म में **धामन्** आधारस्वरूप परमात्मा में **अध्यैरयन्त** धर्मात्मा विद्वान लोग स्वच्छन्द=स्वेच्छा से वर्तते हैं।

७ **यतः + यतः** जिस जिस देश से **समीहसे** सम्यक् चेष्टा करते हो **ततः** उस उस देश से **नः** हमको **अभयम्** भयरहित **कुरु** करो **शम्** सुख **नः** हमको **कुरु** करो **प्रजाभ्यः** प्रजा से **अभयम्** भयरहित **नः** हमको **पशुभ्यः** पशुओं से।

८ **वेद** जानता हूँ **अहम्** मैं **एतम्** उस को **पुरुषम्** सहस्रशीर्षादि विशेषणोक्त, सर्वत्र परिपूर्ण पुरुष को **महान्तम्** बड़ों से भी बड़ों को **आदित्यवर्णम्** आदित्यादि के रचक प्रकाशक, सदा प्रकाशस्वरूप को **तमसः** अन्धकार अविद्यादि दोष से **परस्तात्** रहित **तम्** उसको **एव** ही **विदित्वा** जानके **मृत्युम्** मृत्यु को **अत्येति** जीव उल्लंघन कर सकता है **न** नहीं **अन्य** कोई/बिना **पन्थाः** मुक्ति का मार्ग **विद्यते** है **अयनाय** परमेश्वर की भक्ति और उसके ज्ञान के।

९ **तेजः** हे स्वप्रकाश अनन्त तेज! आप अविद्या अन्धकार से रहित **असि** हो **तेजः** वही तेज **मयि** मुझमें **धेहि** धारण करो **वीर्यम्** हे अनन्तवीर्य परमात्मन! आप वीर्यस्वरूप **असि** हो **वीर्यम्** सर्वोत्तम बल **मयि** मुझमें भी **धेहि** स्थिर रखो (**बलम्** हे अनन्तबल परमात्मन! आप बलस्वरूप **असि** हो **बलम्** उत्तम बल **मयि** मुझमें भी **धेहि** धारण करो) **ओजः** हे अनन्त पराक्रम आप पराक्रमस्वरूप **असि** हो **ओजः** उस पराक्रम को **मयि** मुझमें भी **धेहि** सदैव धारण करो **मन्युः** हे दुष्टों पर क्रोध करनेवाले आप मन्यु **असि** हो **मन्युम्** दुष्टों पर क्रोध को **मयि** मुझमें भी **धेहि** धारण कराओ **सहः** हे अनन्त सहनस्वरूप आप अनन्त सहनशक्ति वाले **असि** हो **सहः** सहन सामर्थ्य को **मयि** मुझमें भी **धेहि** धारण करो।

१० **परीत्य** व्याप्त हो के **भूतानि** सब भूत, आकाश और प्रकृति से ले के पृथिवी पर्यन्त सब संसार में **परीत्य** व्याप्त हो के **लोकान्** सब लोक **परीत्य** एक कण भी उसके बिना अपर्याप्त खाली नहीं **सर्वाः** सब

प्रदिशः ऐशान्यादि उपदिशा **दिशः** सब पूर्वादिदिशा **च** और **उपस्थाय** यथावत जानकर उपस्थित, निकट प्राप्त **प्रथमजाम्** मुख्य प्राणी **ऋतस्य** यथार्थ सत्यस्वरूप परमात्मा को **आत्मना** अपने आत्मा से, अत्यन्त सत्याचरण, विद्या श्रद्धा भक्ति से **आत्मानम्** परमानन्दस्वरूप परमात्मा में **अभिसंविवेश** प्रवेश करके सब दुखों से छूट उसी परमानन्द में रहता **है**।

११ **भगप्रणेतः** ऐश्वर्य के प्रेरक **भग** हे भगवन परमैश्वर्यवन ! **सत्यराधः** सत्य एश्वर्य की सिद्धि करने वाले तथा मोक्ष=सत्य ऐश्वर्य के देने वाले हो **भग** हे सत्य भग ! **इमाम्** इनको **धियम्** सर्वोत्तम बुद्धि/सत्य बुद्धि सत्य कर्म सत्य गुणों को **उदवः** प्राप्त कर **ददत्** दीजिये **नः** हमको **भग** हे सर्वेश्वर्योत्पादक **प्र** अच्छे प्रकार **नः** हमारे लिए **जनय** ऐश्वर्य को उत्पन्न कर **गोभिः** सर्वोत्तम गायों सहित **अश्वैः** सर्वोत्तम घोड़ों सहित **भग** हे सर्वशक्तिमन ! **प्र** अधिक प्रार्थना है **नृभिः** सर्वोत्तम ननुष्यों सहित **नृवन्तः** उत्तम उत्तम पुरुष स्त्री और सन्तान, भृत्य वाले हम लोग **स्याम** हों।

१२ **तद्** वह परमात्मा **एजति** सब जगत को अपनी अपनी चाल पर चला रहा है **तत्** वह परमात्मा **न** कभी नहीं **एजति** चलता **है** **तद्** वह ईश्वर **दूरे** अधर्मात्मा आदि मनुष्यों से बहुत दूर हैं **तद्** वह परमात्भा **अन्तिके** सत्यवादी आयि पुरुषों के अत्यन्त निकट है **तद्** वह परवेश्वर **अंतः** भीतर **अस्य** इस **सर्वस्य** सब जगत के **तदु** और वह **सर्वस्य** सब जगत के **अस्य** इस **वाह्यतः** बाहर।

१३ **आयुः** उमर **यज्ञेन** परमेश्वर के अर्थ **कल्पताम्** अति श्रद्धा से समर्पित है **प्राणः** प्राण **चक्षुः** आँख **श्रोत्रम्** कान **वाक्** वाणी **मनः** मन **आत्मा** जीव **ब्रह्मा** वेदविद्या और विद्वान **ज्योतिः** सूर्यादिलोक, अग्न्यादि पदार्थ **स्वः** स्वर्ग सुख साधन **पृष्ठम्** पृथिवी आदि सब लोक आधार तथा पुरुषार्थ **यज्ञः** यज्ञ=जो जो अच्छा काम हम करते हैं **स्तोमः** स्तुति **च** और **यजुः** यजुर्वेद **च** और **ऋक्** ऋग्वेद **च** और **साम** सामवेद **च** अथर्ववेद

बृहच्च रथंतर च बृहद्रथन्तर साम **च** इत्यादि **स्व**: उत्तम सुख को **देवा**: हम विद्वान लोग **अगन्म** प्राप्त हों **अमृता**: परम विद्वान तथा अमृत जो आपकी प्राप्ति उसको प्राप्त **अभूम** हों **प्रजापते**: आपके **प्रजा**: सन्तान हम लोग **अभूम** हों **वेद** आपकी आज्ञा का पालन और आपकी प्राप्ति में उद्योगी **स्वाहा** जैसा हमारे हृदय में ज्ञान हो वैसा ही सदा भाषण करें।

१४ **यस्मात्** जिससे **न** नहीं **जात** हुआ **पर**: बड़ा/श्रेष्ठ **अन्य**: कोई **अस्ति** है **य**; जो **आविवेश** आवेश=प्रविष्ट हो के पूर्ण हो रहा **है** **भुवनानि** भुवन=लोकों को **विश्वा** सब **प्रजापति**: प्रजा का स्वामी है **प्रजया** सब प्रजा को/सब प्रजा में **संरराण**: रमा रहा है/रम रहा है **त्रीण** तीन **ज्योतींषि** ज्योति अग्नि वायु और सूर्य को **सचते** रचा है **स**: वह षोडशी सोलह कलावाला ईश्वर।

१५ **स**: आप **न**: हमारे लिये हमको **पिता** करुणामय पिता **इव** जैसे **सूनवे** अपने पुत्र को **अग्ने** हे विज्ञानस्वरूपेश्वराग्ने ! **सूपायन**: श्रेष्ठोपाय के प्रापक, अत्युत्तम स्थान के दाता **भव** सर्वदा हो **सचस्व** सदा सुखी रखो **न**:हमारे लिए **स्वस्तये** हे स्वस्तिद परमात्मन सब दुखों का नाश करके।

१६ **विभू**: हे व्यापकेश्वर सर्वत्र प्रकाशित वैभवैश्वर्ययुक्त **असि** हो **प्रवाहण**: स्वस्व नियमपूर्वक चलाने वाले तथा सबके निर्वाहकारक **वह्नि**: हे स्व-प्रकाशक सर्वरसवाहकेश्वर ? **असि** हो **हव्यवाहन**: सब हव्य, उत्कृष्ट रसों के भेदक, आकर्षक तथा यथावत स्थापक **श्वात्र**: हे आत्मन आप शीघ्र व्यापनशील **असि** हो **प्रचेता**: प्रकृष्ट ज्ञानस्वरूप प्रकृष्ट ज्ञान के देने वाले **तुथ**: है सर्ववित ! **असि** हो **विश्ववेदा**: सब जगत में विद्यमान प्राप्त और लाभ कराने वाले।

१७ **उशिक्** हे सर्वप्रिय ! कमनीयस्वरूप **असि** हो **कवि**: पूर्ण विद्वान **अङ्घारि**: स्वभक्तों के अघ=पाप के अरि नाशक **असि** हो **बम्भारि**; स्वभक्तों और सर्व जगतके पालक तथा धारण करनेवाले **अवस्यू**: अन्नादि पदार्थ अपने भक्त धर्मात्माओं के देने के सदा इच्छुक **असि** हो **दुवस्वान**

परिचरणीय विद्वानों से सेवनीयतम **शंध्यूः** शुद्धस्वरूप और सब जगत के शोधक **असि** हो **मार्जालीयः** पाप का मार्जन-निवारण करने वाले **सम्राड्** सब राजाओं के महाराज **असिः** हो **कृशानुः** दीपों के प्राण के सुखदाता **परिषद्यः** हे न्यायकारिन परमेश्वर ! सभा के आज्ञापक, सभ्य, सभापति, सभाप्रिय,सभारक्षक, सभा के ही सुखदायक **असि** हो **पवमानः** हे पवित्र परमेश्वर पवित्रस्वरूप पवित्रकारक पवित्रप्रिय **नभः** हे निर्विकार आकाशवत क्षोभरहित अतिसूक्ष्म **असि** हो **प्रतक्वा** सबके ज्ञाता सत्यासत्यकारी जनों के कर्मो का साक्ष्य करनेवाले **मृष्टः** शुद्धस्वरूप सब पापों के मार्जक शोधक **असि** हो **हव्यसूदनः** सब द्रव्यों के विभागकर्ता मिष्ट सुगन्ध, रोगनाशक द्रव्यों से पुष्टिकारक द्रव्यों से वायु वृष्टि की शुद्धि करानेवाले **ऋतधामा** हे भगवन आप ही धाम, स्थान सर्वगत सत्य और यथार्थस्वरूप **असि** हो **स्वः** सुखस्वरूप और सुखकारक **ज्योतिः** स्वप्रकाश और सुख के प्रकाशक ।

१८ **समुद्रः** हे द्रवणीयस्वरूप ! सब भूतमात्र आप में ही द्रव हैं क्योंकि आप सबके कारण **असि** हो **विश्वव्यचाः** सहज से ही सब जगत को विस्तृत किया है **अजः** अजन्मा **असि** हो **ऐकपात्** यह सब जगत आपके किंचिन्मात्र एक देश में है **अहिः** हीनतारहित **असि** हो **बुध्न्यः** सब जगत के मूल कारण और अन्तरिक्ष में भी सदा परिपूर्ण **वाक्** सब शास्त्र के उपदेशक अनन्तविद्यास्वरूप **असि** हो **ऐन्द्रम्** परमैश्वर्यस्वरूप सब विद्वानों में अत्यन्त शोभायमान **असि** हो **सदः** सब संसार को अपने में ठहराने वाले सभास्वरूप **असि** हो **ऋतस्य** सत्य विद्या और धर्म ये दोनों मोक्षस्वरूप आपकी प्राप्ति के **द्वारौ** द्वार हैं **मा-मा** कभी मत **सन्ताप्तम्** सन्तापयुक्त रखो **अध्वनाम्** परमार्थ और व्यवहार मार्गो के **अध्वपते** हे अध्वपते ! **मा** मत **प्र + तिर** मुझको क्लेशयुक्त होने दे **स्वस्ति** आनंद **मे** मुझको **अस्मिन्** इस **पथि** व्यवहार मार्ग में **देवयाने** परमार्थ मार्ग में **भूयात्** आपकी कृपा से रहे ।

१९ **देवकृतस्य** हे सर्वपापप्रणाशक ! इन्द्रिय विद्वान और दिव्यगुणयुक्त जन

के **ऐनसः** दुख के **अवयजनम्** नाशक **असि** हो **मनुष्यकृतस्य** मनुष्य मध्यस्थ जन के **ऐनसः** पाप से **अवयजनम्** अलग, दूर करनेवाले **असि** हो **पितृकृतस्य** पितृ, परमविद्यायुक्त जन के **ऐनसः** पाप से **अवयजनम्** अलग, दूर करने वाले **असि** हो **आत्मकृतस्य** जीव के **ऐनसः** पापों से **अवयजनम्** अलग, दूर करने वाले **असि** हो **ऐनसः** पापों से भी **ऐनसः** बड़े पापों से **अवयजनम्** अलग **असि** हो **यत्** जो **च** और **अहम्** मैं ने **विद्वान्** विद्वान होकर **चकार** पाप किया है **यत्** जो **अविद्वान** अविद्वान होकर **तस्य** उनका **सर्वस्य** सबका **ऐनसः** पापों को **अवयजनम्** छुड़ाने वाले **असि** हो।

२० **हिरण्यगर्भः** सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का गर्भनाम उत्पत्ति स्थान उत्-पादक **समवर्तत** था **अग्रे** जब सृष्टि नहीं हुई थी तब प्रथम **भूतस्य** सब जगत का **जातः** सनातन प्रादुर्भूत प्रसिद्ध **पतिः** स्वामी **एकः** एक **आसीत्** है **सः** वही परमात्मा **दाधार** रचके धारण करता है **पृथिवीम** पृथिवी से लेकर प्रकृति पर्यन्त जगत को **द्याम्** द्युलोक को **उत** और **इमाम्** इसके **कस्मै** प्रजापति की **देवाय**: जो परमात्मा उसकी **हविषा** आत्मादि पदार्थों के समर्पण से **विधेम** पूजा यतावत् करे।

२१ **इन्द्र** हे इन्द्र आप परमैश्वर्ययुक्त, हे रक्षक,हे सर्वनियन्तः हे क्षणादिका-लपते ! हें सर्वस्वामिन हे प्राणाधार हें प्राणपते हे महाराज **विश्वस्य** सब संसार के **राजति** राजा हो, सर्वप्रकाशक हो **शम्** परमसुखदायक **नः** हम लोगों के **अस्तु** हो **द्विपदे** पुत्रादि के लिये **शम्** परमसुखदायक **चतुष्पदे** हस्ती अश्व और गवादि के लिये।

२२ **शम्** सुखकारक शीतल मन्द और सुगन्ध **नः** हमारे लिये **वातः** वायु **पवताम** चलें **शम्** सुखकारक **नः** हमारे लिये **तपतु** तपे **सूर्यः** सूर्य **शम्** सुख कारक **नः** हमारे लिये **कनिक्रदद्** गर्जनपूर्वक **देवः पर्जन्य** मेंघ **अभिवर्षतु** वर्षें।

२३ **अहानि** सब दिवस **शम्** सुखरूप **भवन्तु** हों **नः** हमको **शम्** आनन्द से सुखरूप **रात्रीः** सर्व रात्रि, रात्रियों का **प्रतिधीयताम्** बीतें स्थापन

करो **शम्** सुखकारक **नः** हमको **इन्द्राग्नी** सूर्य तथा अग्नि **भवताम्** हों **अवोभिः** नानाविधि रक्षाओं से **शम्** सुखरूप **नः** हम लोगों के लिए **इन्द्रा वरुणा** वायु और चन्द्र **रातहव्या** होमसे शुद्धिगुणयुक्त हुए **शम्** स्थिर **नः** हम लोग **इन्द्रापूषणा** पूर्ण आयु और बलयुक्त प्राण वाले **वाजसातौ** पुरुषार्थयुक्त युद्धमें **शम्**, परस्पर विद्यादि सत्य गुणयुक्त होके **इन्द्रासोमा** राजा और प्रजा **सुविताय** उत्पादन करें **शंयो** अपने ऐश्वर्य को।

४ **तद्** उस आपको **प्र + वोचेत** उपदेश तथा धारण करना जानता है **अमृतम्** अमृत = मरणादि दोषरहित **नु** (निश्चय से) **विद्वान्** विद्वान **गन्धर्वः** सर्वगत ब्रह्म को धारण करने वाला **धाम** मुक्तों का धाम = निवास स्थान, सर्वगत **विभृतम्** सबका धारण और पोषण करने वाला **गुहा** सबकी बुद्धि का साक्षी **सत्** ब्रह्म है **त्रीणि** तीन **पदानि** पद हैं, जगत की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय करने के सामर्थ्य **निहिता** (विद्यमान) **गुहा** स्वहृदय में **अस्य** परमात्मा के **यः** जो **तानि** इनको = उत्पत्ति स्थिति प्रलय तथा ईश्वर को **वेद** जानता है **सः** वह **पितुः** पिता का भी!विद्वानों में भी **पिता** पिता!विद्वान।

२५ **द्यौ** सब लोकों से ऊपर आकाश सो **शांति** शान्त निरुपद्रव सुखकारक ही रहे **अन्तरिक्षम्** मध्यस्थ लोक और उसमें वायु आदि पदार्थ **शाँतिः** पूर्ववत **पृथिवी** पृथिवी, पृथिवीस्थ पदार्थ **शाँति** पूर्ववत **आपः** जल, जलस्थ पदार्थ **शाँतिः** पूर्ववत **ओषधयः** औषधि तत्रस्थ गुण **शांतिः** पूर्ववत **वनस्पतयः** वनस्पति तत्रस्थ पदार्थ **शांति** पूर्ववत **विश्वेदेवाः** जगत के सब विद्वान तथा द्योतक वेदमन्त्र, इन्द्रिय सूर्यादि उनकी किरण तत्रस्थ गुण **शांति** पूर्ववत **ब्रह्म** परमात्मा तथा वेदशास्त्र **शाँति** पूर्ववत **सर्वम्** स्थूल और सूक्ष्म चराचर जगत में सब पदार्थ **शांति** पूर्ववत **शाँति** सब संसारस्थ जीव **एव** भी **शाँतिः** दुष्ट क्रोधादि उपद्रवरहित हों **सा** वह **मा** मुझको भी **शांति** शाँति **एधि** प्राप्त हों।

२६ **नमः** नमस्कार है। मैं नमस्कार करता हूं **शम्भवाय** कल्याणस्वरूप, कल्याणकर, मोक्षसुखस्वरूप और मोक्ष सुख के करने वाले को **च** और

मयोभवाय सांसारिक सुख के करने वाले को **च** और **नमः** पूर्ववत **शंकराय** जीवों के कल्याण करने वाले को **च** और **मयस्कराय** मन इन्द्रियः प्राण और आत्मा को सुख करने वाले को **च** और **नमः** पूर्ववत **शिवाय** मङ्गलमय को **च** और **शिवतराय** अत्यन्त कल्याणस्वरूप और कल्याणकारक हो।

२७ **भद्रम्** कल्याण को ही **कर्णेभि** कानों से **शृणुयाम** हम लोग सुनें **देवाः** हे देवेश्वर! देव विद्वानों **भद्रम्** कल्याण=मङ्गलसुख को ही **पश्येम** हम सदा देखें। **अक्षभिः** आँखों से **यजत्राः** हे यजनीयेश्वर, हे यज्ञकर्त्तारो, **स्थिरैः** द्रढ़ **अङ्गै** अङ्ग, उपांग=श्रोत्रादि इन्द्रिय तथा सेनादि उपाङ्ग से **तुष्टुवांसः** आपकी स्तुति और आपकी आज्ञा का अनुष्ठान सदा करें **तनूभिः** आत्मा शरीर सहित **व्यशेमहि** विविध सुखपूर्वक प्राप्त हों **देवहितम्** इन्द्रिय और विद्वाओं के हितकारक **यद्** जो **आयुः** आयु को।

२८ **ब्रह्म** हे महनीय परमेश्वर! आप बड़ों से भी बड़े हो। आपसे बड़ा वा तुल्य कोई नही है **जज्ञानम्** सब जगत के व्यापक=प्रादुर्भूत हो **प्रथमम्** सब जगत के आदिकारण आप ही हो **पुरस्तात्** पूर्व **सीमतः** विविध सीमा से युक्त=मर्यादा सहित **सुरुचः** सूर्यादि लोक आपसे ही प्रकाशित हैं **वेनः** आनन्दस्वरूपः कामना करने योग्य, प्राप्त करने योग्य अनन्तविद्यायुक्त **वि-आवः** सब लोकों को विविध नियमों से पृथक पृथक यथायोग्य वर्ता रहे हो **सः** सो आप **बुध्न्याः** अन्तरिक्षांतर्गत दिशादि पदार्थों को **उपमाः** वे अन्तरक्षादि उपमा, सब व्यवहारों मेंउपयुक्त होते है **अस्य** इस जगत के **विष्ठाः** निवास स्थान हैं **सतः** विद्यमान स्थूल जगत की **च** तथा **योनिम्** आदिकारण आपको **असत्** अविद्या चक्षुरादि इन्द्रियों से अगोचर इस विविध जगत की **विवः** विवृत विभक्त करता हैं।

२९ **सुमित्रियाः** सुखदायक **नः** हम लोगों के लिए **आपः** प्राण, जल तथा विद्या **औषधयः** औषधि **सन्तु** सदा हो **दुर्मित्रियाः** प्रतिकूल दुखकारक

तस्मै उसके लिए **सन्तु** हों **यः** जो **अस्मान्** हमसे **द्वेष्टि** द्वेष, अप्रीति, शत्रुता करता है **यम्** जिस दुष्ट से **च** तथा **वयम्** हम **द्विष्मः** द्वेष करते हैं।

३० **यः** जो **इमा;** इन **विश्वा** सब **भुवनानि** लोक लोकान्तरों को **जुह्वत** अपने सामर्थ्य कारण में होम करके **ऋषि;** सर्वज्ञ **होता** उत्पत्ति समय में देने और प्रलय समय में सबको लेने वाला परमात्मा **न्यासीदत** नित्य अवस्थित है **पिता** पिता है **नः** हमारा **सः** सो ही **आसिषाः** सामर्थ्य से सहज स्वभाव से **द्रविणम** द्रव्य रूप जगत को **इच्छमानः** स्वेच्छा से उत्पन्न किया चाहता है **प्रथमच्छत** विस्तीर्ण जगत को रच के अनन्त स्वरूप से आच्छादित करता है **अवरान** बाहर और भीतर **आविवेस** अन्तर्यामी साक्षी स्वरूप से प्रविष्ट हो रहा है/परिपूर्ण हो रहा है।

३१ **इषे** उत्तम अन्न के लिए **पिन्वस्व** पुष्टकर **ऊर्जे** अत्यन्त पराक्रम के लिए **पिन्वस्व** पुष्ट कर **ब्रह्मणे** सत्य वेद विद्या के लिये **पिन्वस्व** सदैव हमको पुष्ट और बलयुक्त कर **क्षत्राय** अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए **पिन्वस्व** शौर्य- धैर्य, नीति, विनय पराक्रम और बलादि उत्तम गुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत पुष्ट कर **द्यावापृथिवीभ्याम्** स्वर्ग सर्वोत्कृष्ट मोक्षसुख, पृथिवी=संसारसुख इन दोनों के लिए **पिन्वस्व** हम लोगों को समर्थ कर **धर्म** धर्मात्मा तथा धैर्यस्वरूप **असि** तुम हो **सुधर्म** हैं सुष्ठु धर्मशील **अमेनि** निर्वैर **अस्मे** हमारे लिए **नृम्णानि** विद्या पुरुषार्थ, हस्ती, अश्व,सुवर्ण, हीरादि रत्न उत्कृष्ट राज्य उत्तम पुरुष और प्रीति आदि पदार्थों को **धारय** धारण कर **ब्रह्म** ब्राह्मण=पूर्णविद्यादि-सद्गुणयुक्त का **धारय** धारण आप ही करो **क्षत्रम्** क्षत्र=बुद्धि विद्या तथा **शौर्यादि** गुणयुक्त का **धारय** धारण आप ही करो **विशम्** अनेक विध, **उद्यम, बुद्धि,** विद्या, धन, धान्य आदि बलयुक्त तथा सूद्रादि भी सेवादि**गुणयुक्त** का **धारय** धारण आप ही करो।

३२ **किस्वित्** क्या **आसीत्** है **अधिष्ठानम्** इस संसार का अधिष्ठान/ रचना करने वाला अधिष्ठान **आरम्भणम्** कारण उत्पादक/निमित्त

कारण और साधन जगत वा ईश्वर के **कतमत्स्विदत्** कौन/क्या है व
किस प्रकार से **आसीत्** है **यतः** जिसका **भूमिम्** भूमि से ले के
पर्यन्त **जनयन्** रच के **विश्वकर्मा** विश्वकर्मा परमात्मा ने अ
सामर्थ्य से इस जगत को रचा है **विद्याम्** हम उसको जाने **और**
आच्छादित कर रखा है **महिना** अपनी महिमा से **विश्वचक्षाः** ई
सब संसार का द्रष्टा है ।

३३ **तनूपाः** शरीर का रक्षक **अग्ने** हे सर्वरक्षकेश्वराग्ने ! **असि**
तन्वम् शरीर को **मे** हमारे **पाहि** कृपा से पालक कर **आयुर्दाः**
उमर बढ़ाने वाले **अग्ने** हे महा वैद्य **असि** आप हो **आयुः** सुखरूप
आयु **मे** मुझको **देहि** दीजिये **वर्चोदा** विद्यादि तेज अर्थात् विज्ञान
वाले **अग्ने** हे अनन्त विद्या तेजयुक्त **असि** आप हो **वर्चः** सर्वो
विद्यादि तेज **मे** मुझको **देहि** दो **अग्ने** हे सब गुणों के परिपूर्ण ईश
यत् जो-जो कुछ भी **मे** मेरे **तन्वाः** शरीरादि में **ऊनम्** न्यून है
उस उसको **मे** मेरे **आपृण** कृपादृष्टि से सुख और ऐश्वर्य के सा
प्रकार से पूर्ण करो ।

३४ **विश्वतश्चक्षुः** विश्व=सब जगत में जिसका चक्षु=दृष्टि,
अद्रष्ट कोई वस्तु नहीं सर्वद्रष्टक **उत** तथा **विश्वतोमुखः** सर्वत्रमु
वक्ता **विश्वतोबाहुः** सर्वत्रबाहु/सर्वधारक **उत** श्रोत्रादि भी हैं **वि**
स्पात् सर्वत्र पग/पर्वगत **बाहुभ्याम्** अनन्त बल और परा
दोनों बाहुओं से **सम् + धमति** यथायोग्य जन्म मरणादि को प्राप
रहा है **सम् + पतत्रैः** सम्यक प्राप्त होनेवाले सुख दुःख फल
प्राप्त सब जीवों को **द्यावाभूमी** पृथिवी से ले के स्वर्ग पर्यन्त ज
जगत का कर्ता है **देवः** विश्वकर्मा परमात्मा **एक** एक ही अद्वितीय

३५ **भूः** हे सर्वमङ्गलकारकेश्वर आप सदा वर्तमान हो **भुवः** वायु
पदार्थोंकि रचनेवाले **स्वः** सुखरूप **सुप्रजाः** श्रेष्ठ प्रजा वाला मैं प्र
पुत्र पौत्रादि उत्तम गुण वाली प्रजा से **स्याम्** होऊं **सुवीरः**
सदा विजयी मैं **वीरैः** सर्वोत्कृष्ट वीर योधाओं से **सुपोषः** सर्वपु

पोषैः अत्यन्त विद्यादि सोमलता आदि औषधि सुवर्णादि और नैरोग्यादि से **नर्या** हे नरों के हितकारक ईश्वर **प्रजाम्** प्रजा को **मे** मेरी **पाहि** रक्षा करो **शंस्य** हे स्तुति करने योग्य ईश्वर **पशून्** हस्त्यश्वादि पशुओं का **मे** मेरे **पाहि** पालन करो **अथर्य** हे व्यापक ईश्वर **पितु** अन्न की **मे** मेरे **पाहि** रक्षा कर ।

३६ **किंस्वित** विद्या क्या हैं **विनम्** वन **कः** किस को **उ** और **सः** उसी को विश्वकर्मा परमात्मा को **वृक्षः** वृक्ष **आस** कहते हैं **यतः** जिस सामर्थ्य से **वावापृथिवी** स्वर्ग सुख विशेष और भूमि मध्य सुख वाला लोक तथा नरक—दुख विशेष और सब लोकों को **निष्टतक्षुः** विश्वकर्मा ईश्वर ने जैसे तक्षा बढ़ई अनेक विधि रचना से अनेक पदार्थ रचता हैं, वैसे ही रचा है **मनीषिणः** हें विद्वानो **मनसा** उसके विज्ञान से **पृच्छतः** प्रश्न करो **इद्** उसका निश्चय **तद्** उसके विषय में **यद्** जो **अध्यतिष्ठत्** सब जगत में और सबके ऊपर विराजमान हो रहा है **भुवनानि** सब भुवनों को **धारयन्** धारण करके ।

३७ **तत्** वह ब्रह्म **चक्षुः** सर्वदृक् चेतन है **देवहितम्** देव अर्थात विद्वानों के लिए वा मन आदि इन्द्रियों के लिए हितकारक मोक्षादि सुख का दाता है **पुरस्तात्** सबका आदि प्रथम कारण वही है **शुक्रम्** सबका करनेवाला किंवा शुद्धस्वरूप है **उच्चरत्** (**उत्** + **चरत्**) प्रलय के ऊर्ध्व वही रहता हैं **पश्येम्** देखे **शरदः** वर्ष तक **शतम्** शत **जीवेम्** जीवें **शरद** वर्ष तक **शतम्** शत **शृण-याम्** सुनें **शरदः** वर्ष तक **शतम्** शत **प्रब्रवाम्** कहें **शरदः** वर्ष तक **शतम्** शत **अदीनाः** कभी पराधीन नहीं **स्याद्** हों **शरदः** वर्ष तक **शतम्** शत **भूयः** उपरांन्त **च** भी **शरदः** वर्ष **शतात्** शत (१००) से ।

३८ **या** जो **ते** तुम्हारे सुरचित **धामानि** त्रिविध धाम, लोक हैं **परिमाए** उत्तम **या** जो **अवमा** निष्कृष्ट **या** जो **मध्यमा** मध्यम **विश्वकर्मन्** सर्वविधायक विश्वकर्मन्नीश्वर ! **उत** तथा **इमा** उन सब लोकों के **शिक्षा** शिक्षा कर **सखिभ्यः** आपके सखाओं को **हविषि** इन लोकों

दान और ग्रहण व्यवहार में **स्वधाव**: हे स्वसामर्थ्यादि धारण करनेवाले **स्वयम्** स्वयं **यजस्व** हमारे लिये विद्वानों का सत्कार सब सज्जनों के सुखादि की संगति विद्यादि गुणों का दान करे **तन्वम्** हमारे शरीरादि पदार्थों को **वृधानः** आप ही बढ़ाने वाले हैं ।

३९ **यत्** जो **मे** मेरे **छिद्रम्** छिद्र, निर्बलता, राग चाचल्य/सब छिद्रों को **चक्षुषः** चक्षु, नेत्र का **हृदयस्य** हृदय, प्राणात्मा का **मनसः** मन बुद्धि विज्ञान, विद्या और सब इन्द्रियों के **वा** यद्वा **अतितृण्णम्** मन्दतादि विकार को **बृहस्पतिः** सबसे बड़े आप **मे** मेरे **तद्** इनका निवारण, निर्मूल करके **दधातु** सत्यधर्मादि में स्थापन करो, इन छिद्रों को आप ढाँके **शम्** कल्याणकारक **नः** हम लोगों पर **भवतु** हो (**भुवनस्य** संसार के **यः** जो **पतिः** रक्षक ।

४० **विश्वकर्मा** सर्वज्ञ, सर्वरचक, ईश्वर विविध जगदुत्पादक है **विमनाः** विविध, अनन्त विज्ञान वाला है **आद्विहाया** सर्वव्यापक और आकाशवत् निर्विकार अक्षोभ्य सर्बाधिकरण है **धाता** सब जगत का धारणकर्ता है **विधाता** बिविध विचित्र जगत् का उत्पादक है **परमः** सर्वोत्कृष्ट है **उत** तथा **सन्दृक्** यथावत् सबके पाप पुण्यों को देखनेवाला है **तेषाम्** उन पुरुषों को **इष्टानि** सब इष्ट सुख मिलते हैं **सम्** सम्यक **इषा** स्वेच्छापूर्वक **मदन्ति** परमानन्द में ही रहते हैं **यत्र** जिस परमात्मा के सामर्थ्य में **सप्त** सप्त अर्थात् **ऋषीन्** पंच प्राणः सूत्रात्मा और धनंजय **पर** वह परमात्मा **ऐकम्** एक अद्वितीय **आहुः** है :

४१ **चतुःस्त्रक्तिः** चार कोने वाली **नाभिः**: नाभि मर्मस्थान **ऋतस्य** ऋत कीं भरी नैरोग्य और विज्ञान का घर **सप्रथाः** विस्तीर्ण सुखयुक्त **सः** बह **नः** हमारी **विश्वायुः** पूर्ण आयु हो **सप्रथाः** जैसे सर्व सामर्थ्या से बिस्तीर्ण हो वैसे **सः** आप **नः** हमको **सर्वायुः** सर्बायु **सप्रथाः** बिस्तृत सुख से बिस्तार सहित **अपद्वेंषः**द्वेषरहित **अपह्वर** चलन, कम्पन रहित हो **अन्यव्रतस्य** आपकी आज्ञा और आपसे भिन्न को लेशमात्र भी ईश्वर न मानें यही हमारा व्रत है **सश्चिम** आपको सदा सेवें ।

४२ **यः** जो **नः** अपना **पिता** नित्व पालन करने वाला **जनिता** जनक उत्पादक **यः** जो **विधाता** सब मोक्ष सुखादि कामों का विधायक, सिद्धि-कर्ता **धामानि** स्थिति के स्थानो को **वेद** यथावत् जाननेवाला है ।सब जातमात्र भूतो में विद्यमान है **भुवनानि** लोक लोकान्तरों को **विश्वा** सब **यः** जो **देवानाम्** दिव्य सूर्यादि लोक तथा इन्द्रियादि और विद्वानों का **नाभधा** नाम व्यवस्थादि करनेवाला **एकः** एक अद्वितीत **एव** वही है **तम्** उसी परमात्मा के **सम्प्रश्नम्** सम्यक् प्रश्नोत्तर करने में **भुवना** विद्वान वेद शास्त्र **यन्ति** प्राप्त हो रहे हैं **अन्या** प्राणी मात्र ।

४३ **यत्** जो **जाग्रतः** जागते हुए पुरुष का **दूरम्** दूर दूर **उदेति** जाता आता हैं **दैवम्** देव आत्मा का साधक, मुख्य साधक, भूत भविष्यत् वर्त्तमाम काल का ज्ञाता है (**तद्** वह मन **उ** निश्चय से **सुप्तस्थ** सोते हुए पुरुष का **तथैव** वैसे ही **एति** आता जाता हैं) **दूरङ्गमम्** दूर जाने का जिसका स्वभाव ही है **ज्योतिषाम्** अग्नि, सूर्यादि, श्रोत्रादि इन्द्रिय इन ज्योति प्रकाशकौं का भी **ज्योतिः** प्रकाशक है **एकम्** एक बड़ा चंचल बेग वाला **तत्** वह **मे** मेरा **मनः** मन **शिवसंकल्पम्** शिवसङ्कल्प धर्म, कल्याण संकल्पकारी, स्थिर, शुद्ध थर्मात्मा, विद्यायुक्त **अस्तु** आपकी कृपा से हो ही सकता है ।

४४ **न** नसीं **तम्** उसको **विदाथ** तुम लोग जानते हो **यः** जो परमात्मा **इमा** इन सब भुवनों का **जजान** बनानेवाला है, विश्वकर्मा है **अन्यत्** एकता वेद और पुक्ति से सिद्ध कभी नहीं हो सकती **युष्माकम्** ब्रह्म और जीब की **अन्तरम्** जीव और ब्रह्म का भेंद **वभूव** पूर्व से ही है **नीहारेण** अत्यन्त अविद्या से **प्रावृताः** आवृत **जल्प्या** नास्तिकत्व बकवाद करते हो **च** और **असुतृपः** केवल स्वार्थ साधक, प्राण पोषण मात्र में प्रवृत्त **उक्थशासः** केवल विषय भोगों के लिये ही अवैदिक कर्म करने में प्रवृत्त **चरन्ति** परब्रह्म से उलटे चलते हो ।

४५ हे सर्वाधिपते महाराजेश्वर ! आप भगः=परमैश्वर्थयुक्त **ऐव** होने से **भगवान्** भगवान **अस्तु** हो **देवाः** हे विद्वानो ! **तेन** उस भगवान प्रसन्न

ईश्वर के सहाय से **वयम्** हम लोग **भगवन्तः** परमैश्वर्ययुक्त **स्याम** हों **तम्** उन **त्वा** आपको **भग** हे परमेश्वर ! **सर्व** सर्व संसार **इत्** ही **जोहवीति** ग्रहण करने की अत्यन्त इच्छा करता है **सः** सो **नः** हमको **भगः** आप **पुरः** प्रथम से **ऐता** प्राप्त **भव** हों **इह** इसी जन्म में ।

४६ **गणानाम्** हे समूहाधिपते ! आप मेरे सब समूहों के पति होने से **त्वा** आपको **गणपतिम्** गणपति नाम से **हवामहे** ग्रहण करता हूं **प्रियाणाम्** मेरे प्रिय कर्मकारी, पदार्थ और जनों के पालक भी आप ही हो **त्वा** आपको **प्रियपतिम्** प्रिय पति **हवामहे** मैं अवश्य जानूं **निधीनाम्** सब निधियों के पति होने से **त्वा** आपको **निधिपतिम्** निश्चित निधिपति **हवामहे** जानूं **वसो** हे वसो ! **मम** अपने सामर्थ्य का **अहम्** मैं **अजानि** दूर फैंकूं **गर्भधम्** सब जगत को जिस सामर्थ्य से उत्पन्न किया है उस अपने सामर्थ्य का धारण और पोषण करनेवाला आपको सबका कारण आपका सामर्थ्य जो सब जगत का धारण पोषण करता है अधर्म अविद्या दुष्टाभावादि को **आ** सदैव **त्वम्** आप **अजासि** अजन्म और अमृतस्वरूप हैं **गर्भधम्** यह जीवादि जगत तो जन्मता और मरता है ।

४७ **अग्ने** हे सच्चिदानन्द स्वप्रकाशस्वरूप ईश्वराग्ने ! **व्रतपते** हे व्रतों के पालक ईश्वर ! **व्रतम्** ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास आदि सत्य व्रतों का **चरिष्यामि** आचरण मैं करूंगा **तत्** मैं सभ्य विद्वान सत्याचरणी धर्मात्मा, आपकी भक्तियुक्त **शकेयम** होऊं **तत्** सो इस व्रत को **मे** मेरी **राध्यताम** सम्यक सिद्ध करें इच्छा को आप पूरी करें **इदम** इस **अहम** मैं **अनृतात्** अनृत=अनित्य देहादि पदार्थों से पृथक होके **सत्यम्** यथार्थ सत्य जिसका कभी व्यभिचार=नाश नहीं होता उस विद्यादि लक्षणयुक्त धर्म को **उपैमि** प्राप्त होऊं ।

४८ **यः** जो परमात्मा **आत्मदाः** आत्मा का देनेवाला तथा आत्मज्ञानादि का दाता हैं, जीव प्राणदाता **बलदा** विविध बल(विज्ञानबल, इन्द्रियबल शरीरबल का दाता **यस्य** जिसके **विश्वे** सब प्राणी-अप्राणी जड़-चेतन

विद्वान वा मूर्ख **उपासते** यथावत् मानते हैं **प्रशिषम्** अनुशासन=शिक्षा मर्यादा कों **यस्य** उस परमात्मा के नियमों का **देवाः** विद्वान लोग **यस्य** जिसकी **छाया** आश्रय ही **अमृतम्** विज्ञानी लोगों का मोक्ष कहाता है **यस्य** जिसकी अछाया=अकृपा **मृत्युः** दुष्ट जनों के लिए बारम्बार मरण और जन्मरूप महाक्लेशदायक है **कस्मै** परमसुखदायक **देवाय** पिता की **हविषा** हम सब मिलकर प्रेम विश्वास और भक्ति **विधेम** करें।

४९ **उपहूताः** नित्य स्थिर=प्राप्त रख **इह** इस संसार में **गावः** उत्तम गाय भैंस, घोड़े, हाथी **उपहूताः** नित्य स्थिर, प्राप्त रख **अजावयः** बकरी, भड़ तथा उपलक्षण से अन्य सुखदायक पशु **अथो** और **अन्नस्य** अन्न, सर्व रोगनाशक औषधियों का **कीलालः** उत्कृष्ट रस **उपहूतः** नित्य स्थिर प्राप्त रख **गृहेषु** घरों में **नः** हमारे **क्षेमाय** कुशलता के लिये **वः** तुम्हारे **शान्त्यै** शान्ति तथा सर्वोपद्रव विनाश के लिये **प्रपद्ये** मैं यथावत् प्राप्त होऊं **शिवम्** मोक्ष सुख को **शग्मम्** इस संसार के सुख को **शंयोः** मोक्ष सुख की कामना **शंयोः** प्रजा सुख की कामना।

५० **तम्** उस परमात्मा को **ईशानम्** सब जगत के स्वामी और ईशन उत्पादन करने की इच्छा करनेवाले को **जगतः** चर जगत् का **तस्थुषः** अचर जगत् का **पतिम्** पालन करने वाले को **धियम्** विज्ञानमय, विज्ञानप्रद को **जिन्वम्** तृप्तिकारक को **अवसे** अपनी रक्षा के लिये **हूमहे** अत्यन्त स्पर्धा करते हैं/स्पर्द्धा=इच्छा से आह्वान करते हैं **वयम्** हम लोग **पूषा** पोषणप्रद है **नः** हमारे लिये **यथा** जैसे **वेदसाम्** धन और बिज्ञानों की **असत्** है **बृधे** वृद्धि का **रक्षिता** रक्षक **पायुः** पालक **अदब्धः** हिंसारहित **स्वस्तये** निरुपद्रवता के लिये।

५१ **मयि** मुझमें **इदम्** विज्ञानादि **इन्द्र** हे परमैश्वर्यवन ईश्वर! **इन्द्रियम्** शुद्ध इन्द्रिय को **दधातु** धारण करो **अस्मान्** हमको **रायः** उत्तम धनको **मघवानः** परम धनवान आप **सचन्ताम्** सद्यः प्राप्त करो **अस्माकम्** हमारी **सन्तु** होनी चाहिए **आशिषः** आशा **सत्याः** सत्य ही **नः** हम लोगों की **सन्तु** शीघ्र ही कीजिये **आशिषः** इच्छा।

५२ **सदसस्पतिम्** सभापति सभाध्यक्ष राजा के **अद्भुतम्** अद्भुत, आश्चर्य विचित्र शक्तिमय को **प्रियम्** प्रियस्वरूप को **इन्द्रस्य** इन्द्र जो जीव उसके **काम्यम्** कमनीय, कामना के योग्य को **सनिम्** सम्यक् भजनीय और सेव्य को **मेधाम्** विद्या सत्य धर्मादि धारण वाली बुद्धि को **अयासिषम्** मैं याचता हूँ **स्वाहा** यहां स्वकीय वाक् कहती है कि एक ईश्वर से भिन्न कोई जीवों का सेव्य नहीं हैं, यही वेद की ईश्वराज्ञा है।

५३ **याम्** जिस **मेधाम्** यथार्थ धारणा वाली बुद्धि को **देवगणाः** विद्वानों के वृन्द **पितरः** यथार्थ विज्ञान वाले पितर **च** तथा **उपासते** धारण करते है। उपाश्रित होते हैं **तया** उससे **माम्** मुझको **अद्य** इसी समय **मेधया** बुद्धि के साथ **अग्ने** हे सर्वज्ञाग्ने परमात्मन ! **मेधाविनम्** मेधावी **कुरु** कर **स्वाहा** इस प्रार्थना को आप अनुग्रह और प्रीति से स्वीकार कीजिये।

५४ **मेधाम्** सर्वविद्यासम्पन्न बुद्धि **मे** मुझको **वरुणः** वर=वरणीय आनन्द-स्वरूप **ददातु** कृपा से दीजिये **मेधाम्** पूर्वोक्त **अग्निः** विज्ञानमय विज्ञान प्रद **प्रजापतिः** सब संसार के अधिष्ठाता पालक **मेधाम्** पूर्वोक्त **इन्द्रः** परमैश्वर्यवान **च** तथा **वायुः** विज्ञानवान अनन्तबल **च** तथा **मेधाम्** अत्युत्तम मेधा=बुद्धि **धाता** सब जगत का धारण पोषण करने वाले **ददातु** दीजिये **मे** मुझको **स्वाहा** पूर्वमन्त्रोक्तवत्।

५५ **इदम्** यह **मे** मेरा **ब्रह्म** ब्रह्म, विद्वान **च** और **क्षत्रम्** क्षात्र, राजा, राज्य, महाचतुर न्यायकारी शूरवीर राजादि क्षत्रिय **च** और **उभे** दोनों **श्रियम्** सर्वोत्तम विद्यादिलक्षणयुक्त महाराज्य श्री को **अश्नुताम्** प्राप्त हों **मयि** मुझमें **देवाः** हे विद्वानो ! **दधतु** धारण कराओ **श्रियम्** दिव्य ईश्वर गुण परम कृपा आदि श्री को **उत्तमाम्** उत्तम विद्यादि लक्षण समन्वित श्री को **तस्यै** उसको/उस श्री को विद्यादिसद्गुण वा सर्व संसार के लिये **ते** तथा राज्यादि प्रबन्ध के लिए **स्वाहा** मैं अत्यन्त प्रीत्ति से स्वीकार करूं/व्यय करूं।

इति द्वितीय प्रकाश

ये सम्मतियाँ – स्नेहाशीष की पंक्तियां हैं

प्रेरित करें प्रभु ऐसा, वेदज्ञान विस्तार करें।
कलम चले जादू सी, जन गण का उपकार करें॥
गीतस्तुति है गान प्रभु का, सुन्दर और महान।
हो हृदय पुलकित सबका, करें ज्ञान गङ्गा में स्नान।,
धन्य धन्य हे देव बन्धु, धन्य धन्य नारायण।
धन्य हुई वसुधा सारी, गा गीतस्तुति गायन॥

श्रीमती गुलशन सचदेव
मैंरिस रोड, अलीगढ़

ऋषि दयानन्द जग प्रहरी थे, श्रेष्ठ आपने गुणगान किया।
ये 'स्वामी स्वराज्य संग्रामी' और 'प्रवर्तक' से जान लिया॥
'श्रुतिशाला' 'मुक्तायन' पुस्तक 'यज्ञ अर्चना' कल्याणी हैं।
आर्याभिविनय' पद्यानुवाद, यह 'गीतस्तुति' प्रभुवाणी है॥
देवनारायण मित्र हमारे, वे सदा करें ऐसी रचना।
भद्र भाव सबको मिल जायें, प्रिय कृपा यही प्रभुवर करना॥

राजपाल शास्त्री
गांधीनगर, अलीगढ़।

है भाव भूमि गीतस्तुति पात्र देवनारायण भारद्वाज।
महेशचन्द्र संगीतरत्न भूरि प्रशंसित व्यक्ति आज॥
मैं तो केवल गायक हूं नहीं काव्यकला का बोध लेश।
सन्देश आपका पालन कर हूं पूजनीय वन्दित महेश॥

प्रेम पात्र **महेशचन्द्र संगीतरत्न**
चण्डौली खुर्द, साधुआश्रम, अलीगढ़।

वेद मन्त्रों का गान एक सौभाग्यशाली व्यक्ति ही कर पाता है। यदि उसका आर्य भाषा हिन्दी में गेय पदों में गान किया जावे तो मानव आनन्द विभोर हो जावेगा। मैं ने श्री देवनारायण भारद्वाज जी रचित १०८ गीतों की गीतस्तुति को आद्योपान्त पढ़ कर यह निष्कर्ष निकाला है कि श्री भारद्वाज जी ने सतत परिश्रम करके समाज का बड़ा उपकार किया हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि आर्य जन इस पुस्तक के गीतों को गा गा कर आनन्दित होते रहेंगे।

कृष्णचन्द्र राजार्य 'मयंक'
साहित्यरत्न, एम०ए० (हिन्दी) एम०ए०(संस्कृत)
एल०एल०बी० ऐडवोकेट

आर्याभिविनय आर्य जगत का अनुपम जाज्वल्यमान रत्न हैं। जिसके प्रणेता आर्य जगत को नवीन चेतना एवम् स्फूर्ति देने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती थे।

ऐसे अनुपम ग्रंथ का हिंदी भाषा में छन्दोवद्ध भाष्य हमारे आर्य जगत के विद्वान एवम् मनीषी देवनारायण जी भारद्वाज ने अथक परिश्रम एवम् लगन के द्वारा करके पाठकों को सुलभ बनाया हैं। उनका यह प्रयास प्रशंसा के योग्य हैं। उनकी भाषा तथा काव्य के विषय में क्या कहूं, इन्होंने केवल यही प्रयास नहीं वरन अनेक मौलिक रचनायें भी की हैं मुझे विश्वास है कि इस ग्रंथ का अध्ययन करके आर्य जगत उनका अवश्य कृतज्ञ होगा।

भगवतीप्रसाद शर्मा
एम० ए० (गणित हिंदी संस्कृत) एल०टी साहित्यरत्न
अवकाश प्राप्त उप प्रधानाचार्य
डी०ए०वी० इण्टर कालिज, अलीगढ़।

श्रुति के १०८ मंत्रों को प्रगीगात्मक सरल शैली में जन-जन को श्रुति को आह्लादित करनेवाला प्रस्तुत काव्य 'गीतस्तुति' कविवर श्री देवनारायण भारद्वाजके गहन अध्ययनका परिचायक है। कृति वही सफल है जिसे पाठक पढ़कर और श्रोता सुनकर आनन्द लहरमें निमग्न हो जाये। इस कसौटी पर परीक्षित यह रचना शतशः सफल है। **कविराज विजय गुप्त कौशिक**

एम० ए० हिंदी-संस्कृत, साहित्य शास्त्री
सांहि० आयु० रत्न, भूतपूर्व प्रवक्ता
अग्रसेन इण्टर कालिज, हरदुआगंज, अलीगढ़।

" **नानृषिः कुरुते काव्यम्** "
जो ऋषि नहीं है (अनृिषः) काव्य नहीं निर्माण किया करता ।

डा० रघुवीर शास्त्री
एम०ए०, पी० एच–डी०, डी० लिट्
अ० प्रा० अध्यक्ष संस्कृत विभाग
श्री बार्ष्णेय कालिज, अलीगढ़
प्रधान जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलीगढ़।

पं० देबनारायण भारद्वाज उदारमना वेदश्रमी हैं। वैदिक धर्म, दर्शन, संस्कृति से आपको अपार लगाव है। आपके द्वारा रचित गीतस्तुति ऋचाओं का पद्यात्मक भाषानुवाद है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के आर्याभिविनय पर आधारित है इसकी भाषा सरल सुमधुर तथा हृदयाकर्षक है। वैदिक धर्म के सुधी उपासकों को इस पुस्तक से निश्चित आत्मलाभ होगा। यही मेरीं मान्यता है। **डा० बाबूराम शास्त्री**

आचार्य एम०ए०, पी०एच–डी०, डी० लिट्०
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
दयानन्द वैदिक शोध पीठः अजमेर।

आप अपने कार्यक्षेत्र से अतिरिक्त समय को लेखनी के सदुपयोग से एक सुन्दर गति प्रदान कर रहे हैं। प्रभु आपको शक्ति दे जिससे आप अपने आध्यात्मिक उत्थान द्वारा मानव जीवन का सदुपयोग कर इस अमूल्य हीरा जन्म को सफल बना सकें।

महेशचन्द्र गर्ग

सम्पादक 'हितोपदेशक' सासनी

देवद्विज जी ने कृषि जगत को अनेक लेख, गीत आदि के माध्यम से बहुत कुछ दिया है। अब 'गीतस्तुति' देकर उन्होंने उन व्यक्तियों की विशेष सेवा की है जो हिंदी में गीतों के माध्यम से ईश्वर की स्तुति करना चाहते हैं। गीत न केवल मधुर ही है बल्कि कहीं कहीं तो इतने हृदयस्पर्शी हैं कि व्यक्ति उनमें खोकर स्वयं को भूल जाता है। गीतों में सहजरूप से समाविष्ट तत्व के समीप आकर तो मनुष्य अपनी आत्मा के दर्शन कर सकता है।

आशा है इस पुस्तकसे हमें उपयोगी एवम् आनन्दप्रद जीवन व्यतीत करने हेतु स्फूर्ति एवं प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी और अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने में अविरल सहायता।

कृष्ण मोहन वार्ष्णेय

कृषि अर्थशास्त्री

सम्पादक 'पैकेज समाचार'

मित्र श्री देवनारायण भारद्वाज, संमृदा सर्वेक्षण अधिकारी आगरा मण्डलीय मृदा सर्वेक्षण इकाई के कार्यालयाध्यक्ष एक व्यस्त राजपत्रित अधिकारी होते हुए वैदिक काव्य रचना के लिये समय निकाल लेते हैं इसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

महेन्द्रसिंह सिवाच

उपकृषि निर्देशक एवं प्रभारी अधिकारी

संभागीय कृषि परीक्षण एवं प्रदर्शन केन्द्र, मेरठ

भाग्यवती की स्मृति

卐 卐

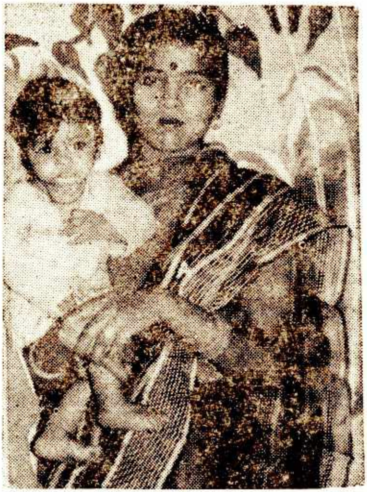

卐 卐

卐 卐

माता पिता ने भाग्येश्वरी के रूप में लाड़ प्यार से पालन किया। इण्टरमीडियेट उत्तीर्ण कराया। कन्यागुरुकुल सासनी में अल्पकालिक वैदिक ज्ञान कराया। स्पष्टवादिनी किन्तु हँसमुख गृहकार्य में दक्ष तथा संगीत निपुण सुपुत्री भाग्यवती राठौर का कासगंज निवासी रेल ड्राइवर श्री रामगोपाल राठौर के सुपुत्र श्री आनन्दकुमार राठौर से ७ जौलाई ८३ को पाणिग्रहण संस्कार कराया। पति ने उसकी सुयोग्यता और प्रेम के कारण दीप्ति नाम दिया। नारी जागरण के संकल्प को मनमें संजोये जो जीवन भर अपना प्रिय गीत 'हे नारी ! तू कुछ तो बन' गाती रही। डेढ़ वर्ष के चि० दीपक एवं डेढ़ माह के चि०विकास दो नन्हें पुत्रो को बिलखता छोड़ दुर्घटना वश जिसका २५ जौलाई ८६ को आकस्मिक निधन हो गया, जो दोनों परिवारों केलिये महा शोक का कारण बना। अपनी दिवंगत पुत्री की स्मृति में पिता श्री बाँकेलाल राठौर गम्भीरपुरा अलीगढ़ ने 'गीतस्तुति' के प्रकाशन हेतु ५००) रुपये आर्थिक सहयोग प्रदान किया। –प्रकाशक

पदार्थ मुद्रांकन त्रुटि शोधन

प्रथम प्रकाश

पदार्थ सं०	पंक्ति	शुद्ध शब्द	पदार्थ सं०	पंक्ति	शुद्ध शब्द
१	६	देने	२७	१	(शिवः)मित्रः
३	३	महापुष्टिकर्ता	३०	१	वसुः
५	४	आश्चर्य	३३	७	सब पाप जनित
७	३	बनाये	४१	१	इन्द्र
८	३	सर्वोत्कृष्ट	४३	६	महाधनेश्वर
१३	५	प्रतिमान	४४	६	परमानन्द
१४	८	आज्ञानुकूल	४९	२	हमारे
१७	७	जीवन		७	अनुपक्त स्वभाव
२०	१	विश्वतः	५०	६	(मित्रा) प्रिया
२१	४	चक्षुः			

द्वितीय प्रकाश

पदार्थ सं०	पंक्ति	शुद्ध शब्द	पदार्थ सं०	पंक्ति	शुद्ध शब्द
१	१	अवतु	२५	२	लोक
३	२	दृष्टि से	२७	७	विद्वानों
	६	देहधारी	३३	२	पालन
४	५	एव-हो		५	वर्चः
५	३	प्राप्त होऊँ	३६	३	द्यावापृथिवी
६	५	अमृतम्	३७	२	इन्द्रियों
९	६	धारण करो	३९	३	विद्या
	११	मुझ में			अतितृणम्
११	३	धियम्	४२	४	भुवनानि
१५	१	सूनवे	४३	८	धर्मात्मा
१८	११	आनन्द	४४	३	युक्ति
१९	१०	छुड़ानेवाले	४६	१०	दुष्टभावादि
२०	७	यथावत करे	४८	३	जड़ चेतन
२१	२	हे प्राणाधार			